मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 53 सितम्बर, 2012 अंक : 3

प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2012

मूल्य : 10 रुपये

चित्र समाचार

(बाएं) राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर परिसर में पौधारोपण करतीं महामहिम राज्यपाल राजस्थान श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा। *(दाएं)* राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा जयपुर में आयोजित मीरा समारोह में दीप प्रज्वलित करते महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्री बी.एल. जोशी एवं माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान श्री अशोक गहलोत।

(बाएं) मुख्यमंत्री राजस्थान श्री अशोक गहलोत द्वारा *सम्बोधन*। *(दाएं)* उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी और मुख्यमंत्री राजस्थान श्री अशोक गहलोत *मीरा पुरस्कार* श्री अम्बिका दत्त को प्रदान करते हुए, साथ में राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री वेद व्यास।

उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी तथा मुख्यमंत्री राजस्थान श्री अशोक गहलोत के साथ पुरस्कृत साहित्यकार, राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री वेद व्यास एवं गणमान्य अतिथि महानुभाव।

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 53 अंक : 3

सितम्बर, 2012

प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2012

प्रधान सम्पादक
हर सहाय मीणा, I.A.S.

●

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

●

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास

- एक प्रति 10 रु.
- वार्षिक चंदा
  - शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
  - संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

शिक्षक होने के मायने	5	**दिशाकल्प**
बलिहारी गुरु आपकी	6	**गोपालप्रसाद मुद्गल**
गुरु बिन ज्ञान नहीं	8	**महेश कुमार चतुर्वेदी**
कुशल अध्यापक बनें	9	**सत्यनारायण पंवार**
स्वाध्याय	10	**आचार्य वेदमित्र**
स्वाध्याय - एक चिन्तन	12	**रमेश चन्द कनेरिया**
पेन्सिल और रबड़ संवाद	14	**उमेश चन्द गुप्ता**
जहाँ शिक्षा है वहाँ रक्षा है	15	**संग्राम सिंह सोढ़ा**
राष्ट्रीय एकता में भाषाओं का योगदान	16	**डॉ. गिरीश दत्त शर्मा**
देश में हिन्दी दशा व दिशा	17	**रामगोपाल राही**
हिन्दी शिक्षक के मायने	20	**अमर सिंह पाण्डेय**
समय का सदुपयोग	21	**हरीश कुमार वर्मा**
बापू की सीख - 15		
सच्चा न्याय	22	**मो.क. गाँधी**
अनुशासन सफलता की प्रथम सीढ़ी है	31	**निर्मला देवी**
वैदिक गणित	32	**डॉ. के.डी. शर्मा**
पहला सुख निरोगी काया	35	**डॉ. धीरेन्द्र कुमार सक्सेना**
राष्ट्रीय स्तर पर महिला खेलों की भूमिका एवं प्रयास	36	**जगदीश चन्द्र सेन**
यात्रा वृत्तान्त : मेरी ताशकन्द यात्रा	38	**देवकिशन राजपुरोहित**
गूंगी चीख	44	**रामनिवास शर्मा**
हमारे मित्र जीवाणु	45	**राजश्री रानी भट्ट**

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 23-30/ शैक्षिक समाचार 41-43/ पुस्तक परिचय 46-47/ चतुर्दिक 48-49/ भामाशाह - 50

मुखावरण

नभांशु श्रीमाली

पाठक पीठ

शिविरा अगस्त, 2012 अंक 'दिशाकल्प' में निदेशक जी ने शिक्षा के सच्चे अर्थ को अभिव्यक्त किया है– '*सा विद्या या विमुक्तये।*' व्यक्ति पर वास्तविक बंधन स्वयं का ही होता है। इस बन्धन से व्यक्ति को मुक्त करना शिक्षा का असली कार्य है। शिक्षा के गुणवत्तावर्द्धन हेतु हृदय की शुद्धता वांछनीय है। आलेख 'रामतीर्थ ने कैसे संस्कृत भाषा सीखी' इंगित करता है कि 'कर गुजरने की मन में हो लगन, तो छू सकते हो गगन।/ पर सतत श्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति की हो साथ में लगन।' स्वराज्य रचना राष्ट्रीयता से ओतप्रोत भव्य भावों से रचित है। सबसे रुचिकर आलेख सहायक कर्मचारी श्री कन्हैयालाल किराडू का लगा। एक बहुत कम पढ़े लिखे कर्मचारी की सृजन क्षमता काबिले तारीफ है। सेवा का गुण योगीजन के लिए भी अगम्य है। किराडू जी की सेवा व सृजन दोनों ही उच्चस्तरीय है। सरल सपाट शब्दों में सब कुछ कह गये।

श्री अशोक गुप्ता की सपत्नीक नेत्रदान की घोषणा किसी न किसी पाठक को अवश्य प्रभावित करेगी। उनका आलेख भी नेत्रों पर सम्पूर्ण है।

सुन्दरतम अंक संयोजन के लिए वरिष्ठ सम्पादक श्री सारस्वत जी बधाई के पात्र हैं। हार्दिक बधाई, धन्यवाद।

–टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

माननीय माध्यमिक शिक्षा निदेशक जी ने दिशाकल्प में शिक्षकों का आह्वान किया गया है कि शिक्षा के समग्र प्रचार-प्रसार का जिम्मा शिक्षकों, अभिभावकों व शिक्षार्थियों का है। स्तुत्य उद्बोधन पढ़ने को मिला। अनुकरणीय है दिशाकल्प 'करें बच्चों का स्वागत'।

नूतन सत्र में प्रवेशोत्सव के साथ ही अध्यापन का पावन कर्तव्य करें तो निःसंदेह पुराणों की निम्न सदुपयोगात्मक उक्तियाँ सार्थक होंगी–

'अविद्या छेदिनीं देवी ब्रह्मविद्याप्रदायिनीम्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना समुपाश्रयेत्॥'

–अम्बालाल स्वर्णकार, केकड़ी

शिविरा अगस्त, 2012 अंक के दिशाकल्प में शिक्षकों के मार्गदर्शन के रूप में श्रद्धेय मीणा साहब द्वारा कही गई दो बातें बहुत अच्छी लगी। पहली जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने ही बन्धन से परिवेष्टित है तथा शिक्षा द्वारा वह उनसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है तथा दूसरी, बालकों में नैतिक गुणों के विकास हेतु शिक्षक को अंग्रेजी प्रॉवेःब "Example is better than precept" को व्यवहार में लाना चाहिए। साथ ही 'तीर पर कैसे रुकूँ मैं' के माध्यम से डॉ. गिरधर शर्मा ने शिक्षकों को आत्मबोध के सहारे अपने कर्तव्य बोध निर्धारण हेतु शिक्षक के कार्य को जीवन निर्माण का कार्य तथा शिक्षक को एक प्रमाणित व्यक्तित्व व ज्ञान की गरिमा के रूप में प्रस्तुत किया जाना शिक्षक के दायित्व की ओर संकेत है। यदि इस ओर शिक्षक में संवेदना जागृत हो जाए तो फिर करने को कुछ भी शेष नहीं रह जाता। इस अंक के सभी आलेख शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षण तीनों को सशक्त बनाने की दिशा में अच्छा उत्प्रेरक हैं।

–सुधा पण्ड्या, सिविल लाइन्स गढ़ी, बाँसवाड़ा

शिविरा का माह अगस्त 2012 का अंक प्राप्त हुआ। 'अजन्मी बेटी का अपनी माँ के नाम खत' बेटी की यह एक करुणामय पुकार हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी है। वह अपनी माँ से पेट में पलती हुई निवेदन कर रही है कि उसे इस लोक में आने दिया जाए। वह एक भार और दहेज का रूप बनकर नहीं आनी चाहती है, वरन् वह एक उपयोगी जीव के रूप में आना चाहती है। आज बेटों से कहीं अधिक परिवार के लिए बेटी सार्थक सिद्ध हो रही है। समाज की यह सोच कि बेटा वंश संवर्द्धक है, सही नहीं है। अतः हर माँ से यह आग्रह है कि ईश्वर की इस अनुपम देन को इस संसार में आने से नहीं रोकना चाहिए। यदि बेटी ही नहीं होगी तो बेटे की कल्पना कैसे होगी?

–महेन्द्र कुमार शर्मा, भवानीखेड़ा, अजमेर

शिविरा माह जुलाई 2012 का अंक पढ़ा। जिसमें डॉ. जाकिर हुसैन साहब का आलेख 'नन्हा मदरसे चला' नामक बुनियादी शिक्षा का महत्व उजागर करता है। आज के परिवेश में शिक्षक– अभिभावक और समाज को सोचने के लिए मजबूर करता है कि वर्तमान में बुनियादी शिक्षा कितनी सार्थक है। जो जीवन में नये आयाम दे सकती है। वहीं दूसरा आलेख 'राजस्थान में प्रा. शिक्षा – दशा एवं दिशा' नामक वर्तमान में शिक्षा की वस्तुस्थिति को दर्शाता है तो श्री शिवरतन थानवी जी का लेख 'पुस्तक प्रेमी शिक्षक मोतीलाल जी' का जीवन प्रेरणादायी व अनुकरणीय है। स्वाध्याय आधारित अन्य सभी लेख पठनीय मननीय है। शिक्षकों को नई ऊर्जा प्रदान करने वाले हैं। इसके लिए सम्पादक मण्डल को साधुवाद।

–रतनलाल शास्त्री, बाड़मेर

'स्वाध्याय विशेषांक' में प्रकाशित स्वाध्याय एवं सृजन की वेला– दिशाकल्प, प्रतिध्वनि 'तेरा तुझको अर्पण', 'आयुक्त की पाती शिक्षकों के नाम', 'भीतर के पट खोल', मूर्धन्य शिक्षाविद् शिक्षक समाज की कल्याणकारी भावनाओं को अधिकतम बालक-बालिका, युवा वर्ग, आम नागरिक के जीवन में अनुकरणीय क्रियान्विति कराते हुए तपस्वी सम्पादक मण्डल सदस्यगणों को निरन्तर नवीनतम ऊर्जा से परिपूर्ण बनाये रखना हम सब पाठक-शिक्षक बंधुओं का परम लक्ष्य रहे, इन्हीं सद्भावनाओं के साथ एक बार पुनः सम्माननीय सम्पादक मण्डल सदस्यगणों के प्रति हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

–ओमप्रकाश शर्मा, बिजयनगर (अजमेर)

चिन्तन

शिक्षक

ऐसे सत्य सिखाना जग को,
अनाचार जग से मिट जाए।
मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना,
शाश्वत सत्य धरा पर आए॥

तुम भू के भगवान,
तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अन्तर के माली,
तुमसे फूल जिन्दगी के खिलते हैं॥

मैं भूलूँ पर तुम मुझसे,
भूलों पर उदास न होना।
तुम शिक्षक विद्वान,
तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना॥

–रघुवीर शरण मिश्र

सत्यमेव जयते

हर सहाय मीणा, आई.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"शिक्षक को एक साथ दो काम करने होते हैं। पहला स्वयं को ज्ञानधनी (Knowledge rich) बनाना तथा दूसरा अर्जित ज्ञानधन (Knowledge wealth) को अपने विद्यार्थियों में बाँटना। पहला काम स्वाध्याय की ताकत से हो सकता है और दूसरा सहज विसर्जन भाव से।'

दिशाकल्प

शिक्षक होने के मायने

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे लाखों शिक्षक भाई-बहिनों का अभिनन्दन करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। शिक्षक दिवस हमारे द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन् का जन्मदिन है। वे उद्भट विद्वान, प्रखर वक्ता एवं उच्चकोटि के दार्शनिक थे। विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन एवं व्याख्यान देकर अपनी विद्वता का परचम लहराने वाले डॉ. राधाकृष्णन् वस्तुतः महान शिक्षक थे। एक शिक्षक का राष्ट्रपति बनना भारत की पूरे विश्व को ऐसी सौगात है जो गुणों एवं विशेषताओं को वरेण्य स्थान दिलाती है। डॉ. राधाकृष्णन् जी की पावन स्मृति को विनम्र प्रणाम।

शिक्षक दिवस, हम शिक्षकों एवं शिक्षा प्रशासन से जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए जहाँ एक ओर प्रसन्नता एवं गौरव का अवसर है, वहीं आत्मविश्लेषण व चिन्तन का भी आह्वान करता है यह दिवस ! शिक्षक होने के क्या मायने हैं और हम उन मायनों में कहाँ तक खरे उतरते हैं, इस बात का जायजा लेने तथा कमियों को दुरुस्त करने व अपनी योग्यताओं की धार तेज करने का संकल्प लेना ही शिक्षक दिवस को सार्थकता प्रदान करता है।

शिक्षक को एक साथ दो काम करने होते हैं। पहला स्वयं को ज्ञानधनी (Knowledge rich) बनाना तथा दूसरा अर्जित ज्ञानधन (Knowledge wealth) को अपने विद्यार्थियों में बाँटना। पहला काम स्वाध्याय की ताकत से हो सकता है और दूसरा सहज विसर्जन भाव से। 'जो मेरे पास है, वह मेरे शिष्यों में बाँट दूँ' ऐसा उत्तम भाव शिक्षक ही रख सकता है। मालविकाग्निमित्र में कहाकवि कालिदास ने लिखा है– किसी शिक्षक में तो स्वयं उत्तम गुण की पात्रता होती है और किसी शिक्षक को दूसरों को वह गुण सिखाने में विशेष प्रवीणता होती है। जिसमें दोनों ही बातें ठीक से हों, वही शिक्षकों में सर्वश्रेष्ठ माना जाना चाहिए।'

महाकवि कालिदास के इस कथन को आत्मसात करते हुए हमारे शिक्षकों को अपने भीतर उत्तम शिक्षा व संस्कार देने की पात्रता अर्जित कर उन्हें अपने शिष्यों को प्रदान करने का संकल्प लेना चाहिए। इसी में शिष्य, समाज और राष्ट्र का भला निहित है। उनके स्वयं के गौरव एवं महिमा का तो कहना ही क्या है। भारत में ऐसे उत्तम गुरुजन की उदात्त परम्परा सदियों से रही है।

इस अवसर पर मुझे गाँधीजी का स्मरण हो रहा है। उन्होंने लिखा है, 'सच्ची शिक्षा तो वह है जिसके द्वारा हम स्वयं को, आत्मा को, ईश्वर को और सत्य को पहचान सकें।' बहुत बड़ी बात कही है पूज्य बापू ने। इतनी पहचान के बाद फिर रह ही क्या जाता है। स्वयं को जानने का प्रयास करने पर ही आत्मा, ईश्वर और सत्य से साक्षात्कार सम्भव है। बापू सत्य को ही ईश्वर कहते थे। ये सब काम शिक्षा (अमूर्त) कर सकती है तो इसे साकार बनाने का महान काम शिक्षक (मूर्त) को ही करना है क्योंकि शिक्षा रूपी नौका के खेवनहार तो वे ही हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि शिक्षक दिवस के अवसर पर मेरे इस निवेदन को शिक्षक स्वीकार करेंगे तथा एक अद्भुत शैक्षिक ज्वाला उनमें प्रज्वलित होगी जो अशिक्षा, कुसंस्कार व कुरीतियों को भस्मीभूत कर देगी।

महात्मा कबीर के प्रसिद्ध दोहे के साथ मैं अपनी बात को विराम देता हूँ–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काकै लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दिया बताय॥

जय शिक्षा ! जय शिक्षक !!

(हर सहाय मीणा)
hsmeena2001@yahoo.com

बलिहारी गुरु आपकी

❑ गोपालप्रसाद मुद्गल

आदर्श शिक्षक व शिक्षाविद्, साक्षरता पण्डित, कुशल प्रशिक्षक एवं ओजस्वी कवि के रूप में ख्याति प्राप्त श्री गोपालप्रसाद मुद्गल का नाम साहित्य क्षितिज में एक देदीप्यमान सितारे की तरह प्रकाशमान है। शिक्षक, संस्थाप्रधान तथा शिक्षा एवं साक्षरता अधिकारी के रूप में आपका अवदान किसी वरदान से कम नहीं है। आप द्वारा लिखी गई प्रौढ़ शिक्षण एवं नव साक्षरोपयोगी पुस्तकों की सराहना राष्ट्र स्तर पर हुई है। आप राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष भी रहे हैं। आपको अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

गुरु शब्द का कोई पर्याय नहीं। अंग्रेजी में जितने भी शब्द हैं गुरु शब्द को ज्योतित नहीं करते। टीचर, लेक्चरर, प्रोफेसर, इन्सट्रक्टर माने भी गुरु नहीं है। हाँ, एक अध्यापक शब्द है। उसमें आदर भाव तो है लेकिन अध्यापक और गुरु में बहुत अन्तर है। अध्यापक ज्ञान देता है। थोड़े ज्ञान को बढ़ा सकता है किन्तु गुरु अज्ञान को हर लेता है। गुरु कृपा करता है। कृपा करना गुरु का स्वभाव है। सूर्य का स्वभाव है प्रकाश देना, खिड़कियाँ बंद कर लें तो भी प्रकाश देगा। इसी तरह गुरु कृपा करेगा ही, अज्ञान को हरेगा ही।

अगर किसी को ज्ञान का अभिमान है तो वह वास्तविकता से दूर हो जाता है। जैसे लोहे की बेड़ी में जंग लग जाए तो वह कमजोर हो जाती है। टूट जाती है। ज्ञान की बेड़ी तो स्वर्ण की बेड़ी है उसे छोड़ना तो और कठिन है। हाँ, गुरु तुम्हारे ज्ञान के अभिमान को नष्ट कर देता है। क्षण भर में अज्ञानी बना देता है। गुरु तुमको पढ़ा रहा है। पढ़ाते-पढ़ाते वह तुम्हारे ज्ञान को छीन लेगा। देखिए, अगर पैर में काँटा लग गया है तो उसे निकालने के लिए अन्य काँटे का आश्रय लिया जाता है। एक बार काँटे को निकालने के बाद, दूसरा काँटा जिससे काँटा निकाला है, दोनों काँटों को फेंक देता है क्योंकि वह भी काँटा है।

अध्यापक स्कूल में पढ़ाते हैं। यह ज्ञान को बढ़ाने की बात है। अध्यापक में थोड़ा ज्ञान अधिक है। छात्र में ज्ञान थोड़ा कम है। मात्रा का अन्तर है। जैसे दसवीं का छात्र, बी.ए. के छात्र के सामने अधिक ज्ञान रखता है। इसी तरह अध्यापक और छात्र में ज्ञान की क्वानटिटी का अन्तर है। इस बात को यों कह सकते हैं कि अध्यापक और छात्र में ज्ञान की मात्रा का तारतम्य होता है जबकि गुरु और शिष्य में भाव का तारतम्य होता है। शिष्य का मतलब है जो पूर्णतः अज्ञानी है जिसने अपने अज्ञान को या ज्ञान को सर्वथा निवृत कर लिया है जो अपने को अज्ञानी मानता है। जो अपने में ज्ञान भरने के लिए प्रस्तुत है। उसी को पात्र कहा जाता है और वही सही अर्थों में शिष्य बनता है।

अध्यापक के पास भी ज्ञान है लेकिन वह चरम तक नहीं पहुँचा है। गुरु चरम तक पहुँच चुका है। यों अध्यापक और गुरु में बहुत अन्तर है। अगर इस समय कबीर दास और मीराबाई आ जाएँ और उनसे दसवें का इम्तहान देने को कहा जाए तो पाँच-सात साल पढ़ाना पड़ेगा फिर भी कोई गारंटी नहीं कि वे पास हो जाएँ। इसी तरह रैदास जी को पाँचवीं की परीक्षा देनी पड़े तो उनकी मुसीबत आ जाएगी। लेकिन कबीर, मीरा, रैदास आदि को लेकर न जाने कितने लोग पीएच.डी. कर रहे हैं। पीएच.डी. और डी.फिल. करना अलग बात है वह अध्यापक दे सकता है। सहयोग कर सकता है लेकिन अध्यापक चरम ज्ञान तक नहीं पहुँचा हुआ है।

अध्यापक और छात्र में सम्बन्ध तो है किन्तु कितना? अध्यापक ने पढ़ा दिया, छात्र ने पढ़ लिया। अध्यापक ने ज्ञान दे दिया, छात्र ने ले लिया। फीस दे दी अध्यापक ने थैंक यू कह दिया। उनमें और कोई रिलेशनशिप नहीं है। कोई आत्मीयता नहीं है। शिष्य और गुरु के बीच में प्रगाढ़ आत्मीयता होती है। प्रगाढ़ प्रेम होता है और यही प्रगाढ़ प्रेम श्रद्धा के रूप में प्रस्फुटित होता है।

अतः समझ लो गुरु तुम्हारी श्रद्धा का विषय है। एक उदाहरण है– सभी जानते हैं कृष्ण जगत गुरु हैं किन्तु दुर्योधन को अपना शिष्य नहीं बना पाए। दूसरी ओर एकलव्य ने द्रोणाचार्य को अपनी श्रद्धा से अपना गुरु बना लिया। गुरु देना चाहता है चेला लेना नहीं चाहता तो कुछ भी नहीं मिला। उधर गुरु देना नहीं चाहता और चेला लेने पर तुला है, वह श्रद्धा से सब कुछ ले लेता है।

गुरु का मतलब है प्रेम, विशुद्ध प्रेम। यह प्रेम सुन्दर शब्द है। इस सुन्दर शब्द को Love में ट्रान्सलेट कर एव्यूज (Abuse) कर दिया है। आजकल वासना को प्रेम समझने लगे हैं। वासना, प्रेम और श्रद्धा में बड़ा अन्तर है। वासना सकारण होती है और प्रेम अकारण। इसी तरह श्रद्धा भी अकारण होती है। किसी की सुन्दर आँखें देखीं या सुन्दर बाल देखे या किसी का पांडित्य देखा, बस आकर्षित हो गए। लेकिन कुछ दिन बाद आँख/बाल की पहली जैसी स्थिति नहीं रही। इसी तरह कोई और विशेष पांडित्य दिखाई पड़ गया तो प्रेम नहीं रहता। प्रेम का स्वभाव है वह पराश्रित नहीं

होता वह आत्माश्रित होता है। मजनू की दीवानगी का कारण लैला के प्रति यही प्रेम था, विशुद्ध प्रेम था, आत्माश्रित प्रेम। लैला दुबली सी, साँवली सी उसके मुकाबले बादशाह ने अपने हरम में ले जाकर एक से एक सुन्दर औरतें दिखाईं लेकिन मजनू ने जो कहा वह ध्यान देने योग्य है। उसने अदब से बादशाह से कहा, 'हुजूर लैला के प्रति आकर्षण उसकी सुन्दरता में नहीं मेरे प्रेम में है। मेरी नजरों में है।'

गुरु तुम्हारा कितना महान है यह महत्त्वपूर्ण नहीं, तुम्हारा शिष्यत्व कितना महान है, यह महत्त्वपूर्ण है। गुरु का काम तुम्हारे अभिमान की निवृत्ति का है। तुम्हारे को खाली करने का है। तुम खाली हो पाओगे, इसके लिए गुरु के प्रति श्रद्धा आवश्यक है। यह भी समझने की बात है श्रद्धा अन्धी होती है वैसे ही जैसे प्रेम अन्धा होता है। तुम देखते हो वैद्य कभी क्वाथ देते हैं कभी बादाम का हलुआ। तुम नहीं समझते कि तुम्हें इस समय किस चीज की जरूरत है। यह वैद्य जानता है। इसी तरह गुरु समझता है कि तुम्हें किसकी आवश्यकता है? अतः गुरु के प्रति श्रद्धा सम्पूर्ण श्रद्धा आवश्यक है। तभी लाभ होगा। कुछ कहते हैं पहले गुरुजी की बात को समझेंगे। तब करेंगे। लोगों को तर्क पर विश्वास है। गुरु पर नहीं। तर्क की मान रहे हैं गुरु की नहीं। अपनी अकल से काम चला रहे हैं। 'अशगर हलीम इश्क में हस्ती ही जुर्म है।' सच यही है कि प्रेम और श्रद्धा के मार्ग में अभिमान ही जुर्म है। अतः शिष्य में अभिमान न हो, किसी भी तरह का, क्योंकि अभिमान तो अभिमान है।

श्रद्धा भी एक घटना है, जिस दिन यह घट जाएगी, उसी दिन कल्याण है। यह किसी साधन या प्रयास से नहीं होती। 'लाद रहो भाई काई दिन बनत-बनत बन जाएगी।' जिस दिन तुम्हारे हृदय में श्रद्धा प्रकट हो जाएगी समझ लो तुम्हारे हृदय में गुरु प्रकट हो गए। क्योंकि सूर्य के निकलने के बाद अंधकार कब दूर हो जाएगा, यह पूछने की जरूरत नहीं होती। जरूरत यह कि तुम निरभिमान हो। खाली हो। पात्र बनो घनघोर वर्षा हो रही है लेकिन तुम्हारे पास पात्र नहीं है पानी बहकर चला जाएगा। इसलिए पानी भरने को घड़ा होना चाहिए। यदि घड़ा उल्टे मुँह रखा है तो भी पानी नहीं भर पाएगा। घड़ा सीधा है लेकिन उसमें छेद है तो भी उसमें पानी नहीं टिक पाएगा। घड़ा खाली का खाली रह जाएगा। छेद न हो और उसमें कचरा भरा हो तो भी नहीं भर पाएगा। इसलिए घड़े का खाली होना जरूरी है।

गुरु तुम्हें कुछ नहीं दे सकता है, अगर वह कर सकता है तो तुम्हें खाली कर सकता है। तुम्हें भरने को प्रस्तुत कर सकता है। वह आश्रय है। भरेपन को तुम्हारे कचरे को, तुम्हारे अभिमान को निवृत्त करने का एक सम्बल है। तुम्हारी 'ईगो' दूर हो। जीवन में गुरु आए जीवन में यथार्थ का प्रकाश आए। गुरु शब्दों का प्रयोग कर तुम्हें साध्य तक ले जाता है। चाँद दिखाने के लिए वह शब्द काम में लेता है। कभी वह बिजली के खम्भे के तारों के ऊपर चाँद बताता है, कभी पीपल के पेड़ पर चाँद बताता है, कभी मंदिर के कलश के ऊपर भी चाँद बताता है। तो बिजली के खम्भे के तार, पीपल का पेड़, मंदिर के कलश ये सब उपाय हैं। माध्यम हैं। किसी भी तरह चन्द्रमा दिखाया जा सकता है। अतः गुरु के शब्दों को मत पकड़ना। अगर शब्द पकड़ोगे तो कहोगे, आज गुरु कुछ कह रहा है, कल कुछ कह रहा था, शायद कल कुछ और कहे। जैसे दौज का चन्द्रमा बिजली के खंभे के तारों के ऊपर, फिर कभी पीपल के पेड़ के ऊपर कभी मंदिर के कलश के ऊपर, शायद गुरु का दिमाग खराब समझोगे। अगर शब्द पकड़ोगे तो गुरु का दिमाग खराब होने का सन्देह हो जाएगा। मगर गुरु के इशारे को समझ लिया तो समझ लो चन्द्रमा देख लिया तो समझो सब कुछ देख लिया।

शब्दों का प्रयोग गुरु की मजबूरी है। गुरु तुम्हारे ज्ञान का अभिमान बढ़ाता नहीं है। वह कुछ शब्दों का आश्रय लेकर उस आशय तक पहुँचाता है। अभिमान रहित कर देता है और उस परम तत्त्व के साथ मिला देने का उपाय बताता है। इसलिए गुरु तुम्हारी बैट्री को चार्ज करने के लिए है। तुम्हारे अभिमान को निवृत्त करने के लिए है।

–पांडेय मौहल्ला डीग, भरतपुर (राज.)

मैं शिक्षक हूँ

मैं शिक्षक हूँ।
मैंने वेदों की ऋचा लिखी, जीवन का मधुमय गान किया।
तम पर खींची उजली रेखा, मृत को अमरत्व प्रदान किया।
नाना पुराण लिखकर मैंने, जीवन रहस्य को खोला है।
मैंने मंत्रों को जन्म दिया, जब-जब मेरा मन बोला है।
मैं शिक्षक हूँ ॥

बनकर मैंने चाणक्य विकट लोहा लिया तलवारों से।
मैं राज ताज बदला करता हूँ केवल मौन इशारों से॥
राधाकृष्णन के दर्शन में, मैंने ही बिगुल बजाया था।
जीओ औरों को जीने दो मैंने ही मंत्र सिखाया था।
मैं शिक्षक हूँ॥

रूसो सुकरात प्लेटो में, मेरा जिन्दा हर आखर है।
मैं बँधा नहीं हूँ सीमा में, सारी धरती मेरा घर है।
मैं हूँ अखंड अविरल धारा, कर सकता क्या कोई खंडित।
जिसने मुझसे स्वर संधाना, कर दिया उसे महिमा मंडित।
मैं शिक्षक हूँ॥

है मुझको गर्व महान राष्ट्र जो मेरा दिवस मनाता है।
मेरा अभिनंदन करता है, मुझको निज शीष चढ़ाता है।
पर मेरा भी है फर्ज ज्ञान गंगा में रोज नहाऊँ मैं।
मैं चलूँ सृजन के पंथ, और अपना युगधर्म निभाऊँ मैं।
मैं शिक्षक हूँ॥

जहाँ धर्म नहीं वहाँ विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्मरहित स्थिति बिल्कुल शुष्क होती है, शून्य होती है। हम धर्म की शिक्षा खो बैठे हैं। हमारी पढ़ाई में धर्म को जगह नहीं दी गई। यह तो बिना दूल्हे की बारात जैसी बात है। –महात्मा गाँधी

गुरु बिन ज्ञान नहीं

❑ महेश कुमार चतुर्वेदी

प्राचीन समय में भारत जगत गुरु शिरोमणि के नाम से जाना जाता था। भारत ने जो ज्ञान, संस्कृति और जीवन मूल्य विश्व को दिए उन्हीं की वजह से हमारा देश दुनिया के सभी देशों में महान देश के रूप में जाना जा सका। इसका श्रेय उस समय के ऋषि-मुनियों और गुरुओं को जाता है। उस जमाने में गुरु भगवान की तरह पूजे जाते थे। इसीलिए तो कहा है– *गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काकै लागूँ पाँय।/ बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो बताय॥*

ऐसा शिष्य उन गुरु पर बलिहारी है जो भगवान के दर्शन कराने की क्षमता रखते हैं। प्राचीन समय के आश्रम गुरु उन्हीं श्रेणी में आते हैं। उस समय बालक बाल्यावस्था में आश्रम में प्रवेश लेता और ब्रह्मचर्य आश्रम तक वह गुरु की शरण में सेवा कर तब तक आश्रम में रहता जब तक कि उसकी शिक्षा-दीक्षा पूरी नहीं हो जाती। शिक्षा प्राप्त कर वह आश्रम से निकलता तो वह सभी विद्याओं में पारंगत होकर भावी-जीवन में प्रवेश करता और सुसंस्कृत आदर्श नागरिक बन कर अच्छे समाज का निर्माण करता।

यहाँ तक की शिक्षा पूरी करने के पश्चात् उसे गुरु दक्षिणा के रूप में कठिन परीक्षा के दौर से गुजरना पड़ता। गुरु दक्षिणा में गुरु की माँग अजीबो-गरीब होती। एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ से लेकर भावी-जीवन को सँवारने सम्बन्धी कई ऐसी बातें थी जिनको शिष्य अपनी परिपूर्ण शिक्षा से पूर्ण कर गुरु के चरणों में सादर समर्पित कर देता था। ऐसे गुरु-शिष्यों की दंत कथाएँ आज भी हमारे शास्त्रों और जन-मानस में रची-बसी हैं, जो गुरु की महत्ता को प्रतिपादित करती हैं।

कालान्तर में समय बदला। लार्डमैकाले और अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति को हमने स्वीकार किया। वह मात्र डिग्रियाँ और नौकरशाही को बढ़ावा देने वाली सिद्ध हुई और उसी का परिणाम यह हुआ कि आज हमारे देश में लाखों-करोड़ों डिग्रीधारी बेरोजगार नौकरी की तलाश में मारे-मारे फिर रहे हैं और उसी शिक्षा पद्धति ने गुरु के स्थान शिक्षक (टीचर) पढ़ाने के लिए पद स्थापित हुए।

यहाँ गुरु और शिक्षक दोनों के अंतर को समझना समीचीन होगा। गुरु वह जो शिक्षा के साथ-साथ अपने शिष्यों को चरित्र निर्माण की शिक्षा के साथ सुसंस्कारों की शिक्षा दें और उसे भावी जीवन जीने की कला में पारंगत कर सके और शिक्षक वह जो एक निश्चित सीमा में बँधी-बँधाई पाठ्यक्रमी शिक्षा को पुस्तकों के माध्यम से छात्रों में हस्तान्तरित कर सकें।

अब वे गुरु नहीं शिक्षक हैं। जिनमें यह कुव्वत नहीं है, यह बल-बूता नहीं है कि वे अपने शिष्य को भगवान से साक्षात्कार करा सकें या उन्हें भावी जीवन जीने की कला में निपुण कर सकें, निष्णात कर सकें।

इसीलिए तो 'गुरु' के बारे में कहा है– *गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।/अंदर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट॥*

ऐसा शिक्षक जो शिष्य के सर्वांगीण विकास में अपनी सारी शक्तियाँ लगा दे और उसे एक सुयोग्य नागरिक बना दे वह शिक्षक के साथ-साथ गुरु कहलाने का हकदार है। अन्यथा यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह मात्र वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में शिक्षक बन कर रह जाएगा।

जीवन व्यापन करने की शिक्षा हो अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में ईश्वर को पाने की शिक्षा उन सब में 'गुरु' बखान हर जगह हुआ है। इसीलिए कहा है– *'गुरु बिन ज्ञान नहीं।'*

कबीर के निर्गुणी भजनों का आधार गुरु ही है। गुरु की महिमा अपरम्पार है। गुरु के व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई अंतर नहीं। गुरु शिष्य को सन्मार्ग का रास्ता बताकर उसे ऐसा मार्ग बताता है कि वह जन्म-जन्मान्तर एवं भव-बन्धनों से हमेशा-हमेशा से मुक्त होकर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है। इसलिए गुरु के बारे में फिर कहा है–

यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शिश कटे गुरु मिले, तो भी सस्तो जान।।

पर कबीर ऐसे गुरु पर भी कटाक्ष करने से बाज नहीं आए जो ज्ञान में शून्य है एवं उसका शिष्य भी अबोध (मूर्ख) है। ऐसी संगति में गुरु-शिष्य का क्या हश्र होगा। यह कबीर के इस दोहे में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है–

जाको गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे-अंधा ठैलिया, दोनों कूप पडंत॥

अब यहाँ चिन्तन की आवश्यकता है। आप विद्यालय में पढ़ा रहे हैं। अपने कर्तव्य और कर्मक्षेत्र में आप कितने खरे उतरे हैं। यह सोचने का विषय है। आप अपनी आत्मा से पूछिए– क्या आप सच्चे मायने में गुरु हैं? क्या आप सच्चे मायने में बच्चों के साथ न्याय कर रहे हैं? या मात्र शिक्षक हैं जो चार-आठ पीरियड पढ़ाने के बाद कहते हैं, बस हो गई छुट्टी। फिर कलियुगी शिक्षक के तो कहने ही क्या? वह कितने ही विशुद्ध आचरण वाले कार्य कर अपने शिष्यों को यही कहते हैं– 'गुरु कहे सो कर, गुरु करे सो न कर।'

आइए फिर चिंतन करें, अपने आचरण पर, अपने सामाजिक जीवन के लौकिक व्यवहार पर, अपने शिक्षकीय दायित्व निर्वहन पर, समाज में अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने पर, शिक्षा के व्यावसायिक ढर्रे से हटकर शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने पर, शिक्षा व्यवसाय से जुड़े होने के नाते स्वाध्याय एवं व्यापक वैश्विक ज्ञान अर्जन पर, शिक्षक की लीक से हटकर गुरु सन्मार्ग अपनाने पर। ऐसे कई अनकहे और अनछुए प्रश्न हैं जो अपनी आत्मा को जगाने और उसकी पुकार सुनने के लिए बाध्य करते हैं और वह पुकार यही कहती है। हे राष्ट्र निर्माता ! हे भावी पीढ़ी के कर्णधार तू महान है, तू अपने आप को पहचान और तेरे पास आने वाले उन अबोध मासूम बालकों में ऐसी स्फूर्ति और चेतना का संचार कर कि वे सुसंस्कृत होकर, सभ्य नागरिक बनकर, जीवन जीने की समस्त कलाओं में पारंगत होकर, सुदृढ़ समाज का निर्माण कर अपने गाँव, नगर, राज्य और देश के विकास में कदम से कदम मिलाकर चलें और ऊँचाइयों और बुलन्दियों को छूकर उन्नति के पथ पर अग्रसर हों, वेदों की इस रचना को फिर से जीवन्त कर सकें। तभी कहा जा सकेगा–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

–प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. (पुराना), छोटीसादड़ी,
प्रतापगढ़ (राज.) 312604

कुशल अध्यापक बनें

❑ सत्यनारायण पंवार

हमारा देश एक प्रजातांत्रिक देश है। हमारे देश के प्रजातंत्र को सुरक्षित रखने के लिए सभी नागरिकों को शिक्षित होना आवश्यक है। हमारी सरकार ने सन् 2001 में 'सर्वशिक्षा अभियान' प्रारम्भ किया जिसका मूल उद्देश्य था कि 4-6 वर्ष के 19 करोड़ बच्चों को सन् 2010 तक शत-प्रतिशत प्रारम्भिक शिक्षा मिले। हमारी सरकार को इस परियोजना से संख्यात्मक सफलता तो मिली लेकिन शिक्षा में गुणवत्ता के हिसाब से हम अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाए हैं। वार्षिक शिक्षा की स्थिति की सन् 2005 से रिपोर्ट मिल रही है उससे पता चलता है कि शिक्षा पर खर्च तो बढ़ा है लेकिन गुणवत्ता की कमी है। सन् 2008 की रिपोर्ट से पता चला कि 44 प्रतिशत पाँचवीं कक्षा के बच्चे दूसरी कक्षा की हिन्दी की पुस्तक को धाराप्रवाह नहीं पढ़ सकते और 'एक संख्या का भाग' का सवाल भी हल नहीं कर सकते हैं।

इस प्रकार वार्षिक शिक्षा की स्थिति को रिपोर्टों से प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता की स्थिति का पता चलता है लेकिन किसी सर्वेक्षण में अध्यापकों की काबलियत का पता लगाने की कोशिश नहीं की है। सभी केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों और अन्य नामचीन पब्लिक स्कूलें अध्यापकों का प्रतियोगी परीक्षाओं एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन करती हैं इसलिए इन शिक्षण संस्थाओं में काबिल अध्यापक ही होते हैं, लेकिन हमारे देश के सभी राज्यों में उनके शिक्षा विभाग बिना किसी प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों के अपने राज्यों में, खासकर गाँवों में अध्यापक नियुक्त करते हैं जिनकी काबलियत पर सवालिया निशान लगा रहता है। हालाँकि सभी राज्यों के शिक्षा विभाग प्रशिक्षित अध्यापकों के प्रमाणपत्रों और उपाधियों का सत्यापन करके नियुक्तियाँ करते हैं लेकिन क्या ऐसे नियुक्त अध्यापक पढ़ाने के काबिल हैं या नहीं?

सभी राज्यों में नियुक्त अध्यापक अपनी स्कूलों में प्रशिक्षित स्नातकोत्तर 11-12वीं कक्षाओं को, प्रशिक्षित स्नातक 6-10वीं को और प्रशिक्षित हायर सेकेण्ड्री स्नातक प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1-5 तक) को पढ़ाते हैं। अगर ये अध्यापक अपनी कक्षाओं के विषयों की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करके और पूरी तैयार करके नहीं पढ़ाएँगे तो वे अपने पढ़ाने के व्यवसाय से न्याय नहीं कर सकते। ये नियुक्त अध्यापक पढ़ाने में पारंगत हैं या नहीं इस बात को कोई भी पता नहीं लगाते। यहाँ तक कि दुनिया में भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अध्यापकों की काबलियत को नापने के लिए केवल चार पाँच बार कोशिश की गई है।

भारत में रुकमणी बेनर्जी और गीता किंगडोन ने बिहार और उत्तर प्रदेश के 10 जिलों की प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों को पढ़ाने की काबलियत का अध्ययन 2007-08 वर्ष में किया। खासकर उन विषयों को 'पढ़ाने की काबलियत' का अध्ययन किया जो वे प्राथमिक कक्षाओं को रोज पढ़ाते हैं। सर्वेक्षण करते समय दो प्रकार के प्रश्न पूछे गये, पहला 'क्या आप जानते हैं?' दूसरा 'क्या आप समझा सकते हैं?' उदाहरण के लिए पाँचवीं कक्षा के प्रतिशत के सवालों के आधार पर 'एक कक्षा में 35 में से 21 बच्चे हैं तो कितने प्रतिशत बच्चे कक्षा में अनुपस्थित हैं?' इस प्रकार के सवाल को केवल 25 प्रतिशत अध्यापक ही हल कर सके। दूसरा प्रश्न– 'एक लीची के पौधे को लगाने के लिए 25 वर्गमीटर भूमि की आवश्यकता होती है। रमेश के पास एक खेत है जो 80 मीटर लम्बा और 70 मीटर चौड़ा है। इस खेत में कितने लीची के पौधे लग सकते हैं?– केवल 28 प्रतिशत अध्यापक इस क्षेत्रफल के सवाल को हल कर सके। इतना ही भाषा के ज्ञान के लिए इन अध्यापकों को 5वीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के एक पाठ के सारांश को केवल 50 प्रतिशत अध्यापक ठीक से लिख सके। कक्षा 4 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के 4 मुश्किल शब्दों को सरल भाषा में अर्थ बताना और समझाने के लिए कहा गया। केवल 50 प्रतिशत अध्यापक ही इन शब्दों को सही ढंग से समझा सके। इन अध्यापकों को किसी विषय पर दस हिन्दी में वाक्य लिखने के लिए कहा गया, तो अध्यापकों ने लिखने में वर्ण विन्यास की गलतियाँ की। यह स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में चिन्ता बढ़ाने वाली है।

इतना ही नहीं इन अध्यापकों को शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में भी स्कूली शिक्षा के विषयों का ज्ञान हासिल करने का मौका नहीं मिलता क्योंकि इसका पाठ्यक्रम में कोई प्रावधान नहीं। बी.एड. कॉलेज में एक साल के शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान सैद्धान्तिक ज्ञान में शिक्षा सम्बन्धी विषयों को पढ़ाया जाता है और अध्यापन कार्यप्रणाली के अन्तर्गत किन्हीं दो विषयों के 30-40 पाठ योजनाएँ बनाकर स्कूल में जाकर कक्षाओं में पढ़ाना पड़ता है। स्कूलों में पढ़ाते वक्त बी.एड. कॉलेज के लेक्चरर पूरे कालांश में निरीक्षण करके आलोचनात्मक सुझाव देते हैं। इस प्रकार शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों को स्कूली शिक्षा में पढ़ाने वाले विषयों का ज्ञान हासिल नहीं होता। उपर्युक्त सर्वेक्षण में अध्यापकों के प्रतियोगी परीक्षा के प्राप्तांकों को ध्यान में रखते हुए हमें बी.एड. कॉलेज के सैद्धान्तिक ज्ञान में स्कूली शिक्षा में पढ़ाये जाने वाले दो विषयों की सभी पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण ज्ञान का पाठ्यक्रम में एक विषय रखा जाए तो सभी शिक्षक इन विषयों को पढ़ाने में सक्षम होंगे।

उपर्युक्त शिक्षक के काबलियत की परीक्षा के परीक्षाफल को ध्यान में रखते हुए ऐसे सभी अध्यापकों के लिए 20 दिन का प्रशिक्षण कोर्स प्रतिवर्ष होना चाहिए। इन कोर्स के अन्तर्गत अध्यापकों को उनके स्कूल में पढ़ाने वाले विषयों की पाठ्यपुस्तकों का ज्ञान हासिल कराना चाहिए। जिससे वे अपनी स्कूलों में जाकर अपने शिष्यों को अपना विषय सही और कारगर तरीके से पढ़ा सकें हो सके तो पद प्रशिक्षण कोर्स के निदेशक को कोर्स शुरू होने के पहले स्कूली शिक्षा के विषयों में प्रशिक्षणार्थियों की परीक्षा लें और स्कूली विषयों को पढ़ाने के बाद अन्त में भी परीक्षा लें और पता लगायें कि प्रशिक्षणार्थियों के विषय ज्ञान में कितनी उन्नति हुई है। इस प्रकार कार्यरत अध्यापकों को प्रशिक्षण कोर्स के दौरान उनके पढ़ाने की क्षमता

को उभारा जाए।

उपर्युक्त सर्वेक्षण में भाग लेने वाले परीक्षार्थी सभी अध्यापक हैं और वे स्कूली शिक्षा के विषयों को पढ़ाने में पारंगत नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में राज्य के शिक्षा विभाग इनको चयन करने से पहले इन विषयों की परीक्षा ले, शिक्षण प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में इन विषयों को पढ़ाया जाए और मौजूदा अध्यापकों के प्रशिक्षण कोर्स में स्कूली शिक्षा के विषयों को पढ़ाया जाए। इन सब साधनों के प्रयोगों के अलावा इन अध्यापकों को आत्मविश्लेषण करना चाहिए। जिन स्कूली शिक्षा के विषयों में वे पारंगत नहीं हैं उन्हें स्वाध्याय से या किसी अन्य कुशल अध्यापक से सीखना चाहिए अन्यथा वे अपने शिष्यों के साथ अन्याय कर रहे हैं। प्रत्येक अध्यापक को कुशल अध्यापक बनने के लिए जीवन भर सभी साधनों के द्वारा सीखते रहना चाहिए।

हमारे देश के बच्चे हमारे भारत के भविष्य के महल की नींव के पत्थर हैं। अगर नींव के पत्थरों को मजबूती से नहीं लगाया जाए तो भविष्य का महल ढह जायेगा। इन बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। हमारे देश के शिक्षक अगर बच्चों को सही शिक्षा नहीं देंगे तो उन बच्चों के साथ अन्याय होगा जिनके भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी उनको सौंपी गई है। वास्तव में शिक्षक राष्ट्रीय निर्माता हैं यदि बच्चों को शिक्षक के द्वारा सही शिक्षा और मार्गदर्शन मिले तो वे कल के हमारे देश के आदर्श नागरिक बन सकेंगे। हमारे देश के सभी शिक्षक स्कूल में शिष्यों को पढ़ाने वाले विषयों में माहिर हों और व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि की ओर निष्ठा हो तभी वह समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन निष्ठा से कर सकेंगे। हमारे देश के सभी अध्यापक समाज व राष्ट्र के विकास के हित में 'कुशल अध्यापक बनें'।

गुरु सच्चा मार्गदर्शन करता है। जो कुछ भी शिष्य में छिपा हुआ है उन प्रतिभाओं को प्रकट कर तराशता है। शिक्षक ऐसे गुरु होते हैं जो शिष्यों को अपने चरित्र, आचरण कर्मों से शिक्षा देते हैं।

–से.नि. शिक्षा अधिकारी
68 गोल्फ कोर्स स्कीम, जोधपुर

स्वाध्याय
(अर्थ, प्रकार एवं लाभ)

❑ **आचार्य वेदमित्र**

कोई व्यक्ति बड़ा कैसे होता है? कोई प्रसिद्ध कैसे हो जाता है? नाम तथा यश कैसे अर्जित कर लेता है? सफल कैसे हो जाता है? आप कहेंगे– परिश्रम करने से, मेहनत करने से...।

मैं कहूँगा– यह कोई सटीक उत्तर नहीं है। क्योंकि बहुत से व्यक्ति हैं संसार में, जो हाड़तोड़ मेहनत करने के बाद भी न सफल माने जाते हैं, न नाम और ख्याति प्राप्त कर पाते हैं, न किसी प्रकार का पुरस्कार ले पाते हैं।

अपने प्रश्नों को और सरल कर देता हूँ। महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, शहीदे आजम भगतसिंह आदि क्यों बड़े राष्ट्रभक्त कहलाते हैं? क्यों हम इन्हें याद करते हैं, क्यों हैं इनकी कीर्ति, प्रसिद्धि और नाम?

आप कहेंगे– क्योंकि इन सब महापुरुषों ने देश के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया था।

मेरा यह कहना है कि आपकी बात ठीक होते हुए भी पूर्णरूप से ठीक नहीं है, सटीक नहीं है? क्योंकि देश के लिए बलिदान तो लाखों लोगों ने किया था। फिर वह राज क्या था– जिसके कारण बापू एवं नेताजी इत्यादि देशभक्तों के विशाल आकाश में देदीप्यमान नक्षत्रों की भाँति दिखलाई दे रहे हैं।

अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा ही नियम देखने पढ़ने में आते हैं। परिश्रम एवं त्याग अनेक लोग करते हैं। शिखर पर कम ही लोग पहुँच पाते हैं। कुछ ही लोग नाम कमाने में एवं इतिहास में प्रेरणा स्रोत बन पाते हैं। आखिर क्यों? शिखर तक पहुँचने की सफलता का राज क्या है? कारण क्या हैं?

आप पाठकों के मन में अनेक प्रकार के उत्तर हिलोरे ले रहे होंगे– साहस, त्याग, सेवा, साधना श्रम और हुनर आदि...।

फिर भी यह कहना चाहूँगा सुधी पाठकवृन्द ! कि ये सब गुण सहयोगी हैं, सहायक तो हैं किन्तु प्रमुख नहीं। किसी व्यक्ति विशेष के लिए इनमें से भी कोई राज होता है, कारण होता है। रहे राज, हमें आपत्ति नहीं। मेरी दृष्टि में पूर्व प्रश्नों का उत्तर या राज है, पाँच नियमों में से चौथा नियम– स्वाध्याय, स्वाध्याय और मात्र स्वाध्याय।

प्रश्न उठेगा– यह कैसा राज है? कैसा कारण है? ऐसा तो न कभी सोचा था, न सुना था। ठीक है, जब सोचा और सुना ही नहीं है तब इस लेखक का इस ओर ध्यान आकर्षित करना सर्वथा उपयुक्त है, उचित है।

स्वाध्याय की महिमा की ओर चलें, उससे पूर्व स्वाध्याय के अर्थ को समझ लें। स्वाध्याय का एक अर्थ है सद्ग्रन्थों का, सत्शास्त्रों को पढ़ना। मानवतावादी, सकारात्मक एवं प्रगतिगामी साहित्य का अध्ययन-अध्यापन स्वाध्याय कहलाता है। सामान्यतः पढ़ने-पढ़ाने की प्रवृत्ति को स्वाध्याय कह दिया जाता है, पढ़ने की आदत वाला व्यक्ति स्वाध्यायशील कहलाता है।

अब आप इस लेख के प्रारम्भ की ओर गौर करें। मैंने जिन महापुरुषों के नाम लिए वे सभी स्वाध्याय प्रेमी थे, पुस्तक प्रेमी थे। चाहे उन्हें जेलों में समय बिताना पड़ा हो, चाहे काले पानी की यातनाएँ सहनी पड़ी हों, उन्होंने स्वाध्याय रूपी हथियार को सदा गले लगाए रखा। क्यों? क्योंकि स्वाध्याय विकास करता है। स्वाध्यायशील पुरुष का हृदय विस्तृत होता है, उसका दृष्टिकोण व्यापक होता है, सोचने का दायरा बढ़ जाता है, दृष्टि पैनी हो जाती है, लाभ-हानि स्पष्ट हो जाते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्ति युगों-युगों तक याद किये जाते हैं या कहें अमर हो जाते हैं।

किसी भी क्षेत्र में जाएँ– कृषि, व्यापार, शिक्षा, समाज सेवा आदि सभी में स्वाध्याय को

जोड़ते जाएँ, जिस किसी क्षेत्र के व्यक्ति के साथ यदि स्वाध्याय जुड़ जाता है तो निश्चित ही वह उस व्यक्ति में निखार लायेगा, उसे गति प्रगति प्रदान करेगा। जैसे कोई व्यक्ति सेना में सैनिक हो गया। सैनिक ठान ले तो स्वाध्याय करते हुए, योग्यता बढ़ाते हुए उत्तरोत्तर उच्च पदों पर पहुँच जाता है। कोई कोई तो सेनापति तक बन जाता है। अनूठी मिसाल कायम कर जाता है।

स्वाध्याय में ऐसी अनुपम शक्ति है कि वह प्रत्येक क्षेत्र के मनुष्य का मित्र के समान हित करता है। जो योग्य है उसे योग्यतर बना देता है और जो अधिक योग्य है उसे योग्यतम बना देता है। उस क्षेत्र का मास्टर बना देता है, हीरो बना देता है, सुपरस्टार बना देता है।

स्वाध्यायशील किसान और अच्छा किसान होगा। स्वाध्यायशील शिक्षक और अधिक वन्दनीय होगा। स्वाध्यायशील व्यापारी और अधिक सफल व्यापारी होगा। स्वाध्यायशील गृहिणी अधिक सुगृहिणी हो जाएगी।

स्वाध्याय खिलाड़ी के खेल को निखारेगा, कलाकार की कला को पंख लगायेगा, हुनरमंद के हुनर को और तराशेगा। कर्म में कौशल उत्पन्न करेगा। करता ही है।

इसलिए प्राचीन काल में जब विद्यार्थी स्नातक होकर गुरुकुल से विदा होता था तब दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया जाता था। उसमें प्रमुख आचार्य सूत्र रूप में जीवनोपयोगी बातें बताया करते थे– जैसे कि सत्याचरण करना, धर्माचरण करना और स्वाध्यायान में कभी प्रमाद मत करना ... (स्वाध्यायान् मा प्रमद, स्वाध्यायान् न प्रमदितव्यम्।)

वर्तमान काल में भी उत्तम शिक्षक अपने छात्र-छात्राओं को स्वाध्यायशील होने के लिए प्रेरित करते हैं। कोई उत्तम शिक्षक सेवानिवृत्त या जीवन निवृत्त हो, तो विद्यार्थी भाव विह्वल हो जाते हैं, वे कहते हैं अब हमारा मार्गदर्शन कौन करेगा? शिक्षक कहता है– पुस्तकें और पुस्तकालय तुम्हारा सदा मार्गदर्शन करने के लिए हैं। पढ़ने की आदत डालो, स्वाध्याय को दिनचर्या का हिस्सा बना लो।

अनेक गुरुजन तो शिष्य के मोह को पहले से ही क्षीण कर देते हैं। उनका स्पष्ट कहना होता है कि– बेटे जी मैं सदा ही तुम्हारे पास रहूँ, यह संभव नहीं है। हाँ, ये पुस्तकें और पुस्तकालय मेरे जाने के बाद भी तुम्हें उपलब्ध रहेंगे। अतः इनका आश्रय लो, इनकी शरण में रहो। स्वाध्याय करते समय किसी पन्ने पर तुम्हें अपने योग्य शिक्षक की झलक मिल सकती है। और वह झलक भोलाराम के जीव की भाँति नहीं, अंगुली पकड़कर राह दिखाते हुए गुरु की होगी। जी हाँ, सुधी पाठक ! पुस्तकों के कलेवर में हमें हमारे अच्छे शिक्षकों, गुरुजनों एवं महापुरुषों का दर्शन होता है, मिलन होता है और उनसे प्रेरणा पाकर हम प्रकाश की ओर गतिमान होते हैं।

विचार क्रान्ति अभियान शान्ति कुंज, हरिद्वार (भारत) के अनुसार– 'अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।'

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था– 'मैं भोजन और पानी के बिना रह सकता हूँ पुस्तकों के बिना नहीं।'

दिल बहलाती हैं किताबें, सब कुछ बताती हैं किताबें। जीवन में आगे बढ़ाती हैं किताबें। सोचने समझने की निगाह दिलाती हैं किताबें। अन्धविश्वास को दूर भगाती हैं (सदा) किताबें। इन्सानियत का पाठ पढ़ाती हैं किताबें, अच्छा मनुष्य बनाती हैं किताबें।

• क्या क्या पढ़ें अर्थात् किसका स्वाध्याय करें?

• जो भी सामने आये क्या उसे पढ़ें? आसपास के लोग जो पढ़ें क्या हम भी उसे ही पढ़ें?

• क्या समाचार पत्र एवं कुछ पत्रिकाएँ पढ़ना पर्याप्त नहीं होगा? कितना पढ़ें?

उत्तर में निवेदन यही है कि– पढ़ने के लिए स्तर का ध्यान रखना पड़ेगा। आपकी रुचि एवं विषय के अनुकूल सामग्री पर ध्यान देना है। जिस दिशा में, क्षेत्र में आप स्वयं की पहचान बनाना चाहते हैं उस दिशा के स्तरीय, अच्छे लेखकों की पुस्तकों का स्वाध्याय करना है। शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा का विकास करने वाली श्रेष्ठ रचनाओं को पढ़ें। व्यक्तित्व निर्माण के लेख, पुस्तकें इत्यादि पढ़ें, देखें और सुनें।

कार्यक्रम को ऐसा बनाएँ कि स्वयं के विकास के साथ-साथ परिवार सम्बन्धी, मित्रादि, समाज और राष्ट्र की प्रगति हो सके।

सुबह से शाम तक अखबार चाटते रहना समय की बर्बादी है। पत्र-पत्रिकाओं में अधिक समय लगाना उचित नहीं, वैसे भी आज कल के समाचार नकारात्मक सामग्री से भरे होते हैं। समय नियोजन करें और संसार के लोगों को अधिक से अधिक समय तक अधिक से अधिक सुख पहुँचा सकें। इस धरा धाम को अधिकाधिक सुन्दर बना पाएँ। ऐसे अरमानों को दिल में संजोकर स्वाध्याय करें।

• स्वाध्याय में प्राचीनता एवं आधुनिकता का समन्वय होना चाहिए। पूर्व और पश्चिम का संतुलन होना चाहिए। विज्ञान और अध्यात्म का संगम होना चाहिए।

• कुछ लोग एक दो ग्रन्थों को ही बार-बार पढ़ते रहते हैं। अन्य शास्त्रों से बचते रहते हैं और इसे अपना नियम मानते हैं। यह नियम तो जुगाली करने जैसा है। शास्त्र ग्रन्थ आपके मोह या दुराग्रह के विषय न बनें, बन्धन के कारण न बनें। अपितु विशाल दृष्टिकोण एवं मुक्ति के सोपान बनें।

• अपने विरोधियों के ग्रंथों को भी सुनने पढ़ने का अवसर मिले तो गवेषक की भाँति, एक खोजी की भाँति पढ़ते जाएँ, सत्य को ग्रहण करते जाएँ, हानि क्या है? एक चतुर सुजान अधिवक्ता (वकील) भी तो प्रतिपक्ष की दलीलों को बड़े गौर से सुनता है।

• बिन सही जानकारी के सुनी-सुनाई बातों में पड़कर किसी पुस्तक को फाड़ना, जला देना या उसके लेखक को गालियाँ देना बचकानी बातें हैं। इससे दूसरों की अपेक्षा स्वयं की अधिक हानि होती है।

• जो भी मित्र प्रतियोगी परीक्षा आदि के माध्यम से सेवा में आकर स्वाध्याय छोड़ देते हैं या यह कह बैठते हैं कि अब हमें पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं, नौकरी जो मिल गई है। ऐसे भटकावयुक्त चिंतन वाले शिक्षकों पर बहुत दया

आती है।

• मेरी अवस्था हजार वर्ष की हो जाए तब भी पढ़ने की सामग्री समाप्त नहीं होने वाली। अच्छी-अच्छी पुस्तकें फिर भी शेष रह जाएगी।

• शिक्षक अनेक वर्ष तक अध्यापन करता हुआ सच्चे विद्यार्थीपन को उपलब्ध होता है।

• पुस्तकों से भरी अलमारियाँ तुम्हारे बगीचे हैं, सैरगाहे हैं। वहाँ लगे फल तोड़ो, वहाँ खिले गुलाब चुनो, वहाँ से पराग और लोबान बटोरो। 'जुड़ा इलेन तिब्बन'

• कुछ पढ़कर सो कुछ लिखकर सो, तू जिस जगह जागा सवेरे उस जगह से बढ़कर सो। अर्थात् स्वाध्याय (जिसे अंग्रेजी में सेल्फ स्टडी कहते हैं) द्वारा तुम प्रतिदिन विकास के नये-नये सोपानों पर चढ़ो। इसके बिना हमारा जीवन व्यर्थ है। ऐसी महिमा है जिसकी वह स्वाध्याय हमें हमारे ध्येय से जोड़ता है, लक्ष्य तक पहुँचाता है, इष्ट से मिलाता है, इस लोक और परलोक दोनों को सुधारता है। इसलिए स्वाध्याय से कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। (स्वाध्यायान् न प्रमदितव्यम्)

• स्वाध्याय का एक और गहरा अर्थ होता है– स्व– स्वयं का अध्याय– अध्ययन (स्व+अध्याय) आत्मनः अध्ययनम् स्वाध्यायः। आत्मा का अध्ययन अथवा स्वयं का अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है।

• स्वाध्याय अर्थात् स्वयं के विषय में जानना। स्वयं का अवलोकन करना, स्वयं का निरीक्षण करना, परीक्षण करना, स्वाभिमुख होना, स्वयं को देखना, जाँचना, परखना। स्वाध्याय अर्थात् अन्तर्जगत् की यात्रा पर निकल पड़ना।

• स्वाध्याय अर्थात् स्वयं के अन्धकार को तिरोहित कर स्वयं के प्रकाश को पाने की दिशा में कदम बढ़ाना।

• स्वाध्याय अर्थात् स्वयं की आन्तरिक शक्तियों को जानकर, मन, बुद्धि आदि को जानकर, वृत्तियों को समझकर आन्तरिक विकास करना।

• स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं के द्वारा, स्वयं में उतरकर, स्वयं के खजाने को पा लेना।

• स्वाध्याय अर्थात् स्वयं की आन्तरिक शक्तियों को जानकर मन बुद्धि आदि को जानकर वृत्तियों को समझकर आन्तरिक विकास करना।

वर्तमान विकास बाह्य पदार्थों के संग्रह, संवर्द्धन, परिग्रह (पकड़) पर अधिक ध्यान देता है। यह विकास अनिवार्य तो है किन्तु स्थायी नहीं। इस विकास को भौतिक विकास कहा जाता है। भौतिक विकास बाहर-बाहर की वस्तुओं की अधिकता का नाम है। जैसे– भूमि एवं इस पर विद्यमान जल, वनस्पति, पशु-पक्षी, मानव शक्ति (जन शक्ति), धन शक्ति एवं अन्य पदार्थ इत्यादि।

आन्तरिक बल ही यथार्थ एवं स्थायी बल है। टिकाऊ विकास है। इसे ही अध्यात्म कहते हैं। आन्तरिक विकास के परिणाम हैं– विवेक, दया, करुणा, प्रसन्नता और आनन्द।

निष्कर्ष रूप में स्वाध्याय के दोनों ही पक्षों पर संतुलित ध्यान देना है। नियमितता से पढ़ना पढ़ाना भी है। अच्छे साहित्य को भी पढ़ना है। बाह्य विकास करना है, भौतिक प्रगति के सभी साधन जुटाने हैं और भीतर से खाली नहीं रहना है। अध्यात्म को अन्तर्निहित सम्पदा को भी पाना है, तभी स्वाध्याय की सार्थकता होगी।

पुनश्च स्वाध्याय अर्थात् मानवतावादी सत् साहित्य का अध्ययन करना एवम् द्वितीय स्वाभिमुख होना, स्वयं को पहचानना। स्वाध्याय प्रत्येक प्रकार की योग्यता में चार चाँद लगाने का कार्य करता है। मनुष्य मात्र को गुणवत्ता प्रदान करता है। अतः आज ही से स्वाध्याय प्रारम्भ हो जाए। असीम शुभ कामनाएँ।

–प्राध्यापक, संस्कृत
आनन्द भवन, 369, सुभाष नगर,
पाल रोड, जोधपुर

स्वाध्याय - एक चिन्तन

❑ रमेश चन्द कनेरिया

गीता में कहा है 'न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्रामिह विद्यते' अर्थात् संसार में ज्ञान से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ नहीं है। इसीलिए ज्ञान प्राप्ति मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा से भौतिक पूर्ति तो हो जाती है, किन्तु आत्मिक उन्नति संभव नहीं है। 21वीं सदी में विज्ञान की प्रगति ने शारीरिक सुखों में तो अभिवृद्धि कर दी है किन्तु आत्मिक सुखों में भारत की गौरवशाली परम्परा विलुप्त हो रही है। जगत्गुरु की उपाधि से उपमित भारत, भौतिकता की दौड़ में पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर अपनी गरिमा को धूमिल कर रहा है। हम सुविधावादी युग की होड़ को ही सफलता मान बैठे हैं, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वयं को जाने बिना भौतिक दौड़ अंधी ही साबित होगी। इसलिए इस ओर कदम रखने से पूर्व स्वाध्याय की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

स्वाध्याय का अर्थ : स्व+अध्याय अर्थात् स्वयं का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। अर्थ से परिलक्षित हो रहा है कि स्वाध्याय, आत्मज्ञान की ओर बढ़ने हेतु प्रेरित करता है, जो ज्ञान आत्म विकास में सहायक है, उसी को स्वाध्याय श्रेणी में रखा जाता है।

आवश्यकता : हमारी भारतीय संस्कृति तभी अक्षुण्य रह सकती है जब हमारा बौद्धिक चिन्तन स्वाध्याय प्रवृत्ति की ओर बढ़े। जब तक स्वयं को नहीं जानेंगे; पर को कैसे जान सकते हैं? स्वाध्याय की वह विधा है जिससे विवेक रूपी सूर्य उदय होता है और मिथ्यात्वरूपी अंधकार दूर होता है। इससे ही हेय-ज्ञेय-उपादेय की जानकारी हो सकती है। स्वाध्याय की कमी से ही आज विश्व में अप्रत्याशित घटनाओं का बोलबाला चल रहा है। भारत की संसद पर हमला, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बलात्कार, आत्महत्याएँ, दुराचार, अनाचार की घटनाएँ हमारी अज्ञानता की ही देन है। वर्तमान का भारत शैक्षिक जगत में धीरे-धीरे शैक्षिक बाजार की ओर गतिशील हो रहा है, जबकि भारतीय मनीषियों ने हमें सदैव 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया है, क्योंकि इसी से आत्मज्ञान बढ़ता है तथा भय की स्थिति नहीं रहती है। स्वाध्याय से व्यक्ति अपने

वास्तविक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

विद्या वह है जो हमारे जीवन के उद्देश्यों को परिपूर्ण करने में सक्षम हो। हमारी कमजोरियों को दूर करने की उसमें सामर्थ्य हो। इसीलिए कहा है 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वह है जो मुक्त करती है। जैसे-जैसे विद्यार्थी विद्या की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे उसमें विनम्रता बढ़ती जाती है क्योंकि 'विद्या ददाति विनियम' की उक्ति चरितार्थ होने लगती है। विद्यावान किसी से विवाद नहीं करता और पानी की तरह तरल बन अभिमानरूपी हाथी से नीचे उतर, विनम्रतापूर्वक झुक जाता है।

स्वाध्याय का महत्व : किसी भी राष्ट्र की प्रगति बिना ज्ञान-विज्ञान के संभव नहीं है। ज्ञान बिना स्वाध्याय संभव नहीं है। स्वाध्याय का सीधा सम्बन्ध हमारी आत्मा से रहता है। स्वाध्याय से बुद्धि विकसित होती है। मन और आत्म शक्तियों का विकास होता है तथा सुषुप्त शक्तियाँ जागृत बनती हैं। स्वाध्याय से हम अपनी आत्मा का स्वरूप तथा हित जान सकते हैं। संस्कृत में एक कवि ने कहा है कि–

'मातेव रक्षति, पितेव हिते नियुक्ते,
कान्तेव चभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम,
किं किं न साधयति जनं स्वाध्यायवृत्तिः॥'

जैसे माता अपनी संतान का ममतापूर्वक संरक्षण और संवर्द्धन करती है, वैसे ही स्वाध्यायवृत्ति भी मनुष्य का हर प्रकार से संरक्षण तथा संवर्द्धन करती है। पिता जैसे अपने पुत्र को बुराई से बचाकर हित प्रवृत्ति में ही संयोजित करता है वैसे ही स्वाध्यायवृत्ति भी मनुष्य को हित प्रवृत्ति में संलग्न करती है। जैसे पत्नी अपने पति की तन मन से सेवा करती है और उसको प्रसन्न रखती है, वैसे ही स्वाध्यायवृत्ति भी मनुष्य को हर प्रकार की खिन्नता से रहित करके सदैव स्वस्थ, सुशील और प्रसन्नचित्त बनाती है। स्वाध्याय से ज्ञान और ज्ञान से मनुष्य की शोभा द्विगुणित हो जाती है। जब तक ज्ञान नहीं है तब तक शुद्ध आचरण संभव नहीं है।

जैन दर्शन में उत्तराध्ययन सूत्र के 28वें अध्ययन में भगवान महावीर स्वामी ने फरमाया है कि 'णाणेण विणा ण हुंति चरण गुणा' अर्थात ज्ञान के बिना चारित्र के गुण उत्पन्न नहीं होते और चारित्र गुण से रहित को मोक्ष नहीं होता। दशवैंकालिक सूत्र के अध्ययन-4 में बताया गया है कि, 'पढमं णाणं तओ दया' अर्थात सर्वप्रथम ज्ञान तत्पश्चात् ही जीवदया संभव है क्योंकि ज्ञान से ही विवेक जागृत होता है और विवेक होने पर ही जीवदया संभव है।

स्वाध्याय आत्मा को पोषित करता है, मन और इन्द्रियों को नियंत्रित करता है तथा दुर्गुणों को दूर करता है। अज्ञान को हटाता है। समभावों की ओर आत्मा को अग्रसर करता है। कथनी-करनी को एक कर, आत्मा को शुद्ध बनाने में मदद करता है। स्वाध्याय से मोह और प्रमाद दूर होते हैं।

इसमें स्वयं का ही निरीक्षण किया जाता है जिससे जीवन उत्कृष्ट बनता है। यह अपने स्वयं के जीवन को बदलने का श्रेष्ठ मार्ग है।

स्वाध्याय में चिन्तन को बदलने की शक्ति है, आत्मा के ऊपर आये हुए अज्ञानरूपी आवरण को यह हटा सकने की क्षमता रखता है। इसका अभ्यास निरन्तर करने से जीवन में सुख शान्ति की अभिवृद्धि निश्चित है। इसके बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान बिना अज्ञानरूपी अंधेरा दूर नहीं होता। अज्ञानरूपी अंधेरे में भटकने वाला व्यक्ति सदैव दुःख ही उठाता है। जीवन कैसे जिया जाय? यह रास्ता सिर्फ स्वाध्याय के पास ही है। स्वाध्याय भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। यह जीवन में अशुभ भावों को शुभ भावों में बदलने की क्षमता रखता है। शुभ भाव ही व्यक्ति को स्वस्थ एवं स्वच्छ बना सकते हैं। अनर्थकारी दिशाओं के भटकाव से बचने का यह एक अमोघ उपाय है। कब क्या करना? – कब क्या नहीं करना? यह विवेक स्वाध्याय के माध्यम से ही जागृत होता है।

इससे ज्ञान का अभ्यास बढ़ता है ताकि विवेक, बुद्धि से अच्छे बुरे का निर्णय ले सकें एवं आने वाले संभावित खतरों को टाल सकें। यदि अज्ञानता दूर हो गई तो आने वाली बाधाओं का स्वतः ही समाधान निकल आएगा। ज्ञानी ही अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है, अज्ञानी नहीं। अज्ञानरूपी अंधेरा जीवन में शारीरिक मानसिक व आध्यात्मिक भय उत्पन्न करता है।

स्वाध्याय करने की विधि : इस विधि में व्यक्ति अपने स्वयं के अन्दर देखता है और आत्म दृष्टा बन यह चिन्तन करता है कि 'मुझे आत्मिक शान्ति' को प्राप्त करने हेतु क्या पुरुषार्थ करना चाहिए? स्वाध्याय में उन बातों का विशेष चिन्तन करें जो आत्मिक सुखों को बढ़ाते हों।

स्वाध्याय के प्रकार : जैन दर्शन स्वाध्याय को निम्न पाँच भागों में विभाजित करता है– 1. वाचना– अर्थात अध्ययन करना। 2. पृच्छना– अर्थात शंकाओं को निवारण करने हेतु पूछना। 3. परावर्तना– सीखे हुए ज्ञान को बार-बार चितारना। 4. अनुप्रेक्षा– ज्ञान की गहराई में डुबकी लगाकर तात्विक चिन्तन कर आत्मा को ऊँचा उठाने हेतु विचार करना। 5. धर्म कथा– सीखे हुए ज्ञान को विस्तारित करने हेतु लोगों को धर्म कथा कहकर इस ओर अग्रसर करना धर्म कथा है।

स्वाध्याय करने से होने वाले फल की प्राप्ति : 1. इससे राष्ट्रव्यापी सभ्य समाज का निर्माण होता है और संकीर्णता से ओत-प्रोत विचारों में रुकावट आती है। 2. विचारों की शुद्धि होती है और कुविचार, मन में भ्रान्तियाँ आदि पैदा नहीं होते हैं। 3. व्यक्ति ज्ञानी बन जाता है। विवेकशील हो जाता है। विनम्रता बढ़ जाती है। अपने ज्ञान से जीवन की हर कठिनाई का सामना करने की क्षमता बढ़ जाती है। 4. बुद्धिलब्धि का विकास होता है जिससे जीवन के हर कार्य सरल होने लगते हैं। 5. व्यक्ति में आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है जो उसके समस्त दुःखों एवं बाधाओं को दूर करने में सहायक होती है।

उपसंहार : इस प्रकार स्वाध्याय जीवन को समुन्नत करने का एक बीज है। जब तक ज्ञान प्राप्त न हो तब तक अज्ञान की निवृत्ति नहीं होती एवं अज्ञान की निवृत्ति हुए बिना भ्रम का विनाश नहीं होता। अतः शैक्षिक जगत में इस प्रवृत्ति की अभिवृद्धि हेतु सत्प्रयासों की आवश्यकता है।

–शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक)
शिक्षा विभाग, कोटा (राज.)

पेन्सिल और रबड़ संवाद

❑ उमेश चन्द गुप्ता

पेन्सिल ने रबड़ से कहा– 'तुम मुझे क्षमा कर दो।'

रबड़ ने पेन्सिल से पूछा– 'तुमने कोई गलती ही नहीं की, फिर किस बात के लिए क्षमा मांग रही हो?'

पेन्सिल ने उत्तर दिया– 'मुझे खेद है कि मेरे कारण तुम्हें बार-बार घिसा जाता है। जब भी मैं कोई गलती करती हूँ तो उसे सुधारने के लिए तुम्हें घिसा जाता है, जिससे तुम्हारा जीवन निरन्तर कुछ कम होता जाता है।'

'यह सही है कि तुम्हारी प्रत्येक गलती के लिए मुझे घिसा जाता है जिस कारण मेरे जीवन का क्षरण होता है, परन्तु मेरे मन में इसका लेशमात्र भी मलाल नहीं है। मेरे जीवन का निर्माण इस प्रयोजन के लिए ही हुआ है कि जब भी तुमसे कोई गलती हो जाये तो उसे सुधारने के लिए मैं तुम्हारी मदद करूँ। इस प्रकार अपना कर्तव्य पालन कर मैं खुशी का अनुभव करता हूँ। हाँ ! तुम्हारा यों अकारण दुःखी होना मेरे लिए कष्टदायक है क्योंकि तुम्हें सृजन की प्रवृत्त करना और उसमें सहायक बनना ही मेरे जीवन की सार्थकता है।' प्रत्युत्तर में रबड़ ने कहा।

मैंने जब पेन्सिल और रबड़ के मध्य हो रहे उक्त संवाद पर गौर किया तो अहसास हुआ कि शिक्षक भी तो रबड़ की भूमिका का ही निर्वहन करता है अपने शिष्यों के जीवन-सृजन में। वह भी अपने शिष्यों की गलतियों को सुधारने और उनको आगे बढ़ाने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देता है। कितना कठिन है यह सृजन ! आम आदमी सामान्यतया भविष्य में झाँकने में रुचि रखता है क्योंकि भविष्य के प्रति वह आशंकित रहता है परन्तु शिक्षक को भविष्य के साथ अतीत में भी झाँकना पड़ता है। भविष्यदर्शन चुनौतियों की तैयारी के लिए आमंत्रण देता है तो अतीत की स्मृतियाँ अनुभव प्रदान करती हैं। यह भविष्ययुक्त अतीतदर्शन, शिक्षक को शिष्य के भीतर उतरने में मदद करता है जिससे शिक्षक और शिष्य के रिश्ते का सेतु बनता है। इस सेतु निर्माण से एक दैविक शक्ति सक्रिय होती है जो सृजन एवं परिमार्जन के लिए निरन्तर स्फुलिंग देती रहती है।

एक बार की घटना है जब मैं एक स्कूल में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत था और एक विद्यार्थी को उसी स्कूल में कार्यरत एक शिक्षिका के पर्स से कुछ रुपये चुराते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया गया। चोरी की घटना जब मेरी जानकारी में आई और उस छात्र को दण्डित करने के लिए शिक्षिका से चर्चा की तो शिक्षिका ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, 'सर ! उसे विद्यालय से मत निकालिये। ये बच्चे चोर नहीं हैं, बल्कि अभावग्रस्त परिवारों से हैं। मैं सब सुधार लूँगी।' इतना कहकर उस शिक्षिका ने पूरे घटनाक्रम का पटाक्षेप कर दिया। वह विद्यार्थी आगामी चार वर्षों तक वहाँ अध्ययनरत रहा परन्तु दोबारा उसकी कोई शिकायत नहीं आई और विद्यालय त्याग से पूर्व उसने एक उत्तरदायी छात्र के रूप में अपनी पहचान भी कायम की। कितना गहरा 'गुरु' भाव रहा उस शिक्षिका में जिसने एक अपराधी बनते छात्र को उत्तरदायी नागरिक के रूप में तराश दिया। जो व्यक्ति केवल शरीर से काम करता है वह कामगार की श्रेणी में आता है। जो व्यक्ति शरीर और दिमाग दोनों से काम करता है, वह कुशल कामगार या कारीगर की श्रेणी में आता है और **जो व्यक्ति शरीर, दिमाग और दिल तीनों से काम करता है, वह कलाकार की श्रेणी में आता है। शिक्षक भी एक कलाकार है।** ऐसा कलाकार जो अपने सृजन की खूबी में भी स्वयं ही खामी तलाशता है, उसे परिमार्जित करता है और सृजन को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाकर आत्मविभोर हो जाता है। शिक्षक भी समाज में उत्तम नागरिकों का सृजन करता है तथा अपने शिष्यों को उन्नति की राह में आगे बढ़ता देख आनन्दित होता है।

एक अन्य स्कूल में जब मैं सामान्य परिवीक्षण करते हुए विद्यालय के बरामदे में चहल कदमी कर रहा था, तभी पीरियड की घंटी बजी। एक बहिन जी कक्षा में दाखिल हुई और एक छात्र को हिन्दी के पाठ का वाचन करने का कहकर स्वयं विद्यार्थियों का अवलोकन करने लगी। इसी दौरान बहिन जी की नजर एक बच्चे पर टिकी। उन्होंने उसको अपने पास बुलाया, प्यार से सहलाया और उसकी शर्ट की गन्दी कॉलर पर लगे बटन को अपने ही दाँतों से काटकर पर्स में रखे सुई-धागे से उसकी शर्ट की आस्तीन पर लगाते हुए बोली– 'बेटा खुली बाँहों में ठंड लग जाएगी।' ऐसा करके वह पुनः शिक्षण में व्यस्त हो गई। अपने कक्ष में लौटकर मैंने चिन्तन किया और शिक्षिका को बुलाया। उससे उसके पर्स में रखे टीचिंग टूल्स के बारे में जानना चाहा तो बहिनजी ने अपना पर्स मेरी ओर बढ़ा दिया। पर्स खोलकर देखा तो मैं अवाक् रह गया, पर्स में पुस्तक, चाक, डस्टर के अलावा सुई-धागा, कुछ बटन, मंजन-पेस्ट, साबुन, नेलकटर, फेवीस्टिक और एक क्रोशिया था। मैंने शिक्षिका से कुछ कहना चाहा परन्तु मेरे शब्द मौन हो गये क्योंकि उस कर्मयोगी की कौतुहल भरी नजरें मुझसे पूछ रही थी कि सर ! इस पर्स में और क्या टूल्स रखूँ। मेरी समझ में आ गया कि बहिन जी के स्कूल अहाते में घुसते ही बच्चे उनसे क्यों लिपट जाते हैं, क्यों उनका सामान थाम लेते हैं, क्यों उनकी अँगुली पकड़ कर चलने में गर्व का अनुभव करते हैं और उनको प्यार से बुआ क्यों कहते हैं, वास्तव में कितना तपना पड़ता है, सृजन के लिए गुरु को।

यों तो शिक्षा क्षेत्र में कम्प्यूटर क्रान्ति ने अपने गहरे पैर जमा लिये हैं जिसके द्वारा सूचनाओं का संग्रहण और संवहन शिक्षक से भी त्वरित गति से एवं अधिक मात्रा में किया जा रहा है, परन्तु एक सृजनधर्मी शिक्षक मात्र 'कोरियरवाला' न होकर 'कैरियर वाला' शिक्षक होता है। संवेदना शून्य मशीनें जीविकोपार्जन में सहयोगी बन सकती हैं परन्तु जीवन सर्जन कभी नहीं कर सकती। सर्जनात्मक शिक्षण का अर्थ है, एक ताजा हवा का झोंका जो आत्मा तक को सुगन्ध से तर कर दे, विचार की एक कौंध जो लीक से हट कुछ नया करने को प्रेरित करे और एक दूब का हौंसला जो आँधियों के बीच अपनी अस्मिता को कायम रख सकें।

हम वर्तमान व्यवस्थाओं को कितना भी कोसें, परन्तु ऐसे कैरियरधारक, कलाकार व रबड़भाव रखने वाले गुरु समाज में बिना किसी प्रमाण पत्र के आजीवन सम्मान एवं श्रद्धा के पात्र बने रहते हैं। ऐसे गुरुओं को सम्मान देकर शिष्य और समाज भी स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। इन्हें नमन्।

–196, शिवनगर A, मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर

जहाँ शिक्षा है, वहाँ रक्षा है

❑ संग्राम सिंह सोढ़ा

विद्वान शेक्सपीयर ने अशिक्षा यानी अज्ञानता को मानव के लिए सबसे बड़ा अभिशाप माना है। तभी तो यह सच है कि अनपढ़ के लिए 'काला अक्षर भैंस बराबर'। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो शिक्षा का होना मानवता के लिए शत-प्रतिशत अनिवार्य हो गया है। वास्तव में उसका जीवन आधा-अधूरा समझा जाने लगा है। केवल साक्षर होना काफी ही नहीं है। उसका पूर्ण शिक्षित होना समय की प्रथम आवश्यकता बन गई है।

शिक्षित मानव ही अपने जीवन की गाड़ी को पटरी पर लाने में सक्षम हो सकता है। अतः कम से कम व्यावहारिक शिक्षा की अवधारणा को समझे बिना अपनी एवं परिवार के साथ समाज की प्रगति करना असंभव है, क्योंकि आज का शिक्षार्थी कल के प्रजातंत्र का, समाज के विकास का और मानवीय मूल्यों का संवाहक है। शिक्षा ही उसके लिए एक नवीन संस्करण है। उसके लिए यह एक जीवनक्रम है। उन्हें उन्मुक्त स्वरूप प्रदान करने का सही उपक्रम है।

शिक्षा अनवरत एवं सतत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के जरिए हम अपने बचपन से बुढ़ापे तक कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। अतः शिक्षा का हमारे जीवन से प्रगाढ़ सम्बन्ध है। हमारे समुचित विकास की कामयाबी का मंत्र शिक्षा ही मानी जाती है। शिक्षा ही हमें एकता के सूत्र में बाँधे रख सकती है। प्रसिद्ध व्यंग्यकार गिरिराजशरण की धारणा है कि 'शिक्षा दरअसल एक तरह की बूट पॉलिश है, जैसे पुराने जूते पर लगाई गई पॉलिश की तरह ब्रुश की रगड़ से चमका दी जाती है। उसी तरह शिक्षा का स्वर्ण आवरण आदमी को तुर्रम खां की शान दे देता है।'

डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा को महज आदर्श न मानकर एक जीवन्त शक्ति की संज्ञा देते हैं। उनका कहना था कि– 'शिक्षा जीवनदायिनी होती है, मुक्तहारी होती है, आत्मिक जड़ता को तोड़ती है, आत्म नियंत्रण सिखाती है और करुणा का विस्तार करती है, यदि वह ऐसा नहीं करती तो वह शिक्षा तो नहीं है चाहे और कुछ भी क्यों न हो।' इसी तरह से अन्य शिक्षाविदों ने भी शिक्षा की उपादेयता को प्रासंगिक रूप से सर्वोपरि माना है। महात्मा गाँधी जी ने यों परिभाषा व्यक्त की है– 'बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंग की अभिव्यक्ति शिक्षा है।' स्वामी शंकराचार्य का कथन पठनीय है कि 'शिक्षा वह है जिससे पूर्ण आत्मज्ञान का अनुभव है।' एक अन्य चिंतक के अनुसार 'बचपन की सीख गम्भीरता से नहीं ली जाती लेकिन अपने कर्म द्वारा बिना कहे की शिक्षा मिलती है, वह प्रभावी होती है।' महाकवि कालिदास शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में अपने विचार यों प्रगट करते हैं कि 'कोरे पुस्तकीय ज्ञान को प्राप्त कर लेना अपने में कोई अर्थ नहीं रखता। विद्या अर्जन के पश्चात सतत अभ्यास की आवश्यकता होती है।' विद्या की महिमा अपरम्पार है। यह दोहा इस कथन को भलीभाँति चरितार्थ करता है–

'विद्या विश्व विनोद है, विद्या विविध विलास।
विद्या सुख संसार का, विद्या ज्ञान प्रकाश॥'

शिक्षा उन्नति की आभा, ज्ञान सुधा एवं सुम्मति की सुमति है, जिसका उजाला हमें सितारों की भाँति प्रकाशवान बनाता है। शिक्षा ही हमारी सभ्यता और संस्कृति की संवाहक है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में जीने का सलीका सीखा जाता है। शिक्षा ही व्यक्ति को समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा का दर्जा दिलाती है। शिक्षा ही हमें शोषण के विरोध उत्प्रेरित करती है। यह ही सही दिशा में हमारा दृष्टिकोण विकसित करती है। इससे हमारा सर्वांगीण विकास होता है। इसके ज्ञान से लोभ, मोह, काम क्रोध एवं अहंकार का शमन होता है। यह ही प्रेरक-पूर्ण जीवन प्रदान करती है। इसके द्वारा हम चरित्र का सुन्दर सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं।

शिक्षा ही हमें चरित्रवान, नीतिवान, धैर्यवान, ईमानदार, सदाचार, सहिष्णुता, समानता, बंधुत्व-प्रेम, संयमी और साहसी बनने की प्रेरणा देती है। यह हमें सदैव नैतिकता और अनुशासन का पाठ पढ़ाती है। यह हमें विनम्रता के रूप में 'नमे ते सऊ ने गमे' का गुण सिखाती है। यह हमें कुण्ठा, तनाव और निराशा जैसे बोझिल भावों से मुक्त रखती है। यह हमारी स्मरण शक्ति को समृद्ध बनाती है। सदाचारी इन्सान के लिए सम्यक् विकास की आवश्यकता को शिक्षा के माध्यम से ही बखूबी किया जा सकता है। यह हमें राष्ट्रीय विकास के बाधक तत्वों जैसे प्राकृतिक विपदा, भूख, बेकारी, प्रदूषण रोग, महामारी, विस्फोटक, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, पर्यावरणीय असन्तुलन एवं जनसंख्या वृद्धि के बढ़ते दुष्प्रभावों के निराकरण हेतु जागरूक करती है। शिक्षा की आराधना से हमें प्रकाश और उल्लास मिलता है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। अतः यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि 'जहाँ शिक्षा है वहाँ रक्षा है।'

शिक्षा एक ऐसा उजाला है जो मनुष्य को अज्ञान और अंधेरे के कूप से निकालकर उन्हें प्रकाश की ओर संवर्द्धित कर मानवीय संवेदनाओं और संस्कृति के उच्च मूल्यों के प्रति सचेत करती है। यह कहना पड़ेगा कि समाज में सदियों से व्याप्त अवरुद्ध बन्धन रूपी अवनति की परिधि से मुक्ति दिलाने में शिक्षा का सर्वोपरि स्थान है। सचमुच आज शिक्षा के कारण स्वच्छ वातावरण में उपजी वैज्ञानिक सोच हमें अंधविश्वासों, रूढ़ियों और कुरीतियों जैसी भयानक बुराइयों को सुगमता से दूर करने की राह दिलाती है, जिससे हमारी शैक्षणिक उन्नति का पथ आसानी से गंतव्य की ओर प्रशस्त होने लगा है।

शिक्षार्थी ही समाज का एक सभ्य नागरिक के रूप में राष्ट्र का नव निर्माण करके उसे विकास के पथ पर ले जाते हैं। अतः शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना लाजमी हो जाता है। शिक्षक ही देश के इन भावी

कर्णधारों में शिक्षा के द्वारा देशभक्ति का जज़्बा, अनुशासन, मानवीय मूल्य, सार्वभौमिकता और सर्वजन हिताय की उदात्त भावना भर सकते हैं। उनका सम्पूर्ण दायित्व बनता है कि शिक्षार्थियों में निष्ठापूर्वक समर्पण भाव से पढ़ाई के साथ स्वावलम्बन जीवन जीने की अभीष्ट सीख प्रदान करें, ताकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली धर्म-सम्मत मानवीय गुणों एवं संवेदनाओं को भावात्मकता से जोड़ने में सफल हो सके।

सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक वृद्धि के निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें प्राथमिकता के तौर पर शिक्षार्थियों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने हेतु सक्रिय प्रयास करने के लिए शिक्षा के विविध नवाचारों के साथ निर्दिष्ट आयामों के तौर-तरीकों को व्यापक प्रभावी ढंग से शिक्षण को अभिरुचि पूर्ण बनाने के लिए अपेक्षित शैक्षिक सुविधाओं के अनुरूप आनंददायी वातावरण में प्रस्तुत करना होगा, ताकि व्यावहारिक रूप से बच्चों की कल्पना शक्ति को भी निर्दिष्ट बल मिल सके। हम ज्ञानार्जन के उजाले में शैक्षिक उद्देश्यों की कसौटी पर खरा उतर सकें।

अतः ऐसी दमदार शिक्षा को सकारात्मक रूप देने हेतु समाज के प्रत्येक वर्ग को तन-मन से आगे आकर इस पावन महायज्ञ को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। ऐसी स्थिति में हम समय के साथ शैक्षिक जगत में वाँछित क्रांति लाने में सक्षम हो सकें और पुनः अपना देश विश्व का जगद्गुरु बनकर 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की आदर्शमयी गर्वोक्ति का कीर्तिमान खिताब पाने में सफल हो जाए। ऐसी यशस्वी कीर्ति को अर्जित करने वाले एकलव्य एवं स्वामी विवेकानंद जैसे शिक्षार्थियों की भारत माता सदैव स्नेहिल भावनाओं से सहर्ष स्वागत करती हुई फूली नहीं समाएगी।

–अध्यापक, सोढांण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा, पो. बज्जू, बीकानेर-334305

राष्ट्रीय एकता में भाषाओं का योगदान

❑ **डॉ. गिरीश दत्त शर्मा**

किसी भी राष्ट्र की सम्पन्नता का परिचय उसके धर्म, दर्शन और भाषाओं की विविधता के द्वारा मिलता है तथा उसकी शक्ति उन विविधताओं में छिपी भावात्मक एकता से प्रकट होती है। भारत के लिए यह गर्व का विषय है कि यहाँ अनेक प्रान्त हैं, अपनी प्राकृतिक सम्पदा है, अपने-अपने धर्म, दर्शन तथा रीतिरिवाज हैं, विभिन्न वेश भूषाएँ तथा रहन-सहन के तरीके हैं फिर भी हम भारतवासी इस तथ्य को कभी नहीं भूलें कि हम सब एक हैं। इस एकता का सबसे अधिक श्रेय हमारी भाषाओं को है जिन्होंने हमारे देश को अखण्डता के एक सूत्र में बाँधकर इसे बल दिया है।

भाषाओं के द्वारा हमारे देश में जिस भावात्मक एकता की प्रतिष्ठा हुई है वह कृत्रिम अथवा आरोपित न होकर सहज और स्वाभाविक है क्योंकि भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत की संतान हैं। सभी भाषाएँ आपस में सहोदरा बहिन का नाता रखती हैं इस कारण इनकी प्रकृति, इनका स्वरूप तथा इनमें सन्निहित विचारों में तादात्म्य होना स्वाभाविक है। इसी बिन्दु को ध्यान में रखते हुए गाँधी जी ने कहा था– 'भारत एक घर है, ऐसा घर जिसमें भाषा के अनेक भाई-बहिन मिलकर एक साथ रहते हैं। एक कुशल चित्रकार चित्र में अनेक रंगों का इस प्रकार संयोजन करता है कि यह ज्ञात करना कठिन हो जाता है कि कौनसा रंग कहाँ शुरू होकर कहाँ खत्म होता है। इसी प्रकार भाषाओं की स्थिति है। भारत की सभी भाषाओं में यह निर्णय करना कठिन है कि किस भाषा का क्षेत्र कहाँ से आरम्भ होकर कहाँ समाप्त होता है। हम अध्ययन अथवा प्रशासनिक व्यवस्था की सुविधा के लिए भाषाओं को क्षेत्रों में बाँट देते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि भारत की किसी भाषा को पूर्णतया सीमाबद्ध कभी नहीं किया जा सकता। प्रत्येक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होती है और दूसरी तीसरी से क्योंकि भाषा का जन्म जन साधारण के मध्य हुआ है। कोई मनुष्य अकेला रहना नहीं चाहता। आपस में मिल-जुलकर बातचीत करके अपना अकेलापन दूर करने की उसकी स्वाभाविक लालसा होती है। वह अपना अनुभव दूसरों को सुनाता है और दूसरों के अनुभव स्वयं सुनता है। भावों के इस आदान-प्रदान की परिणामस्वरुप एक भाषा के शब्द, वाक्य, मुहावरे दूसरी भाषा में स्वयं आ जाते हैं जैसे– हिन्दी भाषा में गुजराती भाषा के हड़ताल, बंगला के गल्प, उपन्यास, मराठी के चालू, पंजाबी के सिक्ख, छोले, द्रविड़ परिवार के अटवी, पिल्ला आदि शब्द विद्यमान हैं। इस प्रकार भाषा ने प्रान्त के सीमाबन्धनों को तोड़कर हमारी भावात्मक एकता का परिचय दिया है।

भाषा ने साम्प्रदायिकता की दीवारों को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा नहीं है और न उर्दू मुसलमानों की। ये दोनों भाषाएँ वास्तव में एक ही भाषा के दो रूप हैं। अन्तर लिपि का है अथवा इस बात का कि उर्दू में अरबी, फारसी के कुछ शब्द अधिक हैं और हिन्दी में संस्कृत के शब्द अपेक्षाकृत अधिक हैं। भारतवासी चाहे किसी भी सम्प्रदाय के हों जिस क्षेत्र में रहते हैं, उसी की भाषा में बोलते हैं। राजस्थान में रहने वाला व्यक्ति राजस्थानी बोलता है, और बिहार का रहने वाला बिहारी चाहे वह हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाई कोई भी हो। जब एक क्षेत्र के समस्त सम्प्रदायों के लोग एक ही भाषा में विचार विनिमय करते हैं, तब उनमें साम्प्रदायिक बन्धन स्वयं शिथिल हो जाते हैं।

भाषाओं का यह परस्पर का प्रभाव हमारी संस्कृति को भी प्रभावित करता है। भाषा द्वारा विचारों के आदान-प्रदान के साथ-साथ वेशभूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज में भी

पारस्परिक प्रभाव अनायास आ जाता है। इस प्रकार विविध क्षेत्रों से धर्म, दर्शन और परम्पराओं की धाराएँ मिलकर एक विराट धारा का रूप ले लेती हैं जिसे भारतीय संस्कृति कहते हैं। देश के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी राष्ट्रीय चेतना होती है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र को बल मिलता है। किसी भी क्षेत्र की भाषा को उपेक्षित कर देने का अर्थ है, उस क्षेत्र से सम्पर्क तोड़कर उसकी राष्ट्रीय भावना से अपने को वंचित कर लेना।

भाषाओं ने अपने साहित्य के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना को सुरक्षित रखा है। भारतीय संस्कृति और साहित्य के आदि स्रोत वेदों में राष्ट्रीय भावना को पर्याप्त बल दिया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' – भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। 'यतेमहि स्वराष्ट्रे'– 'हम राष्ट्र रक्षा के लिए प्रयत्नशील हों' जैसी उक्तियाँ वेदों में यत्र-तत्र मिल जाती हैं। साथ मिलकर चलने, प्रेम से बोलने और विचार करने की प्रेरणा वेदों में दी गई है। मनु ने भारत भूमि में जन्म लेना ही परम गौरव का कारण बताया है। वेदों और स्मृतियों में मानव को उसके जातकर्म नामकरण से लेकर दाहकर्म तक जो सोलह संस्कार दिये हैं उनकी विधियाँ समस्त भारत में लगभग एक जैसी हैं। अपनी सांस्कृतिक परम्परा के कारण भारत आदिकल से आज तक एक है।

संस्कृत के दो महान ग्रन्थ– रामायण और महाभारत ने भारत की सांस्कृतिक एकता को और भी अधिक गहरा बना दिया है। राम और कृष्ण समस्त भारत की आस्थाओं के केन्द्र हैं। भारत की प्रत्येक भाषा में राम और कृष्ण की कथा पर काव्य रचना की गई है। तमिल, तेलगू, मलयालम, असमिया, उड़िया, बंगला, कन्नड़, मराठी, पंजाबी कितनी ही भाषाओं में राम और कृष्ण पर साहित्य की रचना की गई है। सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह ने 'गोविन्द रामायण' हिन्दी में लिखी है। तुलसी का 'रामचरित मानस' अहिन्दी भाषी परिवारों में भी एक उच्चकोटि के साहित्यिक और धार्मिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है।

भक्ति साहित्य ने प्रान्त, सम्प्रदाय सभी की सीमाओं को तोड़कर समस्त भारत को एकरंग में रंग दिया। बंगाल के चण्डीदास और चैतन्य महाप्रभु, उत्तर भारत के कबीर, सूर, तुलसी, महाराष्ट्र के ज्ञानदेव, गुजरात के नरसी महता और राजस्थान की मीराबाई का काव्य समस्त भारतवासियों की जिह्वा पर विराजने लगा है। जायसी, कुतुवन, मंझन जैसे सूफी सन्तों ने सबको एक करने के लिए हिन्दी में काव्य रचना की। रहीम, रसखान, रज्जब भारतीय साहित्य और धर्म के उपासक थे। भक्ति की इस राष्ट्र व्यापी क्रांति ने समस्त भारत को एकसूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया।

साहित्यकार के मन में इस बात का आग्रह कभी नहीं रहा कि वह अपने ही क्षेत्र की भाषा में साहित्य रचना करे और न ही किसी काव्य प्रेमी ने अपने ही क्षेत्र की भाषा के साहित्य को आदर देने का आग्रह किया। कवि पद्माकर दक्षिण भारतीय होकर भी ब्रजभाषा के गायक रहे। ग्वालियर में जन्मे विहारी ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की और जयपुर के राजा जयसिंह के दरबार में बड़े आदरपूर्वक रहे। भूषण की हिन्दी कविता महाराष्ट्र के अधीश्वर शिवाजी की राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित रही। आज भी मुंशी अजमेरी, अहमद बिलग्रानी, नज़ीर अकबरावादी, इस्मत चुगतायी जैसे मुस्लिम साहित्यकार हिन्दी की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

प्रत्येक क्षेत्र तथा प्रत्येक जाति का साहित्य राष्ट्र प्रेम की भावना से लबालब भरा हुआ है। यह साहित्य समस्त देश की सम्पत्ति है। बंगला भाषा के 'जन गण मन' और वन्देमातरम् हमारे राष्ट्रगीत है। 'हिन्दी का झण्डा ऊँचा रहे हमारा' गीत देश के कोने-कोने में गाया जाता है। तमिल कवि 'सुब्रह्मण्यम् भारती' के राष्ट्रीय उद्गार समस्त देश के लिए गौरव की वस्तु है। इकबाल का 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गीत भारत के हर बच्चे की जिह्वा पर आज विराज रहा है। राष्ट्र के किसी कोने में जब कभी राष्ट्र विरोधी तत्व पनपते हैं सभी भाषाओं में उनकी खुलकर निन्दा होती है। हिंसा, रक्तपात और साम्प्रदायिक विष को देखकर साहित्यकार की आत्मा कराहने लगती है। राष्ट्र पर जब भी संकट मंडराता है उसकी रक्षा का संकल्प हर साहित्य में दोहराया जाता है।

–4/82, चौटाला रोड, संगरिया,
हनुमानगढ़-335063 (राज.)

देश में हिन्दी दशा व दिशा

❑ रामगोपाल राही

ऋगवेद का एक सूत्र है– सब एक साथ चलें, एक ही भाषा बोलें, और एक ही दिशा में सोचें। बात भाषा की, हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी है। एक अरब बीस करोड़ के देश में एक अरब से अधिक लोगों के कण्ठ की वाणी हिन्दी, देश के अधिसंख्य लोगों की आवाज, हृदय की वाणी हिन्दी। देश का आगाज, देश की धड़कन हिन्दी। ऐसे में हम सभी देशवासियों को राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्राण प्रण से समर्पित होना ही चाहिए। हिन्दी पढ़ें, हिन्दी बोलें, हिन्दी लिखें - हमारा यह व्यवहार ही राष्ट्र व राष्ट्र भाषा के प्रति सच्ची निष्ठा व्यक्त करता है।

भविष्यद्रष्टा साहित्यकार श्री भारतेन्दु जी ने ठीक ही कहा 'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति का मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।। निःसंदेह आज हिय का सूल बरकरार है और मलाल है इस बात का कि वस्तुतः आज राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अन्याय जैसी विसंगति नजर आती ही आती है। विडम्बना - अपनी सत्ता, अपना राज - अपना आगाज बावजूद इसके राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप, यहाँ तक शासन के ढंग प्रणाली में भी संवैधानिक व्यवस्था तदनुरूप उन्नत नहीं जितना होना चाहिए। छियासठ वर्ष गुजरने को है देश को आज़ाद हुए, इन वर्षों में हमने राष्ट्र भाषा हिन्दी की प्रगति के मार्ग में बाधाएँ ही देखी। इनमें अंग्रेजी सबसे बड़ी बाधा आज भी है और मनमाने ढंग से बढ़ती जा रही है। अपना देश

विदेशी भाषा, अपना कंठ विदेशी वाणी। कहाँ गया स्वाभिमान, कहाँ गया आत्म सम्मान, कहाँ गया राष्ट्र व राष्ट्रभाषा का सम्मान। राष्ट्रभाषा राष्ट्र का गौरव होती है, भ्रमित निष्ठा से राष्ट्र का गौरव आहत है। शर्म व आत्मग्लानि की बात कि आज भी कुछ लोग अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ रहे। स्वतंत्र भारत में यह मानसिक गुलामी आखिर क्यों? अंग्रेजी के चलते रहते देश की गरिमा को आघात, देश की अस्मिता को खतरा है। अपनी नैसर्गिक समृद्ध राष्ट्रभाषा हिन्दी को छोड़, विदेशी भाषा के मोहजाल में फँसे लोगों को सबक लेना चाहिए, उन विदेशी राष्ट्राध्यक्षों शासकों से जो भारत में आते हैं सभी अपने राष्ट्र की भाषा में ही हमसे बात करते हैं। हम उनके सामने अपनी राष्ट्रभाषा का अभाव दिखा उनसे एक विदेशी भाषा में बात करते हैं। माना जा सकता है हमारे लोगों का यह व्यवहार असंलग्नता व अलगाव का नहीं मगर राष्ट्र व राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा की कमी तो दर्शा ही देता है।

स्वतंत्र भारत का अपना संविधान बना। संविधान की आठवीं सूची में बताया गया भारत की राष्ट्रभाषा (राजभाषा) हिन्दी होगी। 14 सितम्बर 1949 को यह पारित हुआ, इस धारा में उल्लेख था कि पन्द्रह वर्ष पश्चात देश में हिन्दी-अंग्रेजी का स्थान ग्रहण करेगी अर्थात अंग्रेजी प्रचलन इस रूप में नहीं रहेगा। यह अपने आप में स्पष्ट था। विडम्बना यही होना था पर नहीं हुआ और हुआ 1963 में राजभाषा अधिनियम में संशोधन-त्रिभाषा सिद्धान्त। वस्तुतः यह त्रिभाषा सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं, गले उतरने वाली बात भी नहीं थी। लगा, यह हिन्दी के लिए गल घोटू जैसा था और था भी मुख्य मंत्रियों की विचारधाराओं पर। समझा जा सकता है तत्कालीन मुख्यमंत्रियों ने यह त्रिभाषा सिद्धान्त क्यों स्वीकारा होगा?

हम जरा सोचें इससे भी पूर्व (स्वतंत्रता मिलने तक) स्वतंत्रता संग्राम अथवा आंदोलन की भाषा हिन्दी ही रही, जिसने देश को राष्ट्र एकता के सूत्र में बाँध रखने का काम किया। बाद के वर्षों में नौकरशाही के रुतबों के चलते तथा तत्कालीन राजनैतिक बाध्यताओं के चलते हिन्दी को अपने ही घर में काफी आघात सा लगा। आज की स्थिति भी अच्छी नहीं, कारण अंग्रेजी दासता की मानसिकता सिर उठा रही है, उठाती आई है।

यह सत्य है भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, इसी तथ्य-सत्य के साथ सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए देश के कर्णधारों ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अंगीकृत किया। स्वतंत्र भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है, और अनुच्छेद 351 में इसके समुचित विकास, उन्नति का उत्तरदायित्व भी केन्द्र को सौंपा गया। यह भी सही है भारत सरकार ने इन संदर्भों में राष्ट्रभाषा को समृद्ध बनाने व उत्तरदायित्व निभाने की दिशा में समय-समय पर कदम भी उठाए, प्रयास भी किया। तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों के चयन और निर्माण के लिए वर्ष 1961 में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की स्थापना की। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया गया। 1975 में राजभाषा विभाग बना। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति गठित की गई, जिसके निर्णय मंत्रि परिषद (मंत्रीमण्डल) के निर्णयों के समान होते हैं। प्रत्येक मंत्रालय और विभाग में सम्बन्धित मंत्री की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समितियों की स्थापना की गई। जो मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में सलाह देती है। इतना ही नहीं राजभाषा अधिनियम 1963 नियम 4 अधीन गठित तीस संसद सदस्यों की एक संसदीय राजभाषा समिति भी गठित हुई जो निरन्तर भारत सरकार के कार्यालयों का निरीक्षण कर राष्ट्रपति को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करती है। हुआ यह भी इस समिति के आठ प्रतिवेदन प्रस्तुत हो चुके, जिनकी सिफारिशें सरकार को भेजी गई। बावजूद इन सभी के नौ दिन चले अढ़ाई कोस जैसा महसूस होता देखा जा सकता है। ढाक के तीन पात वाली स्थिति में हिन्दी की स्थिति किसी से छुपी नहीं। हिन्दी का उत्कर्ष, उत्थान, विकास, उन्नति के सदंर्भों में हालात उत्साहजनक क्यों नहीं? सोचना होगा इसमें कहीं न कहीं कोई तो बात होगी, रही होगी, कारण देखे जा सकते हैं, खोजे जा सकते हैं। हिन्दी राष्ट्र की भाषा से लगाव, अपनत्व सर्वोपरि था, पर हिन्दी का विकास संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार नजर नहीं आता?

क्या यही समझा जाए, अथवा माना जाए राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्कर्ष, उत्थान में आदेश कागजों में ही सीमित थे। शासन के ढंग प्रणाली में तथा कई आवश्यक विभागों में लगता यों है कि हिन्दी लिखने बोलने वालों को घटिया दर्जे का माना जाता है, रूढ़िवादी, प्रगति विरोधी और पिछड़ा माना जाता है। आज़ादी उपरान्त तिरेसठ वर्षों से अधिक वर्षों में हम हिन्दी को व्यवहार व प्रयोग की भाषा नहीं बना सके। क्या यह स्थिति हिन्दी भाषी राष्ट्र व राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए अच्छी समझी जाए। शिक्षा के क्षेत्र में उल्टी गंगा बह रही है, पहली कक्षा से ही शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनता जा रहा है। हम सभी हमारे अपने दिल से पूछें यह हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति है या अंग्रेजी की? वस्तुतः स्नातकोत्तर तक माध्यम हिन्दी होना चाहिए था, जब कि प्रथम कक्षा से अंग्रेजी होता देखा जा सकता है।

राष्ट्रभाषा की कीमत पर विदेशी भाषा का ज्ञान क्या देश में हित है? हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, इसके विपरीत विदेशी भाषा अंग्रेजी का ज्ञान दे, क्या हम बच्चों के नैसर्गिक विकास को अवरुद्ध करते नजर नहीं आते? वस्तुतः हम इससे बच्चों के व्यक्तित्व को बौना बना रहे हैं। कई अनुभव व अनुभवी बताते हैं बच्चा विदेशी भाषा को समझता नहीं, रटता है, कई शिक्षाशास्त्रियों का ऐसा मत है।

क्या विदेशी भाषा में प्राप्त प्रतिभा, दक्षता, योग्यता राष्ट्र के प्रति मूल नैसर्गिक भावना व निष्ठा में अपने में अन्तर्विरोध नहीं दर्शाती? गाँधी जी ने कहा था 'भाषा अपनी वस्तु स्वदेशी' विडम्बना आज हम गाँधी जीवनदर्शन व उनके सिद्धान्तों को भी भुला रहे हैं। राष्ट्र की गरिमा राष्ट्र की भाषा है, राष्ट्रीय गौरव व स्वाभिमान भी राष्ट्र की भाषा में ही निहित है, इस बात को व तथ्य सत्य को तथा राष्ट्र भाषा के महत्व को, देश में आने वाले आते रहे विदेशी शासकों व

राष्ट्राध्यक्षों से समझें और सीख लें। सभी यहाँ आकर अपने खुद के राष्ट्र की भाषा में ही बोलते हैं। एक हम जो खिसिया विदेशी भाषा में तथा रीति-नीति में उनका स्वागत करते, उनसे बोलते हैं। क्या सोचते होंगे वह लोग हमारी राष्ट्रभाषा के संदर्भ में। क्या यह स्वतंत्र राष्ट्र के स्वाभिमानी लोगों के लिए आत्मग्लानि शर्मिन्दगी जनक स्थिति नहीं?

आज देश में, प्रदेश में अंग्रेजी के गोरखधंधे से शिक्षा ने उद्योग का रूप ले लिया। अंग्रेजी के मोहजाल में अभिभावक फँसे ही जा रहे हैं। गली-गली में अंग्रेजी स्कूल अंग्रेजी बबूलों की तरह फैल रहे हैं। अभिभावक अपनी गाढ़ी कमाई अंग्रेजी के मोहजाल में फँस, लगाते हैं और अंग्रेजी में बच्चे का भविष्य देखने लगे हैं। स्थिति यह है, हिन्दी अपने ही घर में मात खा रही है। अंग्रेजी का प्रसार वस्तुतः देश में हिन्दी की कत्ल करता नजर आता है। देश में हिन्दी के विमुख इस स्थिति को देश के लोग नहीं समझेंगे तो कौन समझेगा?

बात करें हिन्दी संदर्भ में विकासात्मक कार्यों की। हिन्दी की उन्नति व सुधार के लिए किए गए प्रयासों में सभी शिक्षा आयोगों ने प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए जोर दिया। विडम्बना परिणिति अल्प संख्यक समुदाय की भाषा की आड़ में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल बढ़ते चले गए। हिन्दी उत्थान धरा रह गया और अंग्रेजी का उत्थान होने लगा। ज्ञात रहे 1948 में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने स्पष्ट कहा....., 'अंग्रेजी शिक्षा ने भारत के अतीत की अवहेलना की है और कहीं-कहीं तो हमें हमारी जड़ों से ही काट दिया।' उन्होंने यह भी कहा विगत की तरह अंग्रेजी देश की राजभाषा नहीं बन सकती तथा बनी नहीं रह सकती। अंग्रेजी का प्रयोग तो लोगों को दो भागों में विभक्त करता है, मुट्ठीभर वो लोग जो शासन करते हैं और बहुत सारे वो लोग जिन पर शासन किया जाता है, यह स्थिति लोकतंत्र के विरुद्ध है। बात करें आगे की सन् 1953 में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकारा। बाद में डॉ. कोठारी की अध्यक्षता में गठित आयोग ने कहा, क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा शिक्षा का माध्यम हो, हिन्दी सम्पर्क भाषा हो और अंग्रेजी लाइब्रेरी भाषा के रूप में पढ़ी जाए। इन्होंने स्पष्ट कहा– अंग्रेजी का स्थान राष्ट्र भाषा का नहीं हो सकता। इन सबके बावजूद हिन्दी संदर्भों में देखी जा सकती है शिथिलता ही शिथिलता। कहा जा सकता है– इसी तरह की उदासीनता, शिथिलता के चलते ज्ञान आयोग ने राष्ट्र भाषा हिन्दी की गरिमा, वर्चस्व को भुला सभी हिन्दी हितों की अनदेखी कर बहुत तगड़ा झटका दिया। आयोग के अध्यक्ष सेमपित्रोदा ने अंग्रेजी को पहली कक्षा से अनिवार्य करने की सिफारिश कर दी। इससे अंग्रेजी के वर्चस्व को हवा मिली। वस्तुतः इनके द्वारा राजभाषा के लिए कुछ न बोलना, हिन्दी भाषी व राष्ट्र भाषा हिन्दी के सीने में लगा - इन्होंने वैचारिक खंजर भोंक दिया हो। दुःख इस बात का भी है इनकी बेरुखी, बेरहमी, बेवफा पर शिक्षाशास्त्री, प्रबुद्ध लोगों ने कुछ नहीं बोला, परिणाम आज अंग्रेजी से देश में असमानता पनपने लगी है, हिन्दी - अंग्रेजी में वर्ग भेद हो गया। स्वतंत्र भारत में यह स्थिति उपयुक्त तो नहीं। पर आज महात्मा गाँधी जैसा व्यक्तित्व कहाँ– डॉ. राधाकृष्ण जैसा विद्वान कहाँ जो देश हितों में हिन्दी की बात निर्भीकता से कह सके।

वस्तुस्थिति में अंग्रेजी के दुष्परिणामों की सजा देश व देश के होनहार बच्चों को मिल रही है। बताया जाता है अंग्रेजी के कारण विद्यालयों में पढ़ाई बीच में छोड़ के जाने वाले छात्रों की संख्या नब्बे प्रतिशत तक होती है तथा यह भी सर्वविदित है छात्रों के फेल होने का प्रमुख कारण अंग्रेजी ही होती है। अंग्रेजी के खातिर छात्र पढ़ाई से जी चुराते हैं। इससे छात्रों का हित तो प्रभावित होता ही है, वही कम परिणाम से अध्यापक भी प्रभावित होते हैं। इतना ही नहीं बच्चे हीनता के शिकार होते हैं। समझा जा सकता है एक विदेशी भाषा सम्पूर्ण भारत वर्ष को सम्पूर्ण देश हितों को झकझोरती नजर आ रही है, यह विडम्बना और आत्मग्लानि का ही विषय है कि स्वतंत्र भारत के लोग आज भी अंग्रेजों की अंग्रेजी के पिछलग्गू हैं।

बात बहुत लम्बी है स्वयं सोचें, देखें, अनुभव करें, अपने दिल से अपने आपसे पूछें, हिन्दी उत्थान-उत्कर्ष-निष्कर्ष रूप में स्वतंत्र भारत में आज हिन्दी की दशा व दिशा क्या समझी जाए? हिन्दी उत्थान कहाँ अटक गया, हिन्दी उत्कर्ष कहाँ भटक गया, हिन्दी की प्रगति क्यों, कहाँ चटकी-चटकी है। प्रश्न एक अरब-बीस करोड़ भारतीयों की हृदय व कण्ठ की वाणी राष्ट्रभाषा हिन्दी का है, हमारी अपनी हिन्दी का है।

अन्तिम बात वस्तुतः सभी के द्वारा हिन्दी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। बाहर से आने वाले राष्ट्राध्यक्षों से भी हिन्दी में ही बात की जानी चाहिए। चाहे दुभाषियों की रीति नीति अपनाई जाए। संसद में हिन्दी का प्रयोग व्यापक रूप से हो। हिन्दी को रोजगार से भी जोड़ा जाए। उच्च शिक्षा संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थानों, व्यावसायिक शिक्षा सभी में माध्यम हिन्दी हो। न्यायालयों में हिन्दी प्रमुख रूप से अपनाई जावे। छोटी अदालतों में तो आज भी फैसलों में अन्य भाषाओं के शब्द देखे जाते हैं जो आम लोगों, फरियादी, अपराधियों की समझ से परे होते हैं, उन्हें जैसा समझाया जाए, वही समझना होता है। वस्तुतः न्यायालय की कार्यप्रणाली, बहस निर्णय सभी पूरी तरह हिन्दी में हो। अस्पतालों में दरवाजों पर, दीवारों पर तो हिन्दी होती है, मगर चिकित्सक महोदय की लिखी पर्ची विदेशी भाषा में यह विरोधाभास क्यों? वस्तुतः शासन के ढंग प्रणाली में हिन्दी व्यापक हो।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है इसका महत्व कम आँकना इसकी छवि धूमिल करना है। वस्तुतः हिन्दी से हम सबको अपनत्व होना चाहिए। हम अपने आप से पूछें राष्ट्रभाषा का महत्व कम आँकना, इसे समृद्ध न करना, क्या हमें हमारी अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठावान होना दर्शाता है? प्रत्युत्तर में आप कुछ भी कहें, पर वास्तविकता यह है, प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र व राष्ट्रभाषा के प्रति समर्पित होना चाहिए।

–मोहल्ला गणेशपुरा वार्ड 4/5,
लाखेरी-323615, बून्दी (राज.)

हिन्दी शिक्षक के मायने

❑ अमर सिंह पाण्डेय

कुछ समय पूर्व एक प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक समाचार पत्र में एक आलेख छपा था– 'शिक्षक होने के मायने'। लेखक (प्रस्तुत) को इस लेख से कोई प्रेरणा इसलिए नहीं मिली क्योंकि इस लेख से महीनों पूर्व उसका मस्तिष्क 'हिंदी शिक्षक होने के मायने' आलेख की प्रसव-पीड़ा भोग रहा था और समय-समय पर कुछ बिन्दु किरण भी लिए थे। यों तो छात्रों को कई बार हिंदी मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा, ऐच्छिक भाषा आदि कई रुपों में हिंदी भाषा (और साहित्य) का अध्ययन करना होता है। लेखक का यह मानना है कि किसी भी भाषा का अनिवार्य या ऐच्छिक रूप में पढ़ना विशेष अर्थ नहीं रखता क्योंकि जहाँ भी गद्य-पद्य का पठन-पाठन होता है वहाँ साहित्य तो उपस्थित हो ही जाता है, यह बात अलग है कि भावों और विधाओं– छंद, अलंकार, शब्द-शक्ति आदि का सामना तो शिक्षकों और छात्रों को करना ही पड़ता है, क्योंकि आनंदन के लिए दोनों पक्षों का हृदय आग्रही होता है क्योंकि 'अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है। है वह मुर्दा देश जहाँ साहित्य नहीं है।' की भावना हृदय को झंकृत करती ही है।

आलेख का शीर्षक 'हिंदी, शिक्षक के मायने' इस लिए भी जीवन में 'रोटी-पानी की' जुगत तो सभी का विषय है किन्तु उससे हटकर भी अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना की प्रवृत्ति भी तो 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वं गमः शाश्वती समा। यत्क्रोंच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्॥' के शाप से एक ओर निषाद और दूसरी ओर महर्षि वाल्मीकि भी आहत होने को विवश थे और साहित्य के इस आघात से छात्र और शिक्षक भी अपनी-अपनी तरह से आहत होते हैं अतः दोनों के कल्याण के लिए कक्षा में रसास्वादन ही मानवता के लिए श्रेयस्कर है।

हिंदी शिक्षक होने के मायने यह भी कि शिक्षक को यह बोध हो कि 'अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन-द्वयम्। परोपकारार्थं पुण्याय पापाय परपीड़नम्' के अनुसार आज के बहु-ध्रुवी समाज की संतुष्टि के लिए विभिन्न समुदायों के धर्मग्रंथों का और अधिक नहीं तो पल्लवग्राही पाण्डित्य तो प्राप्त कर ही लेना चाहिए। क्योंकि हमारे यहाँ 'गद्यं कवीनां निकषा वदंति' तो है ही, पद्य भी भावों के उन्नयन और 'सब्लिमेशन' के लिए अपेक्षित है, खास तौर से विज्ञान के शापों और वरदानों के बीच संतुलन की शक्ति के लिए भी। कहा गया है– दो और दो चार होना एक जीवन की समस्या है। कभी-कभी इस कथन के व्याख्यायन के लिए तीन या शून्य का भी सामना होने के साथ स्लेट हाथ से छूटकर गिर भी सकती है, यह बात विंस्टन चर्चिल कह गए हैं। हिंदी शिक्षक को बहुत पढ़ना होता है स्वाध्यायान्मा प्रमद।

हिंदी शिक्षक के सामने कई बार कुछ समस्याएँ भी आ जाती हैं, छात्र ने कक्षा आरम्भ में ही पूछा– 'साहब यह गवरजा' क्या है? 'कहाँ से लाए हो इस शब्द को'। 'जी, ये जोगी जो शिवजी का व्याहवला गाते हैं तब का शब्द है।' 'देखो, यह जोगियों के व्याहवले का गीतांश है। संगीत में शब्दों की तोड़-मोड़ चलती है। यहाँ पाँच मात्रा का शब्द चाहिए था अतः गिरिजा (4 मात्राएँ ।।ऽ) की बजाय 'गवरजा' (।।।ऽ पाँच मात्राएँ) कर दिया। छात्र का, कक्षा का समाधान हो गया। दसवीं कक्षा में मैं वर्णमाला में 'क ख ग घ ङ' बता रहा था तब एक छात्र जो, कालांतर में सरपंच हो गया, पूछ बैठा, साहब, ये ड ड् डा - सा क्या है? वह दुर्भाग्यवश दसवीं तक? क वर्ग के पंचम वर्ण 'ङ' के बारे में पूछ रहा था। बताया–

आज विज्ञान के क्षेत्र में नई-नई खोजें हो रही हैं। भू-विज्ञानियों की खोज है कि इस ब्रह्मांड में न जाने कितने पृथ्वी खंड हैं, कई बार अन्य उपग्रहों के निवासियों से हमारे देश और ग्रहों के सम्पर्क समाचार पत्रों में छपते रहते हैं। आश्चर्य की बात है कि विक्रम की सोलहवीं सदी में होने वाले गोस्वामी तुलसीदास ने इस तथ्य का साक्षात्कार रामजन्म के माध्यम से अपने रामरचित मानस में प्रकारांतर से कर लिया था। जब कथा के सम्पर्क में एक बार राम काक भुशुंडि (कौए) से बाल क्रीड़ा कर रहे होते और बालक राम के मुख में मुस्कुराहट के साथ उनके उदर में प्रवेश कर जाते हैं और वहाँ– *'उदर माँझ सुनु अंडज राया। देखेउ बहु ब्रह्माण्ड निकाया॥/ अति विचित्र तहँ लोक अनेका। रचना अधिक एक ते एका॥/कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा। कोटिन्ह उडुगन रवि रजनीसा॥/अगनित लोकपाल जमकाला। अगनित भूधुर भूमि विसाला॥/सागर सरि सर विपिन अपारा। नाना भाँति सृष्टि विस्तारा॥*

जो नहि देखा नहि सुना, जो मनहू न समाय।
सो सब अद्भुत देखेउ, वरनि कवनि विधि जाय॥

× × × × ×

(उत्तरकाण्ड 80 क)

देव दनुजगन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहिं भाँती॥/महि सरि सागर सर गिरिनाना। सब प्रपंच तहँ आनहिं आना॥/अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा॥

या तो तुलसीदास का अंतर्ज्ञान था या उनकी तीव्र अनुभूतियाँ, कि उन्होंने यह विचित्र सत्याभास देखा-दिखाया जिसकी अनुभूति के लिए विज्ञान की दुनिया में विज्ञानी स्विजरलैंड और यूरोप के क्षेत्र में अब लार्जहेडन स्कीम चला रहे हैं।

लेखक का मानना है कि हिंदी का शिक्षक अपने अध्ययन-अंतर्ज्ञान के द्वारा इस प्रकार का तेजस् प्राप्त कर लेता है कि वह अवसर पर, पाठ के अंतर्गत इस प्रकार का दृश्य उपस्थित कर देता है कि तुलसीदास जी के शब्दों में, पाठकों-श्रोताओं के लिए उन्हीं के शब्दों में 'मुनिमति हाड़ तीर अबला सी' हो जाती है। और यदि थोड़ा अधिक प्रयत्न करें तो भारतीय काल व्यवस्था के संदर्भ में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के वर्तमान मनुष्यों के चरित्र-व्यवहार पर भी सटीक टिप्पणियाँ मिल जाएँगी और सब समस्याओं का समाधान भी मिलेगा।

संक्षिप्त में कहें तो हिंदी शिक्षक एक चलता-फिरता सामान्य ज्ञान और विज्ञान कोश सिद्ध होगा, छात्रों का प्रिय आदरणीय 'गुरुजी' और जनता का दुलारा भी, क्योंकि विद्यार्थी ही तो विद्यालय के राजदूत होते हैं जो विद्यालय और शिक्षकों की अंतर्जगत् और बहिर्जगत की प्रवृत्तियों, अच्छाइयों, बुराइयों, आलोक और अंधकार को संसार तक पहुँचाते हैं, समाज तक भी।

शिक्षक वस्तुतः चलता-फिरता ज्ञानकोश भी होता है, हो सकता है। विषयों के बीच समन्वय और तालमेल भी बिठाता है, सम्बन्ध भी। हिंदी अध्यापक अन्य विषयों में सामंजस्य भी बिठाता है। आवश्यकता अपने रूप को सँभालने-सँवारने की है। इस विश्व ब्रह्माण्ड के पीछे निहित 'विराट्' की पृष्ठभूमि भी तैयार कर सकता है कि कालांतर में उसके शिष्य विश्वविज्ञानी की भूमिका निभा सकते हैं।

–से.नि. प्राध्यापक
भुसावर (भरतपुर)

समय का सदुपयोग

❑ हरीश कुमार वर्मा

हमें अपने जीवन से प्रेम है, तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि हमारा जीवन इसी से बना है। प्रायः यह प्रश्न हर एक व्यक्ति के मस्तिष्क में चक्कर काटता रहता है, कि अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य किये जाएँ जिससे पीछे हमारा नाम हो।

स्वाभाविक जिज्ञासा होते हुए भी इस प्रश्न का उत्तर सभी जानते हुए भी भूले हुए हैं। इस अवस्था तक पहुँचने का मूल मंत्र है, **समय का सदुपयोग**। सुप्रसिद्ध कवि शेक्सपियर का कथन है, कि मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझको नष्ट कर रहा है।' जीवन की अनेक परिभाषाएँ दी जाती हैं, लेकिन सृजन के चन्द क्षणों को जीवन की संज्ञा देना तत्व संगत विचार है। दिन आते हैं और चले जाते हैं, जो पुरुष अपनी मादकता में मधुर पराग उन्मुक्त हो बिखेर रहा था, वह आज मुरझा गया, और कल अपने अस्तित्व की कहानी समाप्त कर बैठेगा, लेकिन हमारी धारणा यह है, कि प्रकृति का यह संदेश किसने सुना?

लाख समझाते हार गये, लेकिन एक भी बात प्रभाव नहीं डाल सकी। सब चिकने घड़े बने बैठे हैं। प्रातः उठेंगे, इधर-उधर घर की बातें करेंगे, फिर निमित्त मात्र अपना कार्य करेंगे। अधिकांश व्यक्ति जब देखो टेलीविजन कार्यक्रम देखते हुए अथवा टेपरिकॉर्डर से गाने सुनते हुए मिलेंगे, या अपने मित्रजनों का दम्भ, मिथ्या, कृत्रिमता पूर्ण डींगें मारते हुए पायेंगे, विद्यार्थीगण भी इस क्षेत्र में किसी से पीछे नहीं है। अपनी पढ़ाई, लिखाई को परीक्षाकाल के एक माह पूर्व तक अवकाश प्रदान कर आलमारी में रख देंगे।

यहीं तक नहीं प्रायः ऐसा भी देखा जाता है, कि वयोवृद्ध संरक्षक यदि कुछ प्रताड़ना नहीं दे तो अपने घर पर केवल खाना और विश्राम मात्र का साधन रह जाता है। क्या यही उनके जीवन का लक्ष्य है। इस तरह से भविष्य में उनको क्या मिलेगा? समाज से ठोकरे खाना, दूसरों के मोहताज बनना और निकम्मे होकर यही कहेंगे, कि जब तक गरीब और अमीर की आर्थिक समानता नहीं होगी, तब तक हम एक साथ ही भूमि पर उत्पन्न मानव-मानव नहीं होंगे। यही उनकी अकर्मण्य इच्छाओं और उद्योगहीन प्रेरणाओं का ही तो परिणाम है। यह समानता तब ही पूरी होगी, जब कि हम खाली समय का सदुपयोग रूपी मंत्र का उच्चारण करेंगे।

'दिन मित्रों के वेश में हमारे सामने आते हैं, और प्रकृति की अमूल्य भेंट लाते हैं'। यदि हम उनका सदुपयोग नहीं करें तो वे चुपचाप लौट जाएँगे। 'ईश्वर एक बार एक क्षण देता है, और दूसरा क्षण देने से पूर्व उस क्षण को वापिस ले लेता है। इसलिए बुल्वरलिटन ने ठीक कहा है Time is Money अतः हमें प्रत्येक क्षण का ध्यान रखते हुए खाली समय का सदुपयोग करना चाहिए।

जिसने खाली समय का सदुपयोग नहीं किया, संसार में वही सबसे पिछड़ गया है। भारत गरीबों का अमीर देश है, यदि प्रत्येक व्यक्ति समय का सदुपयोग करना सीख ले तो इसमें संदेह नहीं कि शीघ्र ही व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में समर्थ होगा। श्रम-नाशवान् है, इसका संचय कार्य करने पर ही होता है। जिस दिन हमने कार्य नहीं किया उस दिन की श्रम करने की शक्ति दूसरे दिन नहीं रहेगी। अतः प्रतिदिन कार्य करते रहना जीवन में विकास प्रदान करता है। अब तक की सभ्यता भूतकाल की कहानी है। इसके उपन्यास की रचना भविष्य में होगी।

वह घड़ी कितनी सुहावनी थी जब भारत को स्वतंत्र करने की घोषणा की गई थी। भगवान बुद्ध को वट वृक्ष के नीचे ही ज्ञान मिला था। हुमायूं की जीवन रक्षा भिश्ती ने अपनी मशक फैंक कर की थी। प्रसिद्ध विद्वान चेस्टर-फिल्ड का भी यही कथन है, कि मैं तुम्हें यही शिक्षा दूँगा कि तुम केवल मिनटों का ध्यान रखो, घंटे स्वयं अपना ध्यान रखेंगे।

यह तो साधारण बात है, कि परीक्षा में दिये जाने वाले तीन घंटे हमारे सन्मुख कितना महत्व रखते हैं? समय समाप्त होने पर कॉपियाँ छीन ली जाती है। हम कहते रह जाते हैं, कि यदि आधा घंटा और मिल जाता तो हमारे प्रश्नोत्तर पूरे हो जाते। उस समय की उपयोगिता हमें प्रत्यक्ष जान पड़ती है।

क्या कभी यही विचार खेल के मैदान में, सहृदयों की वार्ता में, भ्रमण में, दैनिक जीवन के कार्यक्रमों में ताने मारता है?

किसी विद्वजन ने ठीक ही कहा है, कि 'ऐसा कौनसा मनुष्य है जिसने भूतकाल को खरीद लिया है, मैं उसकी आराधना करूँगा, वह मानव नहीं एक साक्षात् देवता है। इस कथन से हमारा तात्पर्य यह है, कि जब बीते हुए पल को हम अरबों-खरबों रुपये देकर भी वापिस प्राप्त नहीं कर सकते हैं, तो समय को व्यर्थ में क्यों नष्ट किया जाये और हर पल को सृजनात्मक कार्य में लगाकर जीवन को उन्नत और सुखी क्यों नहीं बनाया जाए। अन्त में–

मुरझाया हुआ सुमन कभी खिल नहीं सकता।
बीता हुआ यौवन कभी भी आ नहीं सकता॥
कलंकित चरित्र कभी पुनः उज्ज्वल हो नहीं सकता।
और खोया हुआ समय कभी भी आ नहीं सकता॥

–से.नि. प्राचार्य
15, न्यूत्रिमूर्ति कॉम्पलेक्स, मनवाखेड़ा रोड,
हि.म.से. 4, उदयपुर-313002

पुतला

खेत के मध्य आदमी का पुतला खड़ा देख एक पौधे ने दूसरे पौधे से पूछा– 'यह पुतला क्यों लगाया गया है?' *दूसरे ने उत्तर दिया–* 'हमारी रक्षा के लिए।'

पहला बोला– 'क्या धरती पर आदमियों की कमी हो गई है?'

दूसरे ने कहा– 'नहीं, आदमी को अपने विनाश का आभास हो गया है, इसलिए उसने अभी से यह कार्य पुतले को सौंप दिया है।'

–महेन्द्र कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., भवानीखेड़ा, अजमेर (राज.)

बापू की सीख-15

सच्चा न्याय

❑ मो. क. गाँधी

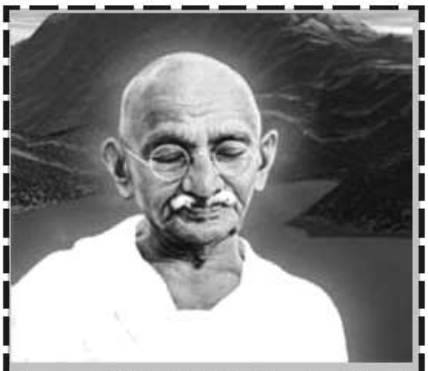

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —वरिष्ठ सम्पादक

साक्रेटीज (सुकरात) एथेंस (यूनान) का एक बुद्धिमान पुरुष हो गया है। उसके नए, पर नीतिवर्धक विचार राजशक्तिधारियों को न रुचे। इससे उसे मौत की सजा मिली। उस जमाने में उस देश में विषपान कराके मार देने की सजा भी दी जाती थी। साक्रेटीज को मीराबाई की तरह का प्याला पीना था। उस पर मुकदमा चलाया गया। उस वक्त साक्रेटीज ने जो अंतिम वचन कहे, उनके सार पर विचार करना है। वह हम सबके लिए शिक्षा लेने लायक है। साक्रेटीज को हम सुकरात कहते हैं। अरब भी इसी नाम से पुकारते हैं।

सुकरात ने कहा, 'मेरा दृढ़ विश्वास है कि भले आदमी का इस लोक या परलोक में अहित होता ही नहीं। भले आदमियों और उनके साथियों का ईश्वर कभी त्याग नहीं करता। फिर मैं तो यह भी मानता हूँ कि मेरी या किसी की भी मौत अचानक नहीं आती। मृत्युदंड मेरे लिए सजा नहीं है। मेरे मरने और उपाधि से मुक्त होने का समय आ गया है। इसी से आपने मुझे जहर का प्याला दिया है। इसी में मेरी भलाई होगी और इससे मुझ पर अभियोग लगाने वालों या मुझे सजा देने वालों के प्रति मेरे मन में क्रोध नहीं है। उन्होंने भले ही मेरा भला न चाहा हो पर वे मेरा अहित न कर सके।

'महाजन-मंडल से मेरी एक विनती है : मेरे बेटे अगर भलाई का रास्ता छोड़कर कुमार्ग में जाएँ और धन के लोभी हो जाएँ तो जो सजा आप मुझे दे रहे हैं वही उन्हें भी दें। वे दंभी हो जाएँ, जैसे न हों वैसे दिखाने की कोशिश करें, तो भी उनको दंड दें। आप ऐसा करेंगे तो मैं और मेरे बेटे मानेंगे कि आपने शुद्ध न्याय किया।'

अपनी संतान के विषय में सुकरात की यह माँग अद्भुत है। जो महाजन-मंडल न्याय करने को बैठा था, वह अहिंसा-धर्म को तो जानता ही न था। इससे सुकरात ने अपनी संतान के बारे में उपर्युक्त प्रार्थना की, अपनी संतान को चेताया और उससे उसने क्या आशा रखी थी, यह बताया। महाजनों को मीठी फटकार बताई, क्योंकि उन्होंने सुकरात को उसकी भलमनसी के लिए सजा दी थी। सुकरात ने अपने बेटों को अपने रास्ते पर चलने की सलाह देकर यह जताया कि जो रास्ता उसने एथेंस के नागरिकों को बताया वह उसके लड़कों के लिए भी है। और वह यहाँ तक कि अगर वे उस रास्ते पर न चलें तो वे दंड के योग्य समझे जाएँ।

'धर्म-नीति' से

लघु कथा

पहचान

सूरज अच्छा समाज सेवी। नित्यप्रति ऐसे ही कार्यों में संलग्न रहता है। एतदर्थ यह प्रक्रिया अब उसकी प्रवृत्ति बन गई है। इससे मिलने वाला आनन्द इसकी उपासना एवं सम्पदा है। इस प्रकार परमार्थ को अपना स्वार्थ समझने के कारण लोग आदर की दृष्टि से देखते हैं। बचपन से ही स्वाध्याय का शौक होने के कारण ख्याति प्राप्त लेखकों की पुस्तकें प्रायः पढ़ता रहता है। समय के सदुपयोग ने कुशल वक्ता बना दिया है। श्रोतागण तालियों से उत्साह बढ़ाते हुए मुक्तकंठ से भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। वक्त के बहाव में लोग अनायास बहते जा रहे हैं लेकिन वह विचारों की दृढ़तावश अपने धरातल पर खड़ा है। जिस कार्य के लिए कदम उठाता है, जब तक पूरा नहीं होता तब दम दम नहीं लेता है। इस प्रकार आत्मविश्वास उनके कार्यों की क्रियान्विति का सबल सूत्र, सादगी सहचर, आदर्श आभूषण तथा वाणी की मधुरता अपनत्व का परिचायक है। धर्मपत्नी अध्यापन कर्म से जुड़ी सुशील व कर्तव्यपरायण है। वह उनकी जीवन शैली की अभ्यस्त हो गई है इसलिए घर का सुखद वातावरण आगन्तुकों के अन्तस में अनायास प्रेरणा के पवचिह्न अंकित कर देता है।

जिस राह से वह अपने कार्यालय जाता है, उसी सड़क पर स्थित विद्यालय में उसकी धर्मपत्नी रजनी कार्यरत है। कभी-कभार इसकी सहेली सन्ध्या बहनजी उन्हें जाते देखती है तो व्यंग्य में कहती है– 'रजनी जल्दी आना, जल्दी आना।' उसकी जिज्ञासापूर्ण आतुरता को मद्दे नजर रखते हुए दौड़कर आती है, तब कहती है– 'देखो ! देखो !! ये तुम्हारे साहब जा रहे हैं।' इस प्रकार की मजाक महीने में दो-तीन बार कर लेती है। घर आने पर अपने पति से कहती है कि– 'जब आप हमारे विद्यालय की सड़क से निकलते हैं तो हमारी सन्ध्या बहनजी आपकी बढ़ी दाढ़ी, पैबंद लगी पेन्ट व टूटी चप्पल को देखकर हँसती है। मैंने इस संदर्भ में कई बार ध्यानाकृष्ट किया लेकिन आपके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती है।' तिस पर मुझे शर्मिन्दा होना पड़ता है।

समय जाते देर नहीं लगती है। एक दिन उन्हीं बहनजी का स्थानान्तरण अन्यत्र हो गया। पारिवारिक परिस्थितिवश शाला परिवार एवं शहर के प्रतिष्ठित लोगों ने काफी प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। अन्ततः वह सूरज के पास गई और आठ-आठ आँसू बहाते हुए अवरुद्ध कंठ से अपनी राम कहानी सुनाने लगी। व्यथा से विक्षिप्त हुई मानसिक स्थिति को देखकर सूरज का कोमल कलेजा पसीज गया। वह सुबह की ट्रेन द्वारा बहनजी को अपने साथ जोधपुर लेकर गया और मित्रों के सहयोग से आदेश रद्द करवाकर शाम को ही वापस आ गया। दूसरे दिन वह रजनी बहनजी के पैर पकड़कर पश्चात्ताप करती हुई कहने लगी– 'मैं इनकी सादगी में छिपे व्यक्तित्व व कृतित्व को समझ नहीं सकी। वहाँ इनका प्रभाव देखकर मैं स्वयं स्तंभित रह गई। आज समझ गई कि वास्तव में व्यक्ति की पहचान कपड़ों से नहीं बल्कि उनके निःस्वार्थ भाव से किए गए कार्यों से होती है।'

–दीपचंद सुथार, पृथ्वीराज का अड्डा, मालियों का मुहल्ला, मेड़ताशहर-341510, जिला - नागौर (राज.)

आदेश परिपत्रः सितम्बर, 2012

1. अल्पसंख्यक समुदाय के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश वर्ष 2012-13 □ 2. अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन पत्र जमा करवाने की अंतिम तिथि में संशोधन। □ 3. आय एवं व्यय के लेखों का ifms systems के अन्तर्गत सम्बन्धित कोषालयों से अंकमिलान करने के सम्बन्ध में। □ 4. 'राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका' का अंशदान 'छात्र निधि' से भुगतान की स्वीकृति बाबत। □ 5. वर्ष 2004-05 में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के परिवर्तित बजट भाषण में की गई घोषणाओं में बिन्दु संख्या 48 'आपकी बेटी योजना' के सम्बन्ध में। □ 6. राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा - 2012 होने के कारण शिविरा पंचांग 2012-13 में आंशिक संशोधन। □ 7. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा की प्रीमियम राशि के सम्बन्ध में। □ 8. राज. उ.प्रा.वि.के 8वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 24000 विद्यार्थियों को लर्निंग लेपटॉप्स उपलब्ध करवाने बाबत।

1. अल्पसंख्यक समुदाय के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश वर्ष 2012-13

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स/अ.सं.छा./पू.मै./2012-13/ दिनांक : 6.8.12 • विषय : अल्पसंख्यक समुदाय के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश वर्ष 2012-13 • प्रसंग : राज्य सरकार का पत्रांक प.4(17)शिक्षा-1/2009 जयपुर दिनांक 12.07.2012 • अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं को पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति का लाभ दिलवाने के लिए प्रचलित छात्रवृत्ति योजना का क्रियान्वयन इस वर्ष भी माध्यमिक शिक्षा विभाग के द्वारा किया जा रहा है। यह एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी केन्द्र प्रवर्तित योजना है। इस योजना के क्रियान्वयन के लिए निम्नानुसार कार्यवाही की जानी है– 1. गत वर्ष की भाँति जिला स्तर पर इस छात्रवृत्ति के नोडल अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक (प्रथम) होंगे और वे जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (द्वितीय), जिला शिक्षा अधिकारी (प्राशि), संस्कृत शिक्षा एवं मदरसा बोर्ड के अन्तर्गत संचालित समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राओं के योजना में वर्णित नियमों एवं शर्तों के अनुसार आवेदन पत्र प्राप्त करने, प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच करने, आवेदन पत्रों के अनुसार पात्र छात्र-छात्राओं की वरीयता सूची बनाने तथा उन्हें राज्य नोडल अधिकारी, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को निर्धारित तिथि तक पहुँचाने के लिए उत्तरदायी होंगे। 2. इस वर्ष अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं के लिए स्वीकृत 2,25,409 छात्रवृत्तियाँ हेतु सभी स्तर पर प्रयास करके अधिकाधिक पात्र छात्र-छात्राओं से छात्रवृत्ति के आवेदन पत्र भरवाए जावें। 3. जिला स्तर पर सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा छात्रवृत्ति योजना का परिचय देते हुए जनहित में निःशुल्क समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाए जावें। प्रयास यह रहना चाहिए कि जानकारी के अभाव में कोई भी पात्र छात्र-छात्रा छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करने से वंचित न रह जावें। 4. गत वर्ष में जिन छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति स्वीकृत हुई थी, उन्हें भी नियमानुसार छात्रवृत्ति के नवीनीकरण (Renewal) का आवेदन पत्र भरना है। इस छात्रवृत्ति योजना से सम्बन्धित समस्त कार्यवाही निर्धारित निम्नानुसार समयबद्ध तरीके से तिथि क्रम (Calender) के अनुसार सम्पादित किया जाना सुनिश्चित करें। ध्यान रहे कि यह योजना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। अतः किसी भी प्रकार के विलम्ब अथवा शिथिलता को गंभीरता से लिया जाएगा।

क्र.सं.	कार्य	निर्धारित तिथि
1.	छात्र-छात्राओं द्वारा छात्रवृत्ति आवेदन पत्र अपने अध्ययनरत विद्यालय के संस्था प्रधान को प्रस्तुत करना।	24.8.2012
2.	विद्यालयों द्वारा छात्र-छात्राओं से प्राप्त छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जमा करवाना।	31.8.2012
3.	जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्राप्त आवेदन-पत्रों के अनुसार संकलन सूची (सॉफ्ट कॉपी मय हार्ड कॉपी) मय रिकार्ड इस कार्यालय में प्रस्तुत करना।	03.9.2012

कक्षा 1 से 8 तक के सभी छात्र-छात्राओं, भले ही वे मदरसा बोर्ड/संस्कृत शिक्षा/प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत हों, के आवेदन पत्र भरवाने, उनकी जाँच करने, पात्र छात्र-छात्राओं का चयन करने, वरीयता सूची बनाने, निर्धारित प्रपत्रों में आवश्यक सूचनाओं की सॉफ्ट एवं हार्ड कॉपी तैयार करवाकर जिला स्तरीय नोडल अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक प्रथम) कार्यालय में यथा समय उपलब्ध करवाने का उत्तरदायित्व सम्बन्धित जिले के **जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा)** का होगा।

अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राओं के लिए देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन - आवेदन पत्रों को भरवाने, भरे हुए आवेदन पत्रों को प्राप्त करने तथा प्राप्त आवेदन पत्रों की जाँच कर उनमें से अपेक्षित संख्या में अनुशंसा करने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश **(प्रपत्र 'क')** इस पत्र के साथ संलग्न कर आपको भिजवाए जा रहे हैं। इन दिशा-निर्देशों से छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञप्ति का गम्भीरता से मनन करने पर निश्चय ही आपकी शंकाएँ दूर होकर आगे से आगे स्पष्टता होती चली जाएगी। इनके अलावा भारत सरकार के अल्पसंख्यक मामलात विभाग की वेबसाईट http:/minorityaffairs.gov.in पर भी इस योजना से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रकार जिला शिक्षा अधिकारी एवं राज्य स्तर पर निदेशालय द्वारा सभी कार्य युद्धस्तर पर एक चुनौती के रूप में किए जाने हैं। वैसे जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) इसके नोडल अधिकारी हैं, लेकिन उप निदेशक स्तर से मार्गदर्शन व प्रबोधन तथा जिला स्तर पर दोनों सेटअप के जिला शिक्षा अधिकारीगण के समन्वित प्रयासों से ही यह कार्य समय सीमा में पूर्ण हो सकेगा। अतः निम्नानुसार कार्यवाही निर्धारित की जाती है–

(क) मण्डल स्तर पर उप निदेशकों एवं जिशिअ की बैठक : उप निदेशक (माध्यमिक) के संयोजन में मण्डल के दोनों उप निदेशकों– माध्यमिक व प्रारम्भिक शिक्षा के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों की संयुक्त बैठक मण्डल मुख्यालय पर आवश्यक रूप से रखी जावे जिसमें योजना के दिशा-निर्देशों पर चर्चा करके दिन-ब-दिन कार्यक्रम का निर्धारण किया जाएगा। योजना में निहित पात्रता शर्तों के अनुसार आवेदन पत्रों की जाँच करने के लिए योग्य अकादमिक/मंत्रालयिक कार्मिकों के कार्यदल बनाए जा सकते हैं। कम्प्यूटर में फीडिंग का कार्य जाँच के साथ-साथ अनिवार्यतः आज का काम आज सिद्धान्त से करवाना है। जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक व प्रारम्भिक) कार्यालयों में सभी कार्य पूर्ण होकर जिले के समेकित प्रस्ताव नोडल अधिकारी के स्तर पर तैयार कर 03.9.2012 तक निदेशालय को प्रस्तुत किये जाने हैं। मण्डल अधिकारी प्रतिदिन न केवल फोन से अपितु प्रतिदिन अधीनस्थ जिलों की विजिट करके कार्य निष्पादन एवं सन्तुलन प्रगति सुनिश्चित करेंगे।

(ख) जिला स्तर पर करणीय कार्यवाही : जिला स्तर पर दोनों सेटअप के जिला शिक्षा अधिकारी का उत्तरदायित्व बहुत महत्वपूर्ण है। वे एक टास्क टीम का गठन करेंगे जो सम्पूर्ण कार्य नियमानुसार यथा समय पूरा करेंगे, जो इस प्रकार है–

1. सम्बन्धित जि.शि.अ. (माध्यमिक/प्रारम्भिक) अध्यक्ष
2. अतिरिक्त जि.शि.अ. सदस्य सचिव
3. शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी सदस्य
4. जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सदस्य
5. सहायक लेखाधिकारी सदस्य
6. कार्यालय अधीक्षक सदस्य

उपर्युक्त टीम का कार्य सम्पादन में सामूहिक उत्तरदायित्व होगा। फिर भी अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी की व्यक्तिशः इस कार्य की जिम्मेदारी तय होगी। इस कार्य में विलम्ब त्रुटि के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे। अतः हर स्तर पर सचेष्ट व सावधान रहें।

(ग) सूचनाओं का सम्प्रेषण : मण्डल स्तर पर उप निदेशक (माध्यमिक) 10.8.2012 से प्रतिदिन मण्डल के सभी जिलों की संख्यात्मक प्रगति सूचना निम्न प्रारूपों में दोनों सेटअप की समेकित कर निदेशालय को फैक्स (0151-2201861) पर भिजवाएँगे एवं seceduschol@gmail.com पर e-mail भी करवाएँगे–

क्र. सं.	जिला	कुल प्राप्त आवेदन-पत्र	जांचे व फीडेड आवेदन-पत्र	निरस्त आवेदन पत्र	क्रियान्विति प्रतिशत

उप निदेशक (माध्यमिक) नोडल अधिकारी के रूप में ये सूचनाएँ प्राप्त कर समेकितोपरान्त प्रतिदिन निदेशालय को भेजेंगे। अतः निर्देशित किया जाता है कि अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं को देय इस महत्वपूर्ण योजना का निर्धारित तिथि क्रम के अनुसार क्रियान्वयन किया जाना हर स्तर पर सुनिश्चित किया जावे। यह ध्यान रहे कि **इस कार्य को हर स्तर पर प्रथम प्राथमिकता दी जानी परमावश्यक है। किसी भी प्रकार की अनियमितता अथवा विलम्ब के लिए उत्तरदायित्व निर्धारित कर दोषियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी।** • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

प्रपत्र - 'क'

छात्रवृत्ति फार्म भरते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. इस छात्रवृत्ति के प्रस्ताव हेतु बिन्दु संख्या 23 पर अंकित निर्धारित प्रपत्र के 18 कॉलमों को हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में भरें। 2. हिन्दी के शब्दों की Feeding Devlys 010 Font Size 12 में करें एवं संख्यात्मक प्रविष्टि यथा क्र.सं., कक्षा, प्राप्तांक प्रतिशत, वार्षिक आय, छात्रवृत्ति की राशि (शुल्क सम्बन्धी कॉलम) आदि (कॉलम संख्या 1 से 3, 6 से 9, 11 से 19) के लिए अंग्रेजी के Times New Roman के Font Size 10 का प्रयोग करें। 3. जाति के कॉलम में निम्नानुसार संकेत अक्षर लिखें– Muslim हेतु M, Chritian हेतु C, Sikh हेतु S, Bodhist हेतु B, Parsi हेतु P, 4. कक्षा के कॉलम में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 जो भी हो अंकित करें। कक्षा के लिए रोमन या अन्य अंकों का प्रयोग नहीं करें। 5. कॉलम सं. 6 में छात्र के लिए B एवं छात्रा के लिए G अक्षरों का प्रयोग करें। 6. राजकीय विद्यालयों के लिए G एवं निजी विद्यालयों के लिए P अंकित करें। 7. गत परीक्षा में प्राप्तांक वाले कॉलम में प्रतिशत (%) का चिह्न अंकित नहीं करें। केवल अंकों में लिखें जैसे 50.21, 65.48, 85.00 इत्यादि। 8. कक्षा 1 से 5 के लिए प्रवेश शुल्क एवं शिक्षण शुल्क के कॉलम में शून्य (0) अंकित करें। 9. रख-रखाव भत्ता सभी छात्र/छात्राओं के लिए 1000 रुपये अंकित करें। 10. यदि छात्र ने गत वर्ष छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं की है एवं प्रथम बार आवेदन कर रहा है तो कॉलम संख्या 13 (छात्रवृत्ति के कॉलम) में New अंकित करें और यदि छात्र ने गत वर्ष इस योजनान्तर्गत छात्रवृत्ति प्राप्त की है तो कॉलम संख्या 14 (नवीनीकरण छात्रवृत्ति के कॉलम) में R-New लिखें। दोनों में से एक कॉलम भरा जाए। 11. प्रवेश शुल्क अधिकतम 500 रुपये वार्षिक या वास्तविक चुकाया गया जो भी कम हो अंकित किया जाए। किसी भी दशा में यह 500 रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए। 12. इसी प्रकार शिक्षण भत्ता 350 रुपये प्रति मास या वास्तविक जो भी कम हो अंकित किया जाना है। शिक्षण भत्ता अधिकतम (350×10=) 3500 रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए। 13. कॉलम 15 (प्रवेश शुल्क) कॉलम 16 (शिक्षण शुल्क) कॉलम 17 (रख-रखाव भत्ता) तीनों का योग कॉलम 18 में अंकित करें। 14. Feeding आवेदन पत्र के आधार पर करें एवं प्रधानाध्यापक का प्रमाणीकरण आवश्यक है। 15. राजकीय कर्मचारियों के पुत्र/पुत्रियों को आवेदन के साथ नियोक्ता/आहरण एवं वितरण अधिकारी द्वारा जारी आय प्रमाण-पत्र देना होगा एवं जिन राजकीय कर्मचारियों के पुत्र/पुत्रियों द्वारा भरे गए आवेदन पत्रों के साथ यह प्रमाण-पत्र अंकित या संलग्न नहीं है उन्हें स्वीकार नहीं किया जावे। 16. 'शून्य' (Zero) आय वाले प्रमाण पत्रों का प्रमाणीकरण दो गवाहों से अवश्य लें। जिन शपथ पत्रों में आय उल्लेखित नहीं है उन्हें स्वीकार न करें। आय वाले कॉलम में शून्य आय तभी अंकित करें जब नोटेरी पब्लिक द्वारा जारी आय प्रमाण-पत्र में सभी स्रोतों से आय शून्य दर्शायी गई हो। शपथ-पत्र हेतु 10 रुपये के मुद्रांक की आवश्यकता नहीं है। 17. माता-पिता/अभिभावक/संरक्षक की आय यदि एक लाख रुपये से अधिक है तो ऐसे आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किए जावें। 18. छात्र/छात्रा द्वारा गत परीक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की होनी चाहिए इस हेतु गत परीक्षा की अंकतालिका या प्रधानाध्यापक का प्रमाणीकरण आवश्यक है। 19. एक परिवार से अधिकतम दो बच्चों को ही छात्रवृत्ति का लाभ देय होगा। 20. अनुत्तीर्ण बच्चों को छात्रवृत्ति का लाभ देय नहीं होगा। 21. यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि छात्र/छात्रा को अन्य किसी भी स्रोत से कोई छात्रवृत्ति न मिल रही हो। यदि अन्य स्रोत से छात्रवृत्ति प्राप्त की जा रही है तो यह छात्रवृत्ति देय नहीं होगी। 22. कक्षा 1, 2, 3 में परीक्षा न होने के कारण कक्षा 1 से 3 तक के विद्यार्थियों के लिए आय को ही आधार माना जाएगा। 23. प्रत्येक संस्था प्रधान इस हेतु एक पृथक रजिस्टर का संधारण करेंगे एवं प्रत्येक छात्र की समस्त सूचना उसमें अंकित करेंगे। 24. Format for providing details of students recommended for award of scholarship–

प्रपत्र

क्र. सं.	गत वर्ष उत्तीर्ण कक्षा	क्र. सं.	छात्र का नाम	पिता का नाम	लिंग (छात्र/छात्रा)	धर्म	गत वर्ष परीक्षा में प्राप्तांक का प्रतिशत	अभिभावक/संरक्षक की वार्षिक आय	संस्था का नाम व पता जहाँ अध्ययन-रत है	राजकीय/निजी	कक्षा जिसमें वर्तमान में छात्र/छात्रा अध्ययन-रत है	छात्रवृत्ति		छात्रवृत्ति की राशि (रुपयों में)				जिला
												नूतन	नवीनी-करण	प्रवेश शुल्क	शिक्षण शुल्क	रख-रखाव भत्ता	योग	

अल्पसंख्यक समुदाय के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना

सत्र 2012–13

आवेदन–पत्र

नूतन/नवीनीकरण

सही पर ✓ निशान लगाएं।

छात्र-छात्रा का पासपोर्ट साइज फोटो स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित

अल्पसंख्यक समुदाय का नाम .....

कार्यालय उपयोग हेतु

प्रार्थना पत्र क्रमांक	वर्ष	कोर्स	अनुमोदित - हाँ/नहीं

पार्ट – प्रथम : (आवेदक द्वारा भरा जावे)

1. छात्र/छात्रा का पूरा नाम

उपनाम	प्रथम नाम	मध्य नाम

2. पिता का पूरा नाम

3. माता का पूरा नाम

4. जन्म का राज्य

5. पत्र व्यवहार का पूरा पता

नाम	
मकान नम्बर	
मोहल्ला	
शहर/कस्बा/गांव/पोस्ट ऑफिस	
जिला	
राज्य	
पिन कोड	
दूरभाष नम्बर, मोबाइल नम्बर	
ई-मेल यदि है	

6. विद्यालय का पूरा पता

नाम	
मकान नम्बर	
मोहल्ला	
शहर/कस्बा/गांव/पोस्ट ऑफिस	
जिला	
राज्य	
पिन कोड	
दूरभाष नम्बर, मोबाइल नम्बर	
ई-मेल, यदि है	

7. स्थाई पता

नाम	
मकान नम्बर	
मोहल्ला	
शहर/कस्बा/गांव/पोस्ट ऑफिस	
जिला	
राज्य	
पिन कोड	
दूरभाष नम्बर, मोबाइल नम्बर	
ई-मेल, यदि है	

8. जन्म तारीख, **एस.आर. रजिस्टर (छात्र प्रवेशांक रजिस्टर)** के आधार पर संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित की जाएगी।

दिन		माह		वर्ष			

जन्मतिथि शब्दों में .....

9. लिंग : छात्र/छात्रा (Male/Female) .....

10. राष्ट्रीयता

11. धर्म

12. शैक्षिक योग्यता का विवरण

उत्तीर्ण कक्षा	स्कूल/संस्था/बोर्ड/कौंसिल का नाम	मुख्य विषय	उत्तीर्ण वर्ष	प्रतिशत	श्रेणी/ग्रेड

13. पाठ्यक्रम का नाम जिसके लिए छात्रवृत्ति चाही गई है
   1. कक्षा का नाम : .....
   2. अवधि : .....
   3. शैक्षणिक वर्ष : .....
   4. गत कक्षा/ शैक्षणिक वर्ष : .....
   5. गत परीक्षा में कुल प्राप्तांक / प्रतिशत : .....
      (कक्षा प्रथम एवं द्वितीय के लिए आय को आधार माना जाएगा)

14. विद्यालय / संस्था का विवरण
   1. विद्यालय / संस्था का नाम जहाँ छात्र/छात्रा अध्ययनरत है : .....
   2. विद्यालय / संस्था का पता : .....

15. कुल वार्षिक शुल्क (Fee) रुपये ..... का विस्तृत विवरण, प्रवेश, शिक्षण, परीक्षा शुल्क इत्यादि :-

क्र.सं.	मद	वार्षिक शुल्क
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
कुल		

16. छात्रवृत्ति नवीनीकरण हेतु

गत उत्तीर्ण परीक्षा	कुल प्राप्तांक	अधिकतम अंक	प्रतिशत

17. छात्र/छात्रा के बैंक खाते का विवरण
   ये सूचनाएं छात्रवृत्ति स्वीकृत होने के बाद एवं छात्रवृत्ति वितरण से पहले भरी जावें।
   1. खातेदाता का नाम _____
   2. बैंक का नाम _____
   3. बैंक शाखा (पूरा पता _____
      _____ पिन कोड _____
   4. शाखा का कोड नम्बर _____
   5. खाता संख्या _____ (शब्दों में _____)
   6. क्या बैंक में ईसीएस सुविधा उपलब्ध है ? _____
      ECA/RTGS/NEFT/CBS/code number (if any)

18. अभिभावक / संरक्षक की वार्षिक आय रुपये
(वार्षिक आय का घोषणा-पत्र नीचे दिये गये प्रारूप में एवं छात्र/छात्रा के अभिभावक/संरक्षक द्वारा हस्ताक्षरित हो। यदि अभिभावक/संरक्षक कर्मचारी है तो नियोक्ता द्वारा जारी आय प्रमाण पत्र आवेदन पत्र के साथ संलग्न किया जावे।)

19. आवेदन के साथ संलग्न किये जाने वाले दस्तावेज
1. स्वयं का हस्ताक्षरित पासपोर्ट साईज फोटो।
2. क्रमांक 12 में उल्लिखित शैक्षिक योग्यता की प्रमाणित प्रतिलिपियाँ (कक्षा 1 एवं 2 उत्तीर्ण छात्र/छात्रा को छोड़कर)
3. आय की घोषणा साधारण पेपर पर। कर्मचारियों की दशा में नियोक्ता का आय प्रमाण पत्र संलग्न किया जावे।

20. **छात्र/छात्रा एवं उसके अभिभावक/संरक्षक द्वारा की जाने वाली घोषणा**

(i) मैं घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई सूचनाएं सही है।
(ii) मेरे द्वारा अन्य किसी स्रोत से इस उद्देश्य के लिए कोई अन्य छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं की गई है।
(iii) यदि राज्य सरकार/केन्द्र शासित प्रदेश, प्रशासन को मेरे द्वारा दी गई सूचनाएं गलत पाई जाती है या मेरे द्वारा छात्रवृत्ति की नियम और शर्तों का उल्लंघन किया गया है तो मेरे को स्वीकृत की गई छात्रवृत्ति निरस्त करने का एवं मेरे द्वारा, प्राप्त समस्त छात्रवृत्ति वापिस प्राप्त करने का कानूनी अधिकार होगा।
(iv) मैं घोषणा करता/करती हूँ कि केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों के अन्तर्गत ..... समुदाय में मैं आता/आती हूँ और मुझे नियमानुसार छात्रवृत्ति का लाभ देय है।

दिनांक : .....

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर **अभिभावक/संरक्षक के हस्ताक्षर**

पार्ट – द्वितीय (विद्यालय/संस्था प्रधान द्वारा भरा जावे)

21. विद्यालय/संस्था का विवरण आवासीय विद्यालयों सहित
(i) विद्यालय/संस्था का नाम जहां छात्र/छात्रा अध्ययनरत है। _____
(ii) विद्यालय/संस्था का पता _____
(iii) विद्यालय/संस्था का दूरभाष नम्बर _____
(iv) विद्यालय/संस्था का फैक्स नम्बर _____
(v) ई-मेल पता _____
(vi) यदि विद्यालय निजी है तो क्या मान्यता प्राप्त है ? यदि हाँ तो किस विभाग से मान्यता प्राप्त है ? _____

22. विद्यालय प्रधान द्वारा प्रमाणीकरण
(i) प्रमाणित किया जाता है कि उक्त कॉलमों में छात्र-छात्रा श्री/कुमारी _____ पुत्र/पुत्री _____ जो कि सत्र _____ में कक्षा _____ में अध्ययनरत है, द्वारा दी गई सूचनाएं सही है।
(ii) श्री/कुमारी _____ इस विद्यालय/संस्था में नियमित (डे-स्कॉलर)/होस्टलर है।

अथवा

श्री/कुमारी _____ राज्य सरकार/केन्द्र शासित प्रदेश द्वारा उपलब्ध हॉस्टल में रहता/रहती हैं।
(iii) श्री/कुमारी _____ ने सत्र _____ में नवप्रवेश लिया है।

अथवा

श्री/कुमारी _____ ने सत्र _____ में कक्षा _____ उत्तीर्ण कर कक्षा _____ में अध्ययनरत है।
(iv) आवेदन पत्र के कॉलम संख्या 8 में उल्लिखित जन्मतिथि का विद्यालय के एस.आर. रजिस्टर (छात्र प्रवेशांक रजिस्टर) से भलीभाँति मिलान कर लिया गया है। छात्र/छात्रा की जन्मतिथि प्रमाणित की जाती है।

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय सील

23. विद्यालय/संस्था/कन्ट्रोलिंग कार्यालय के बैंक अकाउंट का विवरण (कोर्स फीस जमा कराने हेतु)

(i) खाते का नाम (Name of the payee as in the Bank accounts) _____

(ii) बैंक का नाम _____

(iii) बैंक शाखा का (पूरा पता) _____

राज्य _____ जिला _____ पिन कोड _____

(iv) बैंक कोड नम्बर _____

(v) खाता नम्बर (अंकों में) _____

(शब्दों में) _____

(vi) खाते का प्रकार _____ बचत/चालूखाता

(vii) बैंक का MICR कोड _____

(viii) क्या बैंक में ईसीएस (Electronic) सुविधा उपलब्ध है ? _____

ECA/RTGS/NEFT/CBS/code number (if any)

24. **छात्रवृत्ति नवीनीकरण हेतु प्रमाण–पत्र**

यह प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त उल्लिखित छात्र/छात्रा ने वर्ष _____ में कक्षा _____ कुल प्राप्तांक _____ प्रतिशत _____ से उत्तीर्ण की है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि विद्यार्थी द्वारा अध्ययन का कोर्स और विद्यालय/संस्था जहां से मूलतः छात्रवृत्ति स्वीकृति की गई थी, परिवर्तित की गई है/ नहीं किया गया है।

दिनांक : .....

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय सील

अभिभावक/संरक्षक द्वारा आय प्रमाण-पत्र घोषणा

(साधारण पेपर पर)

मैं ..... (अभिभावक/संरक्षक का नाम)
श्री/कुमारी ..... (छात्र/छात्रा का नाम)
जो कि.....(विद्यालय का नाम) की कक्षा ..... में अध्ययनरत है, घोषणा करता हूँ कि मेरी समस्त स्रोतों से वार्षिक आय (अंकों में) ..... रुपये (शब्दों में) ..... रुपये है।

किसी भी स्तर पर मेरे द्वारा ऊपर दी गई सूचनाएं झूठी/गलत पायी जाती है तो **अल्पसंख्यक समुदाय से सम्बन्धित पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति** से सम्बन्धित जो समस्त परिलाभ छात्र/छात्रा को दिये गये हैं, वापिस लिये जा सकते हैं और इसके लिए मेरे या मेरे बच्चे (My ward) के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही निर्धारित की जा सकती है।

मेरे द्वारा अधिकतम दो संतानों (छात्र/छात्रा मिलाकर) के लिए ही इस छात्रवृत्ति हेतु आवेदन किया जा रहा है।

गवाह (1) हस्ताक्षर .....
नाम .....
पता .....

गवाह (2) हस्ताक्षर .....
नाम .....
पता .....

प्रमाणित
ह. मय मुहर
नोटेरी पब्लिक
रजिस्ट्रेशन नं. ..... दिनांक .....

हस्ताक्षर
(अभिभावक/संरक्षक)
निवास का पता .....
.....
.....

2. अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन पत्र जमा करवाने की अंतिम तिथि में संशोधन

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • कार्यालय आदेश • अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन पत्र छात्र-छात्राओं द्वारा विद्यालय में जमा करवाने की अंतिम तिथि 24.8.2012 के स्थान पर **15.9.2012** की जाती है। अतः संशोधित समय सारणी निम्नानुसार रहेगी–

कार्य	पूर्व तिथि	संशोधित तिथि
1. छात्र-छात्राओं द्वारा छात्रवृत्ति आवेदन पत्र अपने अध्ययनरत विद्यालय के संस्था प्रधान को प्रस्तुत करना।	24.8.2012	**15.9.2012**
2. विद्यालयों द्वारा छात्र-छात्राओं से प्राप्त छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जमा करवाना।	31.8.2012	**20.9.2012**
3. जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्राप्त आवेदन-पत्रों के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में सूचना (सॉफ्ट कॉपी मय हार्ड कॉपी) इस कार्यालय में प्रस्तुत करना।	03.9.2012	**25.9.2012**

शेष निर्देश पूर्वानुसार रहेंगे। • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स/अ.सं.छा./पू.मै./2012-13/ दिनांक : 14.8.2012

3. आय एवं व्यय के लेखों का ifms systems के अन्तर्गत सम्बन्धित कोषालयों से अंकमिलान करने के सम्बन्ध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/डी-1/25651/2012-13/91 दिनांक : 30.7.2012 • विषय : आय एवं व्यय के लेखों का ifms systems के अन्तर्गत सम्बन्धित कोषालयों से अंकमिलान करने के सम्बन्ध में। • प्रसंग : शासन सचिव वित्त (बजट) विभाग का आदेश क्रमांक F.5(TH-75)DTA/IFMS/6796-7089 dated 23.07.12 • उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि वर्तमान में वेतन भत्तों आदि का आहरण ifms systems के अन्तर्गत सम्बन्धित कोषालयों के माध्यम से Online किया जा रहा है। वित्त विभाग के प्रासंगिक आदेशों के क्रम में निर्देश दिये जाते हैं कि समस्त अधीनस्थ आहरण अधिकारी अपने कार्यालय/विद्यालय द्वारा ifms systems के अन्तर्गत सम्बन्धित कोषालयों के माध्यम से कर रहे Online आहरण एवं विभागीय राजस्व जमाओं का नीचे लिखे कार्यक्रम अनुसार नियमित रूप से कोषालयों से प्रतिमाह मिलान कर इस आशय का प्रमाण पत्र कोष कार्यालय से प्राप्त करेंगे।

क्र.सं.	कार्य विवरण	नियत तिथि
1.	माह अप्रैल 2012 से जुलाई 2012 तक के आय एवं व्यय के आंकड़ों का मिलान।	31.08.12 तक
2.	प्रत्येक माह के 1 से 15 तारीख तक के आय एवं व्यय के आंकड़ों का मिलान।	माह की 20 तारीख तक
3.	प्रत्येक माह के 16 से माह की आखिरी तारीख तक के आय एवं व्यय के आंकड़ों का मिलान।	अगले माह की 02 तारीख तक

उपर्युक्त विवरण अनुसार आय एवं व्यय के आंकड़ों का मिलान करने के लिए सभी जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, अपने अधीनस्थ विद्यालयों को अपने स्तर पर भी निर्देश जारी कर पालना सुनिश्चित करावें। • ह., मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा-माध्य/ बजट/डी-1/25651/2012-13/91 दिनांक : 30.7.2012

4. 'राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका' का अंशदान 'छात्र निधि' से भुगतान की स्वीकृति बाबत।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/लेखा/डी-2/28001/12/109 दिनांक : 30.7.2012 • विषय : 'राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका' का अंशदान 'छात्र निधि' से भुगतान की स्वीकृति बाबत। • प्रसंग : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के पत्रांक : एसीए/ 2012 दिनांक 17.02.12 एवं 19.06.12 • उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में छात्रनिधि से व्यय के राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.19(45)शिक्षा-6/96 दिनांक 17.01.2002 के व्यय मद संख्या 2 पुस्तकालय एवं वाचनालय के अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका' का अंशदान छात्रनिधि से भुगतान की स्वीकृति प्रदान की जाती है। • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

5. वर्ष 2004-05 में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के परिवर्तित बजट भाषण में की गई घोषणाओं में बिन्दु संख्या 48 'आपकी बेटी योजना' के सम्बन्ध में।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/आपकी बेटी/12-13 दिनांक : 17.08.12 • विषय : वर्ष **2004-05** में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के परिवर्तित बजट भाषण में की गई घोषणाओं में बिन्दु संख्या 48 **'आपकी बेटी योजना'** के सम्बन्ध में। • प्रसंग : राज्य सरकार का पत्रांक : प.24/बाशिफा/आपकीबेटी/2007/ 184-85 दिनांक 06.07.12 • उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय के परिवर्तित बजट भाषण वर्ष 2004-05 के बिन्दु संख्या 48 में साधनविहीन बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने की दृष्टि से **'आपकी बेटी योजना'** राज्य सरकार के आदेशांक प.1(18)शिक्षा-1/प्राशि/2004 दिनांक 22.02.05 के द्वारा बालिका शिक्षा फाउण्डेशन के वित्तीय सहयोग से संचालित की जा रही है।

बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने राजकीय विद्यालयों में नामांकन एवं ठहराव में वृद्धि करने तथा साधनहीन बालिकाओं को शिक्षा हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से उक्त योजना चालू की गई है।

वित्तीय संसाधनों के मध्यनजर वर्ष 2012-13 में भी आपकी बेटी योजना के तहत बालिका शिक्षा फाउण्डेशन के द्वारा कक्षा 1 से 12 में राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत प्रथम वरीयता में आने वाली पात्र बालिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

प्रथम वरीयता– 'गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) जीवनयापन कर रहे परिवारों की बालिकाएँ जिनके माता-पिता दोनों अथवा एक का निधन हो गया हो तो ऐसी बालिकाओं के चयन में प्रथम वरीयता दी जाएगी। (आदेश दिनांक 22.02.05)

अतः सत्र 2012-13 के लिए आपकी बेटी योजनान्तर्गत पात्र बालिकाओं के आवेदन पत्र दिनांक **15.09.2012** तक **सचिव बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, 2-2ए, झालाना डूँगरी, जयपुर** को आवेदन पत्र अधोलिखित प्रारूप में सूची, हार्ड एवं सॉफ्ट कॉपी में भिजवाने हेतु अपने अधीनस्थ संस्था प्रधानों से प्रस्ताव प्राप्त

कर भिजवाना सुनिश्चित करें। • ह., उपनिदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

सूची क्रमांक .....

कार्यालय, बालिका शिक्षा फाउण्डेशन

2-2ए, झालाना डूँगरी, जयपुर

केवल प्रथम वरीयता : गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारों की ऐसी बालिकाएँ जिनके माता-पिता दोनों अथवा एक का निधन हो गया हो के लिए

आपकी बेटी योजना हेतु आवेदन-पत्र सत्र 2012-13

फोटो

1. छात्रा का नाम : .....
2. पिता का नाम : .....
3. माता का नाम : .....
4. वर्तमान में अध्ययनरत राजकीय विद्यालय का नाम : .....
5. कक्षा : ..... 6. जन्मतिथि : .....
7. घर का पता : .....
8. बी.पी.एल. कार्ड नम्बर (प्रति संलग्न करें) : .....
9. माता या पिता अथवा दोनों के निधन के सम्बन्ध में उल्लेख करें। (मृत्यु प्रमाण पत्र संलग्न करें)
10. अनु.जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/सामान्य : .....
11. छात्रा की रुचि का उल्लेख करें : .....

छात्रा के हस्ताक्षर **संस्था प्रधान के हस्ताक्षर मय मोहर**

जिला शिक्षा अधिकारी का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी ..... जो कि कक्षा ..... में अध्ययनरत है उक्त छात्रा आपकी बेटी योजना के अन्तर्गत प्रथम वरीयता में सम्मिलित किए जाने की पात्रता रखती है। अतः छात्रा को आर्थिक सहायता प्रदान करने की अभिशंसा की जाती है।

जिला शिक्षा अधिकारी मय मोहर

6. राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा - 2012 होने के कारण शिविरा पंचांग 2012-13 में आंशिक संशोधन

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • आदेश • निर्देशानुसार प्रदेश के सभी जिलों में आर.टी.ई.टी. (राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा-2012) होने के कारण शिविरा पंचांग 2012-13 में निम्नानुसार आंशिक संशोधन किया जाता है–

क्र.सं.	कार्यक्रम	पूर्वनिर्धारित तिथि	संशोधित तिथि
1.	जिला स्तरीय शिक्षक सम्मेलन	7-8 सितम्बर, 2012	5-6 अक्टूबर, 2012

उपर्युक्तानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें। • ह., उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/2012-13/ दिनांक : 13.8.12

7. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा की प्रीमियम राशि के सम्बन्ध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/सादुबीयो/22403/11-12 दिनांक : 7.8.12 • विषय : कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों से विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा की प्रीमियम राशि के सम्बन्ध में। • उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 28.7.11 का अवलोकन करें। पत्र के अनुसार ही वर्ष 2012-13 में भी विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा की प्रीमियम राशि बालक/बालिकाओं से प्राप्त करके विद्यालय द्वारा राजकीय मद में जमा करवानी है।

इनकी पालना सुनिश्चित करें। • ह., उप निदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

8. राज. उ.प्रा.वि.के 8वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 24000 विद्यार्थियों को लर्निंग लेपटॉप्स उपलब्ध करवाने बाबत

• राजस्थान सरकार, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग, प्रारम्भिक शिक्षा (आयोजना) विभाग • क्रमांक : प1(4)प्राशि/आयो/2012 जयपुर, दिनांक : 20.7.2012 • परिपत्र • माननीय मुख्यमंत्री महोदय की बजट घोषणा वर्ष 2012-13 के बिन्दु संख्या 128 के अनुसार प्रदेश के समस्त 24 हजार राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में, प्रत्येक विद्यालय में 8वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को, अर्थात् कुल **24 हजार विद्यार्थियों को विशेष लर्निंग लेपटॉप्स पुरस्कार के रूप में उपलब्ध करवाया जाना है।** इस बजट घोषणा के क्रियान्वयन हेतु दिशा-निर्देश एवं प्रक्रिया निम्नानुसार निर्धारित की जाती है– **1.** राजस्थान निःशुल्क एवं बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 के तहत प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने पर प्रमाण पत्र दिये जाने का प्रावधान है। विद्यालयों में सत्र 2011-12 में मूल्यांकन हेतु वर्तमान परीक्षा प्रणाली ही लागू है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के मूल्यांकन सम्बन्धी समस्त दस्तावेजों का पूर्व की भाँति ही संधारण किया जा रहा है। कक्षा 8 में प्रथम स्थान के निर्धारण हेतु विद्यार्थियों के प्राप्तांक ही आधार रहेंगे। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का चयन प्रथम स्थान पर किया जायेगा। **2.** राज्य में जिन विद्यालयों में सत्र 2011-12 में पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन व्यवस्था लागू की गई है, उनमें किसी भी विद्यार्थी को प्रथम घोषित किया जाना सी.सी.ई. की मूल भावना के विपरीत है। तथापि एक विकल्प के अन्तर्गत उन विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यांकन सम्बन्धी समस्त दस्तावेजों का विद्यालय स्तर पर सम्बन्धित प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में गठित निम्न समिति द्वारा गहन परीक्षण कर प्रथम स्थान का निर्धारण किया जायेगा। इस समिति में निम्नांकित सदस्य होंगे– • प्रधानाध्यापक - अध्यक्ष, • कक्षा 8 को पढ़ाने वाले सभी अध्यापक - सदस्य, • एस.एम.सी. अध्यक्ष एवं एक सदस्य - सदस्य, • कक्षाध्यापक - सदस्य सचिव। **3.** चिह्नीकरण के पश्चात् नॉडल प्रधानाध्यापकों के माध्यम से, ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में पात्र विद्यार्थियों (उच्च प्राथमिक, माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों सहित) की सूचना संकलित की जाएगी। **4.** ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी द्वारा संख्यात्मक सूचना जिशिअ प्रारम्भिक एवं माध्यमिक को भेजी जाएगी। **5.** जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक द्वारा चिह्नीकृत विद्यार्थियों की संकलित संख्यात्मक सूचना उपनिदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम से निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को भेजी जाएगी। **6.** यदि एक से अधिक छात्रों के उच्चतम अंक समान हैं तो वरीयता के लिए जन्मतिथि को आधार माना जाएगा अर्थात् जिसकी जन्मतिथि पहले है उसे प्राथमिकता दी जावेगी। • ह., प्रमुख शासन सचिव, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग • कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3511/बजटघोषणा/11-12 दिनांक : 13.8.12

शिविरा पंचांग माह सितम्बर, 2012

कार्य दिवस 24 • रविवार 05 • अवकाश 01 • उत्सव 05 • 1–7 सितम्बर– एनपीईजीईएल के अन्तर्गत मॉडल कलस्टर स्तर पर ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का आयोजन। **1 सितम्बर से 9 सितम्बर**– प्रथम एवं द्वितीय समूह (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक) की जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (अधिकतम चार दिवस), केजीबीवी जिला स्तरीय प्रतियोगिता। **4–5 सितम्बर**– विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (विद्यालय स्तर)। **5 सितम्बर**– शिक्षक दिवस (उत्सव), राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ। **8 सितम्बर**– विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव), मीना मंच के अन्तर्गत मीना दिवस कैसे मनावें पर चर्चा व प्रतियोगिताओं का आयोजन। **8–11 सितम्बर**– एनपीईजीईएल के अन्तर्गत ब्लॉक स्तर पर ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। **12 सितम्बर**– डी–वर्मिंग डे। विद्यार्थियों को डी वर्मिंग की दवा दिया जाना एवं स्वच्छता उत्सव का प्रारम्भ। **13–18 सितम्बर**– प्रथम समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन (प्रारम्भिक/माध्यमिक)। **13–15 सितम्बर**– प्राथमिक विद्यालय ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता साथ में निःशक्त विद्यार्थियों हेतु खेलकूद प्रतियोगियता का आयोजन (प्रारम्भिक)। **14 सितम्बर**– हिन्दी दिवस (उत्सव)। **15 सितम्बर**– श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार–2012 के प्रस्तावों का मूल्यांकन कर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक–प्रथम) द्वारा मण्डल अधिकारी को प्रेषित करना। **17–19 सितम्बर**– निःशक्त विद्यार्थियों की सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (प्रारम्भिक)। **18–21 सितम्बर**– विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (जिला स्तर)। **19–20 सितम्बर**– माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर पूर्व तैयारी। **21–26 सितम्बर**– द्वितीय समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक)। **22 सितम्बर**– किशोर जागृति दिवस (उत्सव), शिक्षा शनिवार आयोजन एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक, मीना मंच के अन्तर्गत प्रथम मौहल्ला बैठक का आयोजन करना। **24 सितम्बर**– राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है), मीना मंच के अन्तर्गत ''मीना दिवस'' का आयोजन एवं बैठकों का आयोजन करना। **24–30 सितम्बर**– एनपीईजीईएल के अन्तर्गत जिला स्तर पर ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। **25 सितम्बर**– रामदेव जयन्ती/तेजादशमी (अवकाश–उत्सव)। **26–27 सितम्बर**– माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **29, सितम्बर से 1 अक्टूबर**– प्राथमिक विद्यालय जिला स्तर खेलकूद प्रतियोगिता। **29 सितम्बर**– राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना एवं श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार 2012 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। इस तिथि तक निःशक्त विद्यार्थियों की वैयक्तिक शिक्षा योजना भिजवाना, निःशक्त विद्यार्थियों को उपकरणों का वितरण, फंक्शनल एसेसमेन्ट केम्पों का आयोजन, चिह्नित विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की सूची को अंतिम रूप देना एवं प्रेषण (प्रारम्भिक शिक्षा), विद्यालय में अध्ययनरत ऐसे बालक–बालिकओं का चिह्निकरण करना, जो अपने माता–पिता के साथ आजीविका हेतु पलायन करते हैं एवं उनके लिये माइग्रेटरी छात्रावास के प्रस्ताव तैयार करना एवं उन्हें प्रारम्भ कराना। **30 सितम्बर**– डाइस प्रपत्र भरने की आधार तिथि। **30 सितम्बर से – 03 अक्टूबर**– तृतीय समूह जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (माध्यमिक/प्रारम्भिक) **नोट :– प्रा. शिक्षा**– 1. समस्त छात्रवृत्तियों के लिए यदि आवश्यक हो तो अतिरिक्त बजट की मांग एवं ग्रामीण प्रतिभावान छात्रवृति योजना के नवीनीकरण के शेष प्रस्तावों को सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रेषित करना एवं भामाशाह योजना का त्रैमासिक प्रतिवेदन निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर को प्रेषित करना। 2. सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों का आयोजन करना। 3. कम्प्यूटर, प्रधानाध्यापक (प्रावि), लहर, ई–कन्टेंट प्रशिक्षण। 4. शिक्षक टीएलएम क्रय एवं कच्ची सामग्री से टीएलएम का निर्माण करना। 5. प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना। 6. कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के सम्बलन के लिए अधिकारियों द्वारा विद्यालयों का अवलोकन करना। 7. केजीबीवी में अन्तर जिला पैनल निरीक्षण दिनांक 15 से 30 सितम्बर। **विशेष नोट**– 12 सितम्बर को डी–वर्मिंग डे निर्धारित किये जाने के कारण अन्य कोई गतिविधि इस दिवस को नहीं रखी जावे। जिससे डी–वर्मिंग की दवा सभी बच्चों को दिया जा सके।

अनुशासन सफलता की प्रथम सीढ़ी है

वातावरण से बालक जाने-अनजाने में परिवार पड़ौस व बाहर से अनुशासन की बातें सीखता है जिसका उसे पता भी नहीं होता है लेकिन विद्यालय वह स्थान है जहाँ पर बालक औपचारिक रूप से अनुशासन की प्रथम सीढ़ी पर कदम रखता है। वहीं से बालक का समय पर स्कूल जाना, गुरुजनों का सम्मान करना, समय पर गृहकार्य करना, अपनी पंक्ति में बैठना, कक्षा-कक्ष के बाहर पंक्ति में जूते उतारना, कक्षा में गंदगी नहीं करना, शिक्षक के पहुँचने पर अपने स्थान पर खड़े होकर अभिवादन करना चोरी नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, अपनी बारी का इंतजार करना आदि अनुशासन की बातें सीखता है। औपचारिक अनुशासन सिखाने में एक शिक्षक की अहम भूमिका होती है। स्काउट/गाइड शिक्षक की और भी महती भूमिका होती है। स्काउट/गाइड शिक्षक के रूप में जब हम शिविर, रैली, जम्बूरी आदि में जाते हैं तो बालकों को बहुत सारी अनुशासन की बातें सिखाते हैं। जिसे वे अतिशीघ्र ग्रहण कर लेते हैं।

बालक को केवल किताबी ज्ञान देने से अनुशासन नहीं आता बल्कि उसे व्यावहारिक ज्ञान देने की जरूरत होती है। पढ़ाते वक्त बालक को विषय से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए। साथ ही बालक को सहगामी क्रियाकलाप करवाने चाहिए, जिससे खेल-खेल में बालक अनुशासन में रहना सीख जाता है जिसे वह दैनिक जीवन में उपयोग कर व्यवहार में लाता है, उसके जीवन में एक नया बदलाव आना शुरू होता है और बड़ा होकर सफलता का दामन चूमता है। अनुशासन व्यक्ति के जीवन का अहम हिस्सा है। जब व्यक्ति अनुशासन को अपने जीवन में उतार लेता है तो वह दूसरों के लिए उदाहरण बन जाता है। इसीलिए कहा गया है कि 'निज पर शासन, फिर अनुशासन' इसके उपरान्त जीवन के किसी भी क्षेत्र में सामाजिक, पारिवारिक चारित्रिक व धार्मिक क्षेत्र में व्यक्ति उत्तरोत्तर प्रगति करता जाता है, बस जरूरत है अनुशासन को अपने जीवन में उतारने की।

यह इतना सस्ता और सुन्दर उपाय है जिससे जीवन में निखार आता रहता है इसीलिए आज की परिस्थितियों को देखते हुए शिक्षक के लिए बालक के हृदयरूपी पटल पर अनुशासन के बीज बोना नितान्त आवश्यक हो गया है। इससे हम आज के समय में बढ़ती हुई आपराधिक प्रवृत्तियों पर कुछ हद तक अंकुश लगाने में सफल हो सकते हैं।

अतः शिक्षण कार्य के साथ-साथ बालक के व्यवहार पर भी सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए जिससे वह अच्छा सामाजिक प्राणी, प्रशासक, समाजसुधारक, राजनेता, शिक्षक, नेतृत्वकर्ता और कलाकार बन सकता है। वह अपने परिवार, समाज व देश की ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा से सेवा कर सकेगा।

इसीलिए कहा गया है कि– 'अनुशासन सफलता की कुंजी है'। 'अनुशासन देश को महान बनाता है।'

–निर्मला देवी, व्याख्याता/गाइडर, रा.बा.उ.मा.वि., छावनी, नीम का थाना (सीकर)

वैदिक गणित

❑ डॉ. के.डी. शर्मा

गणित के निष्णात प्रोफेसर डॉ. के.डी. शर्मा महाविद्यालय शिक्षा में प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आप सतत अध्यवसायी एवं कुशल लेखक हैं। आप गणित के आधिकारिक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राज्य सेवा से निवृत्ति के उपरान्त वरिष्ठ नागरिकों के माध्यम से समाज सेवा एवं नागरिक चेतना का संचरण करने हेतु सतत् प्रयत्नशील डॉ. शर्मा शिक्षा, विशेषकर बालिका शिक्षा में गहरी रुचि रखते हैं। धर्म और अध्यात्म में वैज्ञानिकता के समन्वय पर सदैव बल देने वाले डॉ. शर्मा श्री हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान, क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं।

वेद भारतीय संस्कृति के मूल स्रोत हैं तथा अनन्त ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। वेदों में धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, योग, संगीत, गणित, शिल्प, चिकित्सा, ज्योतिष आदि मानव जीवन के उत्थान के लिए उपयोगी सभी सिद्धान्तों का अद्भुत वर्णन किया गया है। वेद अपौरुषेय, अनादि एवं नित्य है। वेद ज्ञान के अपरिमित भण्डार हैं तथा देश और काल की सीमा के बंधन से परे हैं।

गोवर्धन मठ, पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री भारतीकृष्ण तीर्थ जी महाराज (1884-1960) ने अनेक वर्षों की गहन एकान्त साधना, चिन्तन एवं मनन के पश्चात् अथर्ववेद के परिशिष्ट में निहित वैदिक गणित के सोलह सूत्र तथा तेरह उपसूत्रों की व्याख्या तथा उनका व्यावहारिक उपयोग अपनी पुस्तक 'Sixteen simple Mathematical Formulae from the Vedas' में किया है। श्री भारतीकृष्ण तीर्थ वैदिक गणित के आद्य संशोधक एवं प्रणेता माने जाते हैं। वेदों में उल्लिखित गणित तथा सूत्र-उपसूत्र ही वैदिक गणित के आधार हैं। श्री भारतीकृष्ण तीर्थ उच्चकोटि के विद्वान थे तथा उन्होंने आधुनिक गणित का सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। उन्हें प्राचीन भारतीय ग्रंथ वेद, ब्राह्मण ग्रंथ तथा वेदांग आदि में उल्लिखित गणित का अपूर्व ज्ञान था। शृंगेरी मठ में रहते हुए साधना की उच्चकोटि की सिद्ध अवस्था में श्री भारतीकृष्ण तीर्थ ने इन वैदिक गणितीय सूत्रों का आंशिक अथवा पूर्णरूप से अन्तःदर्शन किया। इन सूत्रों पर दिन-रात कार्य कर इनके गणितीय अनुप्रयोगों का परीक्षण किया। परीक्षणों से प्राप्त परिणामों की सार्थकता के आधार पर उन्होंने उन सूत्रों को 'वैदिक गणितीय सूत्र' नाम दिया। कुछ विद्वानों का मत है कि वेदों में इन सूत्रों का उल्लेख नहीं है। वेदों का ज्ञान साधना की उच्चतम अवस्था में होने वाले साक्षात्कार की अनुभूति का प्रकटीकरण मंत्रों के रूप में हुआ है। इसी कारण हमारे ऋषि-मुनि मंत्र द्रष्टा कहलाते थे। वे वेदों के निर्माता अथवा लेखक नहीं हैं। श्री भारतीकृष्ण तीर्थ ने साधना की उच्चतम सिद्ध अवस्था में इन गणितीय सूत्रों का आंशिक अथवा पूर्णरूप से अन्तःदर्शन किया। इस परिप्रेक्ष्य में ये गणितीय सूत्र वैदिक हैं। श्री भारतीकृष्ण तीर्थ ने स्वयं ने उल्लेख किया है कि 'मैंने शृंगेरी मठ के जंगल में आठ वर्ष तक साधना एवं तपस्या कर अथर्ववेद के सोलह सूत्रों पर शोध कर उनकी पुनर्रचना की तथा उन्हें 'वैदिक गणित के सूत्र' नाम दिया।

वैदिक गणितीय सूत्र

सूत्र - एक

एकाधिकेन पूर्वेण।

शब्दार्थ– पहले से एक अधिक के द्वारा।

उदाहरण– भिन्न $\frac{1}{19}$ का दशमलव के 18 अंक तक मान ज्ञात करना।

यहाँ हर 19 का दहाई का अंक (अन्तिम अंक अथवा पूर्व का अंक) 1 है। सूत्र-1 के अनुसार पूर्व से एक अधिक अर्थात् अंक 2 यहाँ उभयनिष्ठ गुणज (Common or uniform multiplier) है। अब सर्व प्रथम अंक 1 लिखते हैं तथा उसे उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर अंक 2 प्राप्त होता है। अब इस अंक 2 को अंक के 1 के बाँयें ओर अर्थात् 21 लिखें। फिर इस अंक 2 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर अंक 4 प्राप्त होता है। अंक 4 को अंक 2 के बाँयें ओर अर्थात् 421 लिखें। तत्पश्चात् इस अंक 4 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर अंक 8 प्राप्त होता है। इस अंक 8 को संख्या 421 में अंक 4 के बाँयें ओर अर्थात् 8421 इस प्रकार लिखें। इसके बाद इस अंक 8 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर गुणनफल 16 प्राप्त होते हैं। 16 का अंक 6 संख्या 8421 में अंक 8 के बाँयें ओर तथा अंक 16 का अंक 1 हासिल के रूप में निम्न प्रकार लिखें–

6 8 4 2 1

1

पुनः अंक 6 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर गुणनफल 12 प्राप्त होता है जिसमें उपर्युक्त हासिल 1 (एक) जोड़ने पर 13 प्राप्त होता है। उपर्युक्त की भाँति अब संख्या निम्नप्रकार लिखते हैं–

3 6 8 4 2 1

1 1

तत्पश्चात् अंक 3 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर गुणनफल 6 प्राप्त होता है जिसमें हासिल 1 जोड़ने पर 7 प्राप्त होता है जिसे 3 के बाँयें ओर निम्नप्रकार लिखते हैं–

7 3 6 8 4 2 1

1 1

पुनः इस अंक 7 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर गुणनफल 14 प्राप्त होता है। 14 का अंक 4 7 के बाँयें ओर तथा हासिल 1 को निम्नप्रकार लिखते हैं–

4 7 3 6 8 4 2 1

1 1 1

इसके पश्चात् इस अंक 4 को उभयनिष्ठ गुणज 2 से गुणा करने पर गुणनफल 8 प्राप्त होता है जिसमें हासिल 1 जोड़ने पर 9 प्राप्त होता है जिसे 4 के बाँयें ओर निम्नप्रकार लिखते हैं–

9 4 7 3 6 8 4 2 1

1 1 1

अब हमें अभीष्ट परिणाम के आखिर के नौ अंक प्राप्त हो गये हैं। इस विधि का अनुसरण करते हुए हम प्रारम्भ के नौ अंक प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु संक्षिप्त विधि से प्रारम्भ के नौ अंक प्राप्त करने के लिए हम सर्वप्रथम आखिर के नौ अंक लिखें तथा 9 में से आखिर के नौ अंकों के प्रत्येक अंक को 9 में से घटाकर उस अंक के ऊपर निम्नप्रकार लिखें–

. 0 5 2 6 3 1 5 7 8

9 4 7 3 6 8 4 2 1

अतः $\frac{1}{19}$ = .052631578947368421

उपर्युक्त विधि समझ में आने पर $\frac{1}{19}$ का परिणाम सीधे ही एक पंक्ति में लिखा जा सकता है।

इसी विधि से भिन्न $\frac{1}{29}$ का मान सीधे ही एक पंक्ति में लिखा जा सकता है–

$$\frac{1}{29} = \frac{.03448275862068}{\text{चौदह अंक}}$$

$$\frac{96551724137931}{\text{चौदह अंक}}$$

संकेत– यहाँ उभयनिष्ठ गुणज 3 है जो हर 29 के पूर्व के अंक 2 में 1 जोड़ने पर प्राप्त होता है। 3 से गुणा करते हुए दो अंकों का गुणनफल आने पर हासिल का ध्यान रखते हुए अंतिम के 14 अंक प्राप्त करें तथा प्रारम्भ के 14 अंक प्राप्त करने के लिए प्रत्येक अंक को 9 में से घटायें।

सूत्र - दो

निखिलं नवतश्चरमं दशतः।

शब्दार्थ– सभी 9 में से अन्तिम 10 में से, अर्थात् किसी भी संख्या के इकाई के अंक को 10 में से घटायें तथा शेष सभी अंकों को 9 में से घटायें।

उदाहरण 1. 697×997

शेषफल

697 303

997 003

694 / 909

(इकाई के अंक 7 को 10 में से तथा शेष प्रत्येक को 9 में से घटाते हैं)

विधि– 697 में से 003 घटायें अथवा 997 में से 303 घटायें, शेषफल 694 तथा 303 को 3 से गुणा करने पर गुणनफल 909 अतः

697×997 = 694909

उदाहरण 2. 988×988

शेषफल

988 012

988 012

976 / 144

(इकाई के अंक 8 को 10 में से तथा शेष प्रत्येक को 9 में से घटाते हैं)

विधि– 998 में से 12 घटाने पर शेष 976 तथा 12 को 12 से गुणा करने पर गुणनफल 144 अतः

988×988 = 976144

उदाहरण 3. (i) 988×998

(ii) 9997×9997

(iii) 99979×99999

शेषफल

(i) 988 012

998 002

986 / 024

चूँकि गुणनफल में 6 अंक होंगे अतः 12 को 2 का गुणा करने पर गुणनफल 024 लिया। अतः

988×998 = 986024

शेषफल

(ii) 9997 0003

9997 0003

9994 / 0009

विधि– 9997 में से 3 घटाने पर 9994 एवं 0003 को 003 से गुणा करने पर गुणनफल 0009 लिया क्योंकि अभीष्ट गुणनफल में 8 अंक होंगे। अतः

9997×9997 = 99940009

शेषफल

(iii) 99979 00021

99999 00001

99978 / 00021

विधि– 99979 में से 1 घटायें अथवा 99999 में से 00021 घटायें, शेषफल 99978 है तथा 00021 को 00001 का गुणा करने पर गुणनफल 00021 लेना होगा क्योंकि अभीष्ट गुणनफल में 10 अंक होंगे। अतः 99979×99999 = 9997800021

उदाहरण 4. 998×112

शेषफल

998 002

112 888

110 / $_{1}$776 = 111/776

विधि– 998 में से 888 घटायें अथवा 112 में से 002 घटायें, शेषफल 110 तथा 888 को 2 से गुणा करने पर गुणनफल 1776

परन्तु गुणनफल में कुल 6 अंक होंगे अतः हजारवें स्थान का अंक 1 हासिल होगा तथा 110 में यह 1 जोड़ा जायेगा। अतः

998×112 = 111776

सूत्र - तीन

उर्ध्वतिर्यगभ्यामं।

शब्दार्थ– उर्ध्व (सीधे) तथा तिरछे दोनों विधियों से।

उदाहरण 1. 42×31

```
    4 2
    3 1
  -------
  1 3 0 2
    1
```

विधि– सर्वप्रथम इकाई अंक 2 तथा 1 का गुणा (उर्ध्व) करते हैं, गुणनफल 2, तत्पश्चात् 4 तथा 1 एवं 2 तथा 3 का तिरछा गुणा करके योग करते हैं अर्थात् 4.1+2.3 =10, उपर्युक्त उर्ध्व गुणनफल 2 के बाँयें ओर तिरछा गुणनफल 10 का इकाई का अंक 0 रखते हैं तथा दहाई का अंक 1 को हासिल (Carry) लेते हैं। इसके बाद 4 और 3 को गुणा (उर्ध्व) करके हासिल 1 जोड़ने पर 12+1 = 13 प्राप्त होते हैं जिसे 0 के बाँईं ओर लिखते हैं। अतः

42×31 = 1302

उदाहरण 2. 302×514

```
    3 0 2
    5 1 4
  -------
  1 5 5 2 2 8
        2
```

विधि–

(i) उर्ध्व गुणन $\binom{2}{4}$ = 2.4 = 8

(ii) तिरछा गुणन $\binom{02}{14}$ = 0.4+2.1 = 2

(iii) तिरछा गुणन $\binom{302}{514}$= 3.4+0.1+2.5 = 22

(iv) तिरछा गुणन $\binom{30}{51}$ = 3.1+0.5 = 3

(v) उर्ध्व गुणन $\binom{3}{5}$ = 3.5 = 15

अतः 302×514 = 1 5 5 2 2 8
                 2

= 1 5 5 2 2 8

उदाहरण 3. 3251×7604

```
      3 2 5 1
      7 6 0 4
  ----------
  2 4 7 2 0 6 0 4
      3 5 5 1 2
```

विधि–

(i) उर्ध्व गुणन $\binom{1}{4}$ = 4

(ii) तिरछा गुणन $\binom{5\ 1}{0\ 4}$ = 20

(iii) तिरछा गुणन $\binom{2\ 5\ 1}{6\ 0\ 4}$

= 2.4+5.0+1.6 = 14

(iv) तिरछा गुणन $\binom{3\ 2\ 5\ 1}{7\ 6\ 0\ 4}$

= 3.4+2.0+5.6+1.7 = 49

(v) तिरछा गुणन $\binom{3\ 2\ 5}{7\ 6\ 0}$

= 3.0+2.6+5.7 = 47

(vi) तिरछा गुणन $\binom{3\ 2}{7\ 6}$

= 3.6+2.7 = 32

(vii) उर्ध्व गुणन $\binom{3}{7}$ = 3.7 = 21

अतः 3251×7604=

2 4 7 2 0 6 0 4
    3 5 5 1 2

= 2 4 7 2 0 6 0 4

उदाहरण 4. 6341×32

यहाँ 6341 में चार अंक हैं तथा 32 में दो ही अंक हैं अतः अंकों को समान बनाने के लिए 32 को 0032 लिखते हैं।

```
    6 3 4 1
    0 0 3 2
  ---------
  2 0 2 9 1 2 = 202912
      2 1 1
```

–सेवानिवृत्त प्राचार्य, कालेज शिक्षा

मु.भी.छा. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाँधी चौक, बाड़मेर प्रथम

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् द्वारा नेहरू विज्ञान केन्द्र मुम्बई के सौजन्य तथा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के तहत आयोजित जिला स्तरीय विज्ञान सेमिनार का आयोजन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, माल गोदाम रोड, बाड़मेर में हुआ। सेमिनार में मु.भी.छा. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाँधी चौक, बाड़मेर के छात्र सौरभ भारद्वाज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्था प्रधान श्री राजेन्द्र मल सुराणा ने छात्र सौरभ भारद्वाज को इस सफलता पर कहा छात्र ने अपने शोध कार्य का प्रभावी प्रस्तुतिकरण कर प्रथम स्थान प्राप्त किया यह उल्लेखनीय है। छात्र ने गणित का भविष्य और भूतकाल की समीक्षा कर वर्तमान परिवेश में विश्व में गणित के आयाम तथा भारतीय छात्र-छात्राओं की गणित बौद्धिक स्थिति पर शोध कार्य प्रस्तुत किया है।

यह छात्र अपना शोध कार्य राज्य स्तरीय विज्ञान सेमिनार, उदयपुर में प्रस्तुत करेगा।

–जिला समन्वयक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
मु.भी.छा. रा.उ.मा.वि., गाँधी चौक, बाड़मेर

पहला सुख निरोगी काया

❑ डॉ. धीरेन्द्र कुमार सक्सेना

शारीर व मन को स्वस्थ रखना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। शरीर स्वस्थ होगा तो हम अपने सभी कार्य सुचारु रूप से कर पायेंगे। व्यक्ति का जीवन है क्या? (Life is a chalange and response) जीवन एक चुनौती है और हमें उस चुनौती का उत्तर देना है उसका सामना करना है समस्याएँ हर व्यक्ति के सामने पग-पग पर आती हैं। जो व्यक्ति शान्ति साहस व धैर्य से उन समस्याओं का ठीक हल निकाल लेता है और अपने जीवन को ऊँचा उठा ले जाता है, वही व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ है।

आज मनुष्य दुःखी है, अशान्त है, अस्वस्थ है, असफल है तो इसलिए नहीं कि यह सब भगवान की ओर से दिया हुआ अभिशाप है या उसके भाग्य में लिखा है। यह तो हमारी अज्ञानता और असावधानी के कारण ही होता है। हम अपने को स्वस्थ कैसे रख सकते हैं। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की जानकारी रखना नहीं चाहते और न ही कोई प्रयास करते हैं। अपने स्वास्थ्य को डॉक्टरों के हवाले कर दिया है। अक्सर जब हम लोग चार व्यक्तियों के बीच बैठते हैं तो बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि अमुक डॉक्टर हमारे परिवार का डॉक्टर है। महीने का 500 रु. या 1000 रु. केवल डॉक्टरों व दवाइयों पर खर्च होता है और यह मान लेते हैं कि यह खर्च तो आवश्यक है इसके बिना जीवन चल ही नहीं सकता। परन्तु इन सबके होते हुए भी शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त नहीं होता, बल्कि भयानक रोग घर कर जाते हैं। आयु कम हो जाती है। उच्च विचार और शुद्ध आचरण वही कर सकता है जो स्वस्थ हो। दुर्बल व अस्वस्थ व्यक्ति तो अपने अस्तित्व की रक्षा भी नहीं कर सकता आदर्शों और सिद्धान्तों की रक्षा करना तो उसके लिए असम्भव ही समझना चाहिए।

स्वास्थ्य एक आवश्यक तत्व है जिसकी किसी देश, समाज और काल में उपेक्षा नहीं की जा सकती। स्वास्थ्य रहेगा तो साहस रहेगा। आत्मविश्वास, उत्साह, शौर्य, पराक्रम, पुरुषार्थ, दृढ़ता इत्यादि गुणों का होना केवल स्वस्थ व्यक्ति में ही सम्भव है। दुर्बल व अस्वस्थ शरीर तो कायरता, आलस्य, आत्महीनता, पराजय और परवशता का ही जन्मदाता होता है।

इन सबके पीछे एक ही कारण है हमारा विचार करने का गलत दृष्टिकोण। सर्वसाधारण की यह विचारधारा बन गई है कि दवाइयों से स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। आज का मनुष्य स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए केवल दवाइयों के पीछे दौड़ रहा है।

शरीर स्वस्थ रहे, इन दवाइयों की आवश्यकता न पड़े इसके लिए कौन सा मार्ग है इसका किसी को ज्ञान ही नहीं। आज के भागते युग में इस प्रकार के आविष्कारों की आवश्यकता है जिनसे व्यक्ति स्वयं ही अपने को स्वस्थ रख सके स्वास्थ्य के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना पड़े। आज लोग अज्ञानतावश दवाइयों की ओर भाग रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपना जीवन बनावटी, खानपान व ऐशोआराम का बना लिया है। आज हम टानिकों में स्वास्थ्य ढूँढ़ रहे हैं।

यह स्थिति आज भारत की नहीं सारे विश्व की है। विश्व में जो तनाव है, अशान्ति है, लड़ाई झगड़े हैं उनका एक मात्र कारण शारीरिक व मानसिक रूप से अस्वस्थता ही है। बीमार व्यक्ति के विचार भी बीमार ही होंगे उससे अच्छे विचारों की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। और आज का युवक जिसके कन्धों पर समाज व देश का भविष्य निर्भर करता हो, बड़ी तेजी से कुमार्गों पर बढ़ता चला जा रहा है।

समाधान स्वयं के पास : जिस प्रकार कस्तूरी का मृग अपने अन्दर की सुगन्ध पाकर उसे ढूँढ़ने के लिए भागता फिरता है जबकि कस्तूरी उसके पास है, यही स्थिति इस समय मानव की है। शरीर को स्वस्थ रखने की शक्ति हमारे शरीर के अन्दर है और हम बाहर भटक रहे हैं। इसका परिणाम है कि विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाने पर भी व्यक्ति का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। हमारे शरीर की रचना इस प्रकार की है कि वह स्वयं को स्वस्थ रख सकता है। हमें तो उसके कार्य में बाधक न बनकर सहायक होना है। जो सारे जीवन को व्यवस्थित करता है। हम जो अपने बाहर के शरीर को देख रहे हैं वह केवल मांस हड्डियाँ ही हैं। जो शरीर कार्य करता है, जिसको हमें स्वस्थ रखना है और हमारे सारे जीवन को चलाना है वह अन्दर है। जैसे हृदय, फेफड़े, आमाशय, यकृत, आँतड़ियाँ, रक्त संचार की नलिकाएँ, मस्तिष्क, नाड़ी तंत्र कई प्रकार की ग्रंथियाँ आदि। इन्होंने हमारे सारे शरीर के कार्य को ठीक रखना है। इनके कार्यों को समझना और इनकी सहायता करना है ताकि यह हमें स्वस्थ रख सकें। इसके लिए खानपान, रहन-सहन, सोना-जागना, व्यायाम, मनोरंजन आदि सभी बातों को वैज्ञानिक रूप देना है। यह सब बातें अपने हमारे हाथ में हैं, किसी डॉक्टर या अन्य व्यक्ति के हाथ में नहीं।

अष्टांग योग : मानव जीवन का लक्ष्य सांसारिक भोगों से मुक्त होकर एक शाश्वत एवं चिरन्तन आनन्द की प्राप्ति है। योग शब्द युज धातु से बना है जिसका अर्थ है मिलाप। आत्मा और परमात्मा का सम्मिलन या अद्वैतानुभूति ही योग है। 'योगाश्चित वृत्ति निरोध' अर्थात चित्त की वृत्तियों को बाहरी संसार के विषयों में भटकने से रोककर उसे अन्तःमुखी बनाना ही निरोध है इसे योग कहा गया है। समाधि इस चित्तवृत्ति के निरोध की पूर्वावस्था है यही योग है। हमारे ऋषि मुनियों ने योग के द्वारा शरीर, मन और प्राण की शुद्धि के लिए आठ प्रकार के साधन बताये हैं जिन्हें अष्टांग योग कहते हैं। ये हैं– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योगासन से हम स्थूल शरीर की विकृतियों को दूर करते हैं। सूक्ष्म शरीर पर योगासनों की

अपेक्षा प्राणायाम का विशेष प्रभाव होता है। प्राणायाम से सूक्ष्म शरीर ही नहीं, स्थूल रूप पर भी विशेष प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से होता है। हमारे शरीर में फेफड़ों, हृदय एवं मस्तिष्क का एक विशेष महत्व है और इन तीनों का एक दूसरे के स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध भी है। स्थूल रूप से प्राणायाम श्वाँस-प्रश्वास के व्यायाम की एक पद्धति है, जिससे फेफड़े बलिष्ठ होते हैं। रक्त संचार की व्यवस्था सुधरने से समग्र आरोग्य एवं दीर्घ आयु का लाभ मिलता है। शरीर विज्ञान के अनुसार मानव के दोनों फेफड़े श्वाँस को अपने भीतर भरने के लिए वे यंत्र है, जिनमें भरी हुई वायु समस्त शरीर में पहुँच कर आक्सीजन प्रदान करती है और विभिन्न अवयवों से उत्पन्न मलीनता (कार्बोनिक गैस) को निकाल बाहर करती है वह क्रिया यदि ठीक तरह से होती रहे तो फेफड़े मजबूत हो और रक्तशोधन का कार्य चलता रहे। प्रायः अधिकतर व्यक्ति गहरा श्वाँस लेने के अभ्यस्त नहीं होते जिससे फेफड़ों का एक चौथाई भाग कार्य करता है। शेष तीन चौथाई भाग लगभग निष्क्रिय पड़ा रहता है। शहद की मक्खी की तरह फेफड़ों में प्रायः सात करोड़ तीस लाख स्पंज जैसे प्रकोष्ठ होते हैं। साधारण हल्का श्वाँस लेने पर उनमें से लगभग दो करोड़ छिद्रों में ही प्राणवायु का संचार होता है। शेष पाँच करोड़ तीस लाख छिद्रों में प्राणवायु न पहुँचने से ये निष्क्रिय पड़े रहते हैं। परिणामतः इनमें जड़ता और मल अर्थात विजातीय द्रव जमने लगते हैं जिससे क्षय, टी.बी., खाँसी, ब्रॉकाइटिस, आर्थोराइटिस आदि भयंकर रोगों से व्यक्ति आक्रांत हो जाता है। इस प्रकार फेफड़ों की कार्यपद्धति का अधूरापन रक्तशुद्धि पर प्रभाव डालता है। हृदय कमजोर हो जाता है और परिणामतः अकालमृत्यु नित्य ही उपस्थित रहती है। इस स्थिति में प्राणायाम की महत्ता व्यक्ति को स्वस्थ बनाये रखने में दीर्घ आयु के लिए अत्यावश्यक हो जाती है।

उद्वेग, चिन्ता, क्रोध, निराशा, भय, कामुकता इत्यादि मनोविकारों का समाधान प्राणायाम द्वारा सरलता पूर्वक किया जा सकता है। इतना ही नहीं मस्तिष्क की क्षमता के साथ स्मरण शक्ति, कुशाग्रता, सूझबूझ, दूरदर्शिता, सूक्ष्म निरीक्षण, शक्ति, धारणा, प्रज्ञा, मेधा इत्यादि मानसिक विशेषताओं का अभिवर्द्धन करके प्राणायाम द्वारा दीर्घजीवी बनकर जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। प्राणायाम करने से दीर्घ श्वसन का भी अभ्यास स्वतः ही होने लगता है। भगवान की ओर से हमें जो जीवन मिला है उसमें प्राण श्वाँस गिनकर मिलते हैं। जिसके जैसे कर्म होते हैं, उसी के अनुसार उसको अगला जन्म मिलता है अतः हमें अपनी श्वाँस पर चौबीस घन्टे ध्यान देना चाहिए और दो सेकण्ड श्वाँस को भीतर (inhell) सहजता सरलता से लेना चाहिए और ढाई सेकण्ड में छोड़ना (exhell) चाहिए। इस प्रकार एक मिनट में हमें 12 से 14 श्वाँस लेने का अभ्यास करना चाहिए। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि हमारे फेफड़े जो 3/4 खाली रहते हैं वह भरने लगेंगे और हमारा ध्यान श्वाँसों पर रहने से अष्टांग योग की जो धारणा ध्यान समाधि अवस्थाएँ हैं उनकी ओर सहजता से बढ़ सकेंगे। और शरीर निरोग रहेगा जो व्यक्ति लम्बी और गहरी साँस लेते हैं वे जीवन में 99 प्रतिशत बीमारियों से रोगमुक्त रहेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है। हमें अपने वैयक्तिक व्यावसायिक हितों से ज्यादा रोग हित को प्राथमिकता देनी चाहिए।

बच्चों को यदि शुरू से ही योग प्राणायाम का अभ्यास करवाया जाए तो उनका पूरा जीवन आनन्दित रहेगा। वे अधिक सुखी, स्वस्थ रहेंगे।

(लेखक 1995 में राज्य स्तर पर पुरस्कृत शिक्षक, सेवा निवृत्त व.उ.जि.शि. अधिकारी और सम्प्रति : भारत माता फिजिकल कॉलेज, किशनगंज, जि. बारां में प्राचार्य हैं)

–133, रिद्धि सिद्धि नगर (प्रथम)
ऑफ्टर थर्मल रेलवे क्रॉसिंग, बूंदी रोड, कोटा-324008

राष्ट्रीय स्तर पर महिला खेलों की भूमिका एवं प्रयास

❑ **जगदीश चन्द्र सेन**

जीवन में खेलों का विशेष महत्त्व है। स्वस्थ शरीर में जीवन का आनन्द निहित माना गया है शरीर यदि रोगों का घर है, तो वह आनन्द का अथाह भण्डार भी है, हमारी शिक्षा पद्धति में अन्य विषयों के साथ ही खेलकूद का भी समावेश किया जाता है। आज हम खेलों में महिलाओं की बात करें तो अंगुलियों पर गिनाये जाने वाले नाम ही हमारे सामने आते हैं मसलन बॉक्सिंग में मेरीकॉम, डिस्कश थ्रो में कृष्णा पूनिया, बैडमिन्टन में साइना नेहवाल, टेनिस में सनिया मिर्जा, मेराथन में रोशनी-रे जैसे गिने चुने नाम ही हमारे सामने आते हैं।

आज के महिला सशक्तिकरण के दौर में खेलों में भारतीय महिलाओं का स्थान अन्य देशों के मुकाबले कहीं पीछे है अर्थात् देश में महिला खेल के हालात अच्छे नहीं हैं हमारे यहाँ स्पोर्ट्स कल्चर का अभाव है। हमारे यहाँ विभिन्न खेल संघों की कार्य पद्धति बिल्कुल पारदर्शी नहीं है। महिलाओं के खेलों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

हम चीन की तरह सीख लेकर विभिन्न खेलों में आने वाले ओलम्पिक में पदक तालिका में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकें इसके लिए एक्सीलेंस सेंटर चलाने के साथ ही बाहर से बेहतर एक्सपर्ट्स बुलाने चाहिए। साथ ही विभिन्न खेलों के फेडरेशन द्वारा भी महिलाओं के खेलों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

महिला/बालिका खेलों में प्रारम्भिक स्तर से ही अर्थात् प्रारम्भिक शिक्षा के साथ ही विभिन्न प्रयास किये जाने चाहिए जिससे विश्वस्तरीय खिलाड़ी तैयार हो सकें इस हेतु बालिकाओं को खेलों में प्रोत्साहित करने के लिए निम्न प्रयास करने चाहिए–

1. शिक्षक-अभिभावक परिषद् में चर्चा सम्पर्क : विद्यालय स्तर पर गठित शिक्षक अभिभावक परिषद्/समिति में सर्वप्रथम बालिकाओं के अभिभावकों से सम्पर्क बनाकर उन्हें विभिन्न खेलों के बारे में जानकारी प्रदान करनी चाहिए एवं उन्हें अपनी अध्ययन एवं बालिकाओं में खेल के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु प्रेरित करने को कहें। जिनसे बालिकाओं

की खेल के प्रति रुचि बने। अतः शिक्षकों की प्रत्येक अभिभावक से सम्पर्क प्रगाढ़ होना चाहिए।

2. नोडल केन्द्र द्वारा खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन : प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर नोडल केन्द्र के अधीनस्थ पाँच से दस विद्यालय होते हैं। अतः इन विद्यालयों का समय-समय पर आपस में मैत्री मैच का आयोजन किया जाना चाहिए तथा ऐसे आयोजनों में बालिकाओं को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक बालिकाओं की खेलों के प्रति रुचि बनी रहे।

3. नेहरू युवा केन्द्र द्वारा बालिका वर्ग की प्रतियोगिताएँ आयोजित करना : जिला स्तर पर युवा कार्य एवं खेल संस्था तथा नेहरू युवा केन्द्र द्वारा प्रायः बालक वर्ग की प्रतियोगिताएँ ही आयोजित की जाती है। अतः इन केन्द्रों द्वारा व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करके बालिका वर्ग की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए। जिससे बालिकाओं को खेलने के लिए पर्याप्त अवसर मिल सके। ये प्रतियोगिताएँ जिला स्तर पर सीमित न रहकर पंचायत स्तर पर होनी चाहिए। जिससे ग्रामीण स्तर की बालिकाओं को खेल में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सके।

4. ग्रामीण मेलों/उत्सवों में क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए : भारतीय संस्कृति में मेलों व उत्सवों का विशेष महत्व है ऐसे उत्सवों एवं मेलों में आयोजन समिति द्वारा बालिकाओं के विभिन्न आयु वर्ग की प्रतियोगिताओं का आयोजन कर प्रोत्साहन दिया जा सकता है। ग्रामीण संस्कृति में कबड्डी खेल अपना विशेष स्थान रखती है। ऐसे अवसर पर कबड्डी, खो-खो एवं वालीबॉल इत्यादि खेलों का आयोजन करके बालिकाओं की रुचि बढ़ाई जा सकती है।

5. जन प्रतिनिधियों द्वारा सहयोग एवं प्रोत्साहन : जन प्रतिनिधियों द्वारा अपने जन्मदिन/वर्षगाँठ या यादगार दिवस पर किये जाने वाले व्यय के स्थान पर बालिका वर्ग की प्रतियोगिताएँ उस दिन आयोजित की जाए साथ ही विशेष दिन/उत्सव जैसे– स्थापना दिवस, राजस्थान दिवस, पर्यटन दिवस एवं महिला दिवस इत्यादि अवसर पर खेल प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए।

6. पायका योजना में बालिका वर्ग : सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा इस योजना के अन्तर्गत होने वाली प्रतियोगिता में बालिका वर्ग की प्रतियोगिता को अनिवार्य रूप से आयोजित की जाने का प्रावधान होना चाहिए। जिससे बालिकाओं को खेलने का पर्याप्त अवसर मिले साथ ही योजना का समुचित लाभ भी मिल सकेगा। अतः जब भी इस योजना द्वारा प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये बालिका वर्ग की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए।

7. एन.जी.ओ. की भूमिका : बालिका खेलों को प्रोत्साहन देने में एन.जी.ओ. अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों द्वारा अन्य सामाजिक कार्यों के साथ ही भामाशाह के सहयोग से छोटे-छोटे गाँवों में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए। जिसमें मनोरंजन के साथ ही खेलों को प्रोत्साहन एवं गाँवों में छुपी खेल प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर प्रदान होंगा।

8. विद्यालय स्तर पर बालिका वर्ग की प्रतियोगिताएँ अनिवार्य हो : प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की प्रतियोगिताओं में विभाग द्वारा प्रत्येक विद्यालय को विभागीय पंचांग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में बालकों के साथ ही बालिकाओं की एक टीम किसी भी खेल में प्रतिनिधित्व करने को अनिवार्य किया जाए इससे बालकों के साथ बालिकाओं को भी अपने गाँव से बाहर जाकर खेलने के अवसर प्रदान होंगे। बालिकाओं की खेलों के प्रति जिज्ञासा बढ़ेगी।

9. ग्राम पंचायत स्तर अधीनस्थ गाँवों में प्रतियोगिताएँ : एक कम आबादी के कारण एक पंचायत में 2 से 5 गाँवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत बनी हुई होती है ऐसी स्थिति में पंचायत स्तर पर अपने अधीनस्थ गाँवों की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए। जिससे पड़ौसी गाँवों के साथ मैत्री पूर्ण प्रतियोगिताओं का आयोजन पंचायत स्तर पर किया जा सके। जिससे छोटी-छोटी ढाणियों एवं विरल आबादी क्षेत्र की बालिकाओं को भी खेल में भाग लेने के अवसर प्रदान हो।

10. मीडिया पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग : बालिका वर्ग की प्रतियोगिताओं को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में मीडिया का प्रयास भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ग्रामीण स्तर की प्रतियोगिता को पत्र-पत्रिकाओं में स्थान देकर बालिकाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इनमें छपी तस्वीरों एवं खेलों की जानकारी से भी बालिकाओं में रुचि जाग्रत होगी। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ियों की सीडी ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं को दिखाई जाए पत्र-पत्रिकाओं में छपी उनकी तस्वीरें भी इनके लिए प्रेरणा स्रोत हो सकती हैं।

–शारीरिक शिक्षक
रा.उ.प्रा.वि., राजोला खुर्द, पाली (राज.)

यात्रा वृत्तान्त

मेरी ताशकन्द यात्रा

❑ देवकिशन राजपुरोहित

मनुष्य जन्म से मृत्यु पर्यन्त यात्राएँ करता रहता है। कोई छोटी यात्राएँ करता है, तो कोई लम्बी यात्राएँ करता है, किन्तु एक जगह कोई नहीं टिकता। हमारे ऋषि मुनि तो कहते हैं कि आत्मा अजर अमर है। जन्म से पहले भी थी और मृत्यु के बाद भी होगी तथा उसकी जन्म-जन्मान्तर तक यात्राएँ भी अनवरत चलती रहेगी। ना पिछले जन्म का भान है और ना ही अगले जन्म का ज्ञान है। इस जन्म में जब से होश सम्भाला, मैं अनवरत यात्रा करता रहा हूँ। इस गाँव से उस गाँव, उस गाँव से उस शहर। फिर पूरा भारत भ्रमण करते हुए यायावर जीवन के सत्तरवें वर्ष के निकट भी पहुँच गया। यात्रा अनवरत जारी है।

जब भारत पाकिस्तान के बीच 1965 का भयंकर युद्ध हुआ और भारत जीता, तब मित्र राष्ट्र रूस की मध्यस्थता से हमारे प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के शासकों के बीच एक संधि 10 जनवरी 1966 को रूस के एक प्रसिद्ध नगर ताशकन्द में की गई। इस संधि में भारत द्वारा विजित भू-भाग पुनः पाकिस्तान को सौंपा गया। यह समझौता भारत के लिए आत्मघाती था तथा शास्त्री आत्मग्लानि से भर उठे थे। उसी दिन की मध्य रात्रि अर्थात् 11 जनवरी को ही शास्त्री जी ने ताशकन्द में ही अन्तिम सांस ली।

उस समय मैं सीमान्त क्षेत्र बाड़मेर जिले की राजकीय बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चौहटन में अध्यापक था। तभी से ताशकन्द जाने और शास्त्रीजी को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का दृढ़ निश्चय कर बैठा था, किन्तु कभी अवसर नहीं मिला। मैं उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था।

सृजन यात्रा के संस्थापक सचिव श्री जयप्रकाश मानस ने इस वर्ष पाँचवाँ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन 24 से 30 जून तक ताशकन्द में घोषित कर दिया तथा मेरा भी इस यात्रा में उन्होंने नाम सम्मिलित कर लिया। मैं अत्यन्त प्रसन्न था तथा यात्रा में जाने के लिए उत्साहित भी था। जैसे शास्त्री जी की आत्मा ने मेरे अन्तरमन की सुन ली।

25 जून को 135 हिन्दी के विद्वानों के साथ सूर्य की प्रथम किरण के साथ ताशकन्द की भूमि पर हमने पदार्पण किया। उस ऐतिहासिक नगर में जहाँ से कभी तैमूर लंग भारत आया था ताशकन्द उसके राज्य में था तथा समरकन्द उसकी राजधानी थी। उसी स्थान से तैमूर लंग का प्रपौत्र बाबर भारत आया और उसने भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया। वही ताशकन्द जहाँ शास्त्रीजी ने आत्मग्लानि से आत्मोत्सर्ग किया था। आज मैं अपने वर्षों पुराने स्वप्न को साकार करने आया था, जहाँ शास्त्रीजी की मूर्ति के सामने साफा (पगड़ी) रखकर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ दो बूँद आँसू भी टपका सकूँ।

एक ऐतिहासिक क्षण मेरे लिए ताशकन्द की भूमि पर तब आया जब मेरी राजस्थानी व्यंग्य संग्रह निवण का विमोचन मोरिशस की विदुषी रश्मि रामधुनी के हाथों हुआ। मेरी पुस्तिका मीरां बाई और मेड़ता का भी उन्होंने विमोचन किया। विद्वानों को मीराबाई की पूरी जानकारी उपलब्ध कराई गई। पत्रवाचन एवं कहानी वाचन का भी मुझे अवसर मिला। मेरा प्रस्ताव राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल कर मान्यता का पाँचवें अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में पारित किया।

हमने पूरा ताशकन्द देखा। ऊँचे-ऊँचे भवन देखे। सड़कें देखी। पूरा शहर बड़े-बड़े छायादार वृक्षों के नन्दन वन जैसा लग रहा था। शहर में सफाई इतनी कि सड़क पर गन्दगी तो क्या, कोई वृक्ष का पत्ता भी सड़क पर बिखरा हुआ नहीं था। गाड़ियाँ, कारें, बसें तो चलती थीं किन्तु कोई भी गाड़ी ना तो किसी को ऑवरटेक करती थी ना ही हॉर्न बजाती थी। हाँ ! गाड़ी ड्राईवर बाएँ बैठकर गाड़ी चलाते थे और गाड़ियाँ सब दाँईं ओर चलती थी। पूरे छः दिन में किसी भी मस्जिद से माईक पर नमाज की आवाज नहीं सुनी। शहर पूरा प्रदूषण रहित है। शहर में तैमूर की एक मस्जिद है जिसमें हजारों हरिणों को मारकर उनकी खाल पर पवित्र कुरान स्वयं तैमूर ने लिखाई थी। जो यात्रियों को गर्व और गौरव के साथ दिखाई जाती है।

एक दिन ताशकन्द से बाहर प्राकृतिक सौन्दर्य भी देखा। बसों से 120 किलोमीटर दूर चार्वाक बाँध व झील देखी। भरपूर पानी और उसका पूरा-पूरा उपयोग भी हो रहा है।

रास्ते में चिक चैक हिल्स पर रुके। पहाड़ों पर बर्फ जमी हुई थी और पिघल कर चार्वाक झील में पानी जा रहा था। सर्दियों में बर्फ बहुत जमती है तथा खूब पिघलती है। घरों पर भी बर्फानी वर्षा होती है।

गाँवों में लोगों के घरों की छते छपरानुमा है। टिन शैड, लकड़ी व खपरेल के भी छापरे हैं। मकान कच्ची व पक्की ईंटों के हैं। साफ-सफाई और हरियाली देखने लायक है। गेहूँ की फसल अभी कटाई पर है।

समरकन्द भी देखा। ताशकन्द से 350 किलोमीटर दूर है। रेल जाती है। रेल की पटरी के दोनों तरफ तारबन्दी कर रखी है। ताकि कोई पशु इत्यादि रेल से ना टकराए। समरकन्द भी साफ सुथरा और सुन्दर शहर है। समरकन्द में तैमूर की मस्जिद है आज भी रखरखाव के कारण साफ सुथरी और आकर्षक है। ऊँची मीनारें आज भी तैमूर को बरबस याद कराती है। कैसा रहा होगा तैमूर जिसने परगने जीते खूब निर्माण कराया और स्वयं ने समरकन्द में अन्तिम साँस ली। जहाँ उसका भव्य मकबरा आज भी अतिभव्यता दर्शाता है। क्यों ना दर्शाए आखिर उस मकबरे की दीवारों पर कई टन सोने की परतें कारीगरी कर लगाई गई है। स्वयं तैमूर की काले पत्थर की कब्र है। उसके सिरहाने उसके गुरु तथा दाएँ-बाएँ उसके पुत्रों की संगमरमरी कब्रें हैं। तैमूर के

पैरों की तरफ उसके पौते की कब्र भी है।

मैं अपने साथ आशा पाण्डे ओझा कवियित्री को लेकर ताशकन्द स्थित भारतीय दूतावास गया। दूतावास में स्वयं राजदूत नहीं थे। दिल्ली गए हुए थे। किन्तु उनके प्रथम सचिव, मुरलीधर बाबू एवं वाणिज्य अधिकारी मनोज कुमार ने हमारी आवभगत की और हमें पूरे उज्जबेकिस्तान की जानकारी दी। उनके वाणिज्य अधिकारी मनोज कुमार हमारे साथ चले। हमने शास्त्री जी की मूर्ति पर पुष्प गुच्छ चढ़ाए और पुष्पांजलि अर्पित की उस समय मेरी आँखें डबडबा गई और नम आँखों से उन्हें श्रद्धांजलि दी। आशा भी भावुक हो गई थी।

उज्जबेकिस्तान राष्ट्र– राजधानी - ताशकन्द, जिले - 11, क्षेत्रफल - 334.8 वर्ग किमी., जनसंख्या - 23 लाख, भाषा - उज्जबेक, मुद्रा - उज्जबेक सोम, बड़े उद्योग - 164, कम्पनियाँ - 34 हजार, चिकित्सा - 100 चिकित्सालय, समाचार पत्र - 130, शिक्षा– प्राथमिक शिक्षा - 514 स्कूल, सैकण्डरी - 335 स्कूल, शैक्षिक कॉलेज - 30, तकनीकी कॉलेज - 85, उच्च शिक्षा - 30 संस्थान, 15 वर्ष से ऊपर - 88 प्रतिशत, 15 वर्ष से नीचे - 76 प्रतिशत। जातियाँ व धर्म - उज्जबैक - 71 प्रतिशत, रसियन - 8 प्रतिशत, कजाक - 4 प्रतिशत, तातार - 2.5 प्रतिशत, अन्य - शेष।

श्रद्धांजलि के बाद हमने लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र पहुँचकर उस स्थान को देखा, जहाँ श्रद्धा नामक एक महिला भारतीय संगीत व संस्कृति की शिक्षा देती है। अनेक लोग इस स्थान पर हिन्दी सीखते हैं। हालांकि यहाँ की भाषा उज्जबैक है तथा लिपि रसियन मिश्रित अंग्रेजी है। ताशकन्द 1 सितम्बर 1991 से पूर्व रूस के अधीन था किन्तु 1 सितम्बर 1991 को एक नये राष्ट्र उज्जबेकिस्तान का उदय हुआ और उसकी राजधानी बनने का सौभाग्य ताशकन्द को मिला। आजादी के 21 वर्षों में जो इस नये गणराज्य ने नैतिक और भौतिक प्रगति की है, वह प्रगति हम 65 वर्षों में भी नहीं कर पाए। इस नये राष्ट्र में अपराध नगण्य हैं। अपराधी को तुरन्त कठोर सजा दी जाती है।

ताशकन्द में भारतीय तो नगण्य हैं किन्तु ईसाई, मुसलमान, पारसी बहुत हैं। पर्दा अथवा बुर्का प्रथा बिल्कुल नहीं है। स्त्री पुरुष समान रूप से कार्य करते हैं। लिंग भेद तथा जाति और धर्म का कोई भेदभाव नहीं है। यही कारण है कि साठ फीसदी शादियाँ स्वयं लड़का-लड़की निर्धारित करते हैं जिसे प्रेम विवाह कहा जाता है।

शराब पीने पर रोक नहीं हैं। प्रसिद्ध शराब वोदका है जो लगभग सभी जगह उपलब्ध है किन्तु शराब पीकर सड़क पर आना मना है। धूम्रपान सार्वजनिक स्थानों पर नहीं कर सकते। किन्तु जगह-जगह धूम्रपान कैबिन बने हुए हैं। जहाँ बैठकर धूम्रपान किया जा सकता है।

शहर में कहीं भी थड़ी, खोखा या अन्य ढाबे नहीं हैं। कहीं भी अवैध कब्जा नहीं है। सभी लोग राष्ट्रधर्म से बँधे हुए हैं। पानी, बिजली, गैस, पेट्रोल सस्ते हैं। पशुपालन और कृषि मुख्य व्यवसाय है। गाय, घोड़ा, गधा, बकरी और गाडरें पशुओं में हैं। तो कृषि में गेहूँ कपास, चावल, दाख, बादाम, अखरोट एवं फलों की खेतियाँ भी की जाती हैं। भोजन शाकाहारी और मांसाहारी दोनों करते हैं। भिक्षावृत्ति ताशकन्द में भी है। किन्तु भिखारी सड़क के किनारे दीन-हीन अवस्था में खड़े रहेंगे और राहगीर कुछ ना कुछ देते रहेंगे।

चित्रकारी से अनेक लोग जीवनयापन करते हैं तथा लोगों के चित्र बनाकर अपनी इस कला को जीवित रखे हुए हैं। कुल मिलाकर 12वीं 13 सदी का ताशकन्द और समरकन्द आज भी अपनी ऊँचाइयों को बरकरार रखे हुए है। प्रत्येक व्यक्ति को एक बार ताशकन्द और समरकन्द देखना चाहिए, किन्तु इतिहास के विद्यार्थियों को तो अवश्य ही देखना चाहिए। तीस जून की शाम को शास्त्री जी को याद करते हुए पुनः अपनी मातृभूमि की ओर प्रस्थान किया। इस प्रकार रही मेरी ताशकन्द यात्रा।

–सूर्य सदन चम्पाखेड़ी,
रेण, नागौर (राज.)

जागती जोत के श्रद्धांजलि अंक का लोकार्पण

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की मुख–पत्रिका जागती जोत के श्रद्धांजलि अंक का लोकार्पण अकादमी एवं नगरश्री चूरू के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित चूरू जिला साहित्यकार सम्मेलन के अवसर पर किया गया । इस आशय की जानकारी देते हुए अकादमी अध्यक्ष श्याम महर्षि ने बताया कि अरसे से लंबित इस विशेषांक के माध्यम से राजस्थानी साहित्यकार समाज ने बीकानेर के श्रीलाल नथमल जोशी, कोटा के शांति भारद्वाज 'राकेश', बीकानेर के यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', रतनगढ़ के गजानन वर्मा, बीकानेर के हरीश भादानी, जयपुर के बुद्धिप्रकाश पारीक, जालौर के रामेश्वरदयाल श्रीमाली एवं नागौर के अस्तअली खां मलकाण को याद किया गया है । महर्षि ने बताया कि 208 पृष्ठ के इस विशेषांक का कुशल संपादन ख्यात नाम व्यंग्यकार, कवि–समालोचक भवानी शंकर व्यास 'विनोद' ने किया है । अतिथि विद्वान संपादक भवानी शंकर व्यास 'विनोद' ने इस विशेषांक में आठों दिवंगत पुरोधाओं के रचनाकर्म पर केन्द्रित विशिष्ट आलेखों के साथ–साथ उनकी प्रतिनिधि रचनाओं को सम्मिलित कर इसे बहुपयोगी और शोधपरक बना दिया है । विशेषांक लोकार्पण की जानकारी मिलते ही समूचे राजस्थान से विशेषांक प्रति भिजवाने हेतु साहित्यकारों ने संपर्क प्रारम्भ कर दिया है ।

अकादमी सचिव पृथ्वीराज रतनू ने बताया कि अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार इसी वित्त वर्ष में जागती जोत के दो और विशेषांक प्रकाशन की योजना है । एक विशेषांक राजस्थानी संस्कृति पर केन्द्रित होगा, जिसका सम्पादन दायित्व लोक संस्कृति के कुशल चितेरे चूरू के भंवरसिंह सामौर को सौंपा गया है । इसी प्रकार शिक्षा और राजस्थानी विषय पर केन्द्रित प्रस्तावित विशेषांक के अतिथि संपादक कथाकार–संपादक ओमप्रकाश सारस्वत होंगे।

–पृथ्वीराज रतनू, का. सचिव,
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान निदेशालय, बीकानेर परिसर में स्वतन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर ध्वजारोहण एवं पौधारोपण

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान निदेशालय, बीकानेर परिसर में स्वतन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर ध्वजारोहण श्री हर सहाय मीणा, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए श्री मीणा ने प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के कार्मिकों एवं अधिकारियों के कार्य की प्रशंसा करते हुए आह्वान किया कि जो कार्य 65 वर्ष में अब तक नहीं हुए उन कार्यों को सभी के सहयोग से करना है। उन्होंने यह भी कहा कि विभागाध्यक्ष की तरफ से सुझाव व योजनाएँ बनाकर शासन को प्रेषित की जाती हैं उसमें सबसे पहली कलम लिपिक की चलती है।

इस अवसर पर पर्यावरण रक्षा एवं वृक्षमित्र समिति के तत्वावधान में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया इसमें श्री हर सहाय मीणा, निदेशक तथा समिति के सचिव मदनमोहन व्यास ने संयुक्त रूप से आम का पौधा परिसर में रोपित किया। तत्पश्चात् श्री प्रेमसुख बिश्नोई, अतिरिक्त निदेशक, श्री चन्द्रशेखर जोशी, उप निदेशक (योजना), ओमप्रकाश सारस्वत, उप निदेशक (प्रशासन) एवं वरिष्ठ सम्पादक शिविरा, श्री कृष्ण कुमार हर्ष, कार्यालय सहायक एवं श्री नवरतन सैनी, कनिष्ट लिपिक ने आम, पपीता व अमरूद आदि के पौधों को रोपित किये। इस कार्यक्रम में दोनों निदेशालय के बड़ी संख्या में कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। निदेशक महोदय ने पर्यावरण समिति द्वारा किये गये कार्यों की सराहना करते हुए चण्डीगढ़ से विशेष पौधे मँगवाकर निदेशालय में रोपित करने के निर्देश दिए।

–ओमप्रकाश सारस्वत
उप निदेशक (प्रशासन), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

शिक्षा के क्षेत्र में जिला कलेक्टर नीरज के. पवन की अनूठी पहल

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने, कन्या भ्रूण हत्या को रोकने, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षा में राज्य स्तरीय वरीयता सूची में स्थान दिलाने एवं जिले के परीक्षा परिणाम में वृद्धि करने के लिए नीरज के. पवन जिला कलेक्टर पाली द्वारा अनूठा प्रयास किया गया। सत्र 2011 में दिसम्बर माह में आयोजित छात्र/छात्राओं के विशेष शिक्षण शिविर के समापन समारोह में जिला कलेक्टर पाली नीरज के. पवन द्वारा यह घोषणा की गई कि जो भी छात्र/छात्रा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा की 10 की राज्य स्तरीय वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करेगा। उसे लेपटॉप एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा एवं छात्राओं को हवाई जहाज द्वारा विदेश यात्रा भी कराई जाएगी। इस घोषणा के परिणामस्वरूप पाली जिले के परीक्षा परिणाम में भी वृद्धि हुई और साथ ही 02 छात्र एवं 01 छात्रा ने राज्य स्तरीय वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया। वाणिज्य वर्ग की राज्य स्तरीय वरीयता सूची में छात्र दीक्षित जैन/ पदमराज वन्दे मातरम उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली ने 93.40 प्रतिशत अंक प्राप्त करके तीसरा स्थान, छात्रा दीक्षा जैन/राजेश जैन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोजतरोड ने 91.40 प्रतिशत अंक प्राप्त करके दसवाँ स्थान प्राप्त किया तथा विज्ञान वर्ग में यशपाल सुथार/श्री प्रकाश सुथार विजय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली ने 93.80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर 9वाँ स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 15 मई, 2012 को इन प्रतिभाशाली छात्र/छात्रा को सम्मानित करने हेतु सेठ मुकनचन्द बालिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली में आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्रा दीक्षा जैन को शनिधाम ट्रस्ट, अलावास के महामण्डलेश्वर दाती महाराज मदन राजस्थानी की ओर से एवं छात्र दीक्षित जैन को जिला कलेक्टर पाली की प्रेरणा से जन सहयोग द्वारा लेपटॉप जिला कलेक्टर पाली श्री नीरज के. पवन, प्रशिक्षु आई.ए.एस. जितेन्द्र सोनी, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) नूतन बाला कपिला द्वारा लेपटॉप व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया एवं छात्रा दीक्षा जैन से विदेश हवाई यात्रा के लिए लिखित सहमति इनके माता-पिता द्वारा देने के लिए कहा गया।

इस अवसर पर सेठ मुकनचन्द बालिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली में स्मार्ट क्लास रूम का उद्घाटन जिला कलेक्टर पाली द्वारा किया गया। राज्य में यह एक मात्र पहला सरकारी विद्यालय होगा जहाँ पर कक्षा 6 से 12 के विषयों का अध्यापन स्मार्ट क्लास रूम के माध्यम से कराया जाएगा। इस स्मार्ट क्लास रूम की स्थापना जिला कलेक्टर पाली के द्वारा जन सहयोग से की गई। इस अवसर पर जिला कलेक्टर महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेरिट में स्थान लाओ और लेपटॉप पाओ । जो भी बालिका मेरिट में स्थान लाएगी उसे विदेश हवाई यात्रा कराई जाएगी और पाली जिले में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए जिला प्रशासन का पूर्ण सहयोग रहेगा।

–नूतन बाला कपिला
जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), पाली

मीरा समारोह, 2012

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में विभिन्न अकादमियों की तर्ज पर विज्ञान अकादमी गठित करने की घोषणा की है। इससे राज्य विज्ञान के विकास में हो रही गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और वैज्ञानिकों को एक प्लेटफार्म पर आने के अवसर मिलेंगे।

मुख्यमंत्री 15 जुलाई 2012 को जयपुर के पिंकसिटी प्रेस क्लब में राजस्थान साहित्य अकादमी के तत्वावधान में आयोजित साहित्यकार पुरस्कार सम्मान - मीरा समारोह 2012 की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी तथा मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने चयनित साहित्यकारों को प्रशस्ति-पत्र, नकद राशि, ट्राफी देकर और दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया।

श्री गहलोत ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार को समाज का मार्गदर्शक माना जाता है। आज देश एवं समाज में जो चुनौतियाँ और कन्या भ्रूण हत्या एवं दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियाँ हैं, उन्हें मिटाना होगा। ऐसे में लेखकों, पत्रकारों, साहित्यकारों को आगे आकर इनके विरुद्ध वातावरण बनाने की जरूरत है। इनके लिखे शब्दों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। श्री गहलोत ने कहा कि साहित्य, कला और संगीत ऐसे क्षेत्र हैं जो मानवीय संवेदनाओं से जुड़े हुए हैं और जो व्यक्ति मानव संवेदना से जुड़ जाता है, वह किसी के साथ अनीति और अन्याय नहीं करता है। आपने कहा कि राज्य सरकार ने साहित्यकारों तथा पत्रकारों के लिए कल्याण कोष बना रखा है।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी ने मुख्य अतिथि पद से सम्बोधित करते हुए कहा कि राजस्थान साहित्य अकादमी देश की महत्वपूर्ण अकादमियों में से एक है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में विविध भाषाओं का समृद्ध साहित्य है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर इन साहित्यों में छिपी है जिन्हें संजोकर रखना होगा। उन्होंने कहा कि हमें ऐसे साहित्यकारों एवं लेखकों की आवश्यकता है जो हमारे साहित्य को आपसी सामंजस्य स्थापित कर संरक्षित रख सकें।

राज्यपाल ने साहित्यसेवियों को अपने लेखन से हमारे सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को मजबूत बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि साहित्यकार समाज का पथ प्रदर्शक होता है। यदि सकारात्मक सोच और रचनात्मक दिशा बोध वाला साहित्य रचा जाएगा तो निश्चित ही हमारी सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने और संवारने का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस अवसर पर गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री पी.सी. त्रिवेदी, मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, सदस्य विधि आयोग न्यायमूर्ति श्री शिवकुमार शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रारम्भ में राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री वेद व्यास ने स्वागत करते हुए बताया कि अगले वर्ष अकादमी द्वारा तीन नये पुरस्कार दिए जाएँगे। उन्होंने बताया पहला पुरस्कार 40 वर्ष के युवा लेखक को 51 हजार रुपये की राशि का, दूसरा पुरस्कार राष्ट्रीय एकता पर आधारित हिन्दी भाषा में अनुवाद का तथा तीसरा पुरस्कार 51 हजार रुपये की राशि का साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों पर आधारित होगा। इसके अलावा उन्होंने बताया 3 लाख और 2 लाख रुपये की फैलोशिप भी प्रदान की जाएगी।

समारोह में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री जोशी और मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने कोटा के श्री अम्बिका दत्त को मीराबाई पुरस्कार, जयपुर के नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को सुधीन्द्र पुरस्कार, करौली के चरण सिंह पथिक को रांगेय राघव पुरस्कार, उदयपुर के कुंदन माली को देवराज उपाध्याय पुरस्कार, कोटा के जितेन्द्र निर्मोही को कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, जयपुर के बनज कुमार 'बनज' को सुमनेश जोशी पुरस्कार, अजमेर के उमेश कुमार चौरसिया को शंभूदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार, बीकानेर की नेहा चौहान को डॉ. सुधा गुप्ता पुरस्कार, उदयपुर की रूपल सोनी, ब्यावर के श्री नागेन्द्र अग्रावत व बीकानेर की कु. एकता राठौड़ को चंद्रदेव शर्मा पुरस्कार तथा उदयपुर की भानुप्रिया गौड़ को परदेसी पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने 'हमारे पुरोधा' प्रकाशन माला तथा वरिष्ठ लेखक श्री सवाई सिंह शेखावत पर केन्द्रित राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति के 88वें अंक की पुस्तकों का विमोचन किया। इस अवसर पर सांसद श्री अश्क अली टांक एवं जन प्रतिनिधियों के अलावा विभिन्न अकादमियों के अध्यक्ष, साहित्यकार, प्रशासनिक अधिकारी, लेखक, कवि, पत्रकार आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अन्त में अकादमी के सचिव डॉ. प्रमोद भट्ट ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का संचालन जनसम्पर्क अधिकारी श्री प्रभात गोस्वामी ने किया।

राज्यपाल ने किया साहित्य अकादमी का अवलोकन

महामहिम राज्यपाल राजस्थान श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा के दिनांक 19 जुलाई, 2012 को अकादमी में आगमन पर अकादमी अध्यक्ष श्री वेद व्यास द्वारा पुष्प भेंट कर तथा शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए अकादमी अध्यक्ष श्री वेद व्यास ने बताया कि महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा द्वारा अकादमी कार्यालय परिसर में 'पौधारोपण' किया गया। तत्पश्चात् महामहिम द्वारा अकादमी पुस्तकालय-वाचनालय और अकादमी परिसर का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर महामहिम ने उदयपुर के वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ मुलाकात की तथा साहित्यकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि साहित्यकारों की समाज सेवा और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि राजस्थान का साहित्य अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। यहाँ की भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला विविधता लिए हुए है। राजस्थान के साहित्य और संस्कृति से मेरा बहुत पुराना सम्बन्ध है और मैं इससे अभिभूत हूँ। उन्होंने इस अवसर पर अकादमी की योजनाओं और गतिविधियों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर प्रमुख शासन सचिव, कला, साहित्य, संस्कृति विभाग सुश्री गुरुजोत कौर, डॉ. दिव्य प्रभा नागर, श्री प्रफुल्ल नागर, श्री प्रफुल्ल प्रभाकर, अकादमी कोषाध्यक्ष श्री भोपाल सिंह चौहान, श्रीमती विमला भण्डारी (सलूम्बर), कर्नल देशबंधु आचार्य, डॉ. सुधा आचार्य, श्रीमती शकुन्तला सरूपरिया, श्री एम.डी. कनेरिया, डॉ. मंजू चतुर्वेदी, श्री कमर मेवाड़ी आदि साहित्यकार और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अकादमी सचिव डॉ. प्रमोद भट्ट ने किया।

–डॉ. प्रमोद भट्ट, सचिव
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

माह : सितम्बर, 2012 — प्रसारण समय : दोपहर 2.10 से 2.30 तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्यपुस्तक का नाम	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.09.2012	शनिवार	जोधपुर	5	सामाजिक विज्ञान	पर्यावरण अध्ययन प्रथम	3	उपभोक्ता की जागरूकता
3.09.2012	सोमवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	संसाधन एवं विकास	4	कृषि
4.09.2012	मंगलवार	बीकानेर	9	संस्कृत	शेमुषी - प्रथमो भागः	5	सूक्तिमौक्तिकम्
5.09.2012	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			शिक्षक दिवस
6.09.2012	गुरुवार	जोधपुर	10	सामाजिक विज्ञान	भारत और समकालीन विश्व-II	3	भारत में राष्ट्रवाद
10.09.2012	सोमवार	उदयपुर	9	हिन्दी	कृतिका भाग-1	4	माटी वाली
11.09.2012	मंगलवार	बीकानेर	9	सामाजिक विज्ञान	आपदा प्रबन्धन	5	क्या आप तैयार हैं? विद्यालयों और घरों में सुरक्षा के लिए युक्तियाँ
12.09.2012	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			बालिका शिक्षा आज की आवश्यकता
13.09.2012	गुरुवार	जोधपुर	6	विज्ञान	विज्ञान	4	वस्तुओं के समूह बनाना
14.09.2012	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम			हिन्दी दिवस
15.09.2012	शनिवार	बीकानेर	10	विज्ञान	विज्ञान	6	जैव प्रक्रम
17.09.2012	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			लड़का लड़की एक समान
18.09.2012	मंगलवार	जोधपुर	8	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन-III	4	कानूनों की समझ
19.09.2012	बुधवार	उदयपुर	10	विज्ञान	विज्ञान	4	कार्बन एवं उसके यौगिक
20.09.2012	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम			खेलकूद स्वास्थ्य के लिए कितना जरूरी
21.09.2012	शुक्रवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	अर्थशास्त्र	2	संसाधन के रूप में लोग
22.09.2012	शनिवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम			किशोर जागृति दिवस
24.09.2012	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम			संस्कार और सफलता
26.09.2012	बुधवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम			गुरु शिष्य परम्परा
27.09.2012	गुरुवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	समकालीन भारत-II	2	वन एक वन्य जीव संसाधन
28.09.2012	शुक्रवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम			जल संरक्षण कितना जरूरी
29.09.2012	शनिवार	उदयपुर	4	हिन्दी	हिन्दी	15	बालक चंद्रगुप्त

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, सोडावास में प्रवेशोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर नव प्रवेशित बच्चों का तिलक लगाकर और माला पहनाकर स्वागत किया गया। प्रधानाध्यापक बाबूलाल व्यास ने नव प्रवेशी बच्चों का मुँह मीठा करवाकर उन्हें निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें वितरित की।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डूंगरगांव, जिला झालावाड़ के छात्र हरिबल्लभ शर्मा को अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2011 में जिला स्तर पर कक्षा 12 स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने पर जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती गायत्री प्रजापति द्वारा सम्मानित किया गया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 10 अक्टूबर, 2012 को

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन 5 अक्टूबर को दोपहर 12 बजे से 1.00 बजे तक किया जाना निर्धारित था। (क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा/स/22448/99 दिनांक 3.5.12)।

परन्तु दिनांक 5 तथा 6 अक्टूबर को जिला स्तरीय शिक्षक सम्मेलन होने के कारण (क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/2012-13 दिनांक 13.8.12) अब भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन **10 अक्टूबर, 2012** को किया जायेगा।

गूंगी चीख

❑ रामनिवास शर्मा

संसार को धारण कर उसे निभाना माँ की मूरत है। माँ अपने माथे पर विराजमान चन्द्रघण्टा से दुश्मनों का संहार तथा अपनी संतानों के लिए पालना सजाकर कष्टों से निजात दिलाती है। देवकी के कोख से पैदा कृष्ण को उफनती यमुना से यशोदा के घर तक सुरक्षित नैया पार करवाने का नाम वसुदेव है। माँ वात्सल्य, निःस्वार्थ सेवा व समर्पण की त्रिपथगा है। इसके श्वांस व निःश्वांस में आशीर्वाद बरसता है। इसकी भाषा इतनी प्यारी जिसमें न शब्दों की जरूरत न जुबा का झंझट। वास्तव में ज्ञान की गरिमा, दर्शन की दिव्यता व चरित्र की चाँदनी माँ का दीदार है। किसी ने ठीक ही कहा है– *'ऊपर जिसका अन्त नहीं, उसे आसमां कहते हैं।/नीचे जिसके प्यार का अंत नहीं, उसे 'माँ' कहते हैं।'* और ऐसी ही प्यारी माँ के गर्भ से पैदा होती है कन्या। कः अन्या सः कन्या अर्थात् उस जैसा कोई दूसरा नहीं वही कन्या है। वह शक्ति की प्रतिछाया है। इसी से योजित होकर कोई शक्तिमान बनता है। इसके बिना शिव भी मात्र शव रह जाता है, शक्तिहीन में कोई हलचल संभव नहीं। समस्त चराचर जगत में अवस्थित वस्तुओं की स्थिति व गति के कारण ऊर्जा निहित है। अंगद की स्थिति के कारण रावण के दरबार में अंगद अंगद व अपनी गति से हनुमान पवनसुत हनुमान कहलाये पर अफसोस ! नवरात्रि में माँ से अपने प्रत्येक अंग की सुरक्षा की कामना करने वाले भी वासनायुक्त मानसिक उद्विग्नता के शिकार होकर दिग्भ्रमित होते जा रहे हैं। करणीय व अकरणीय में भेद किये बिना अवांछित को गले लगा रहे हैं। चारों ओर आसक्ति की आग धधक रही है। शक्ति (माँ) होकर शक्ति (कन्या) को मौत के घाट उतारने चल पड़ी है। 'माता कुमाता न भवति' के आदर्श को चारों कोने चित करने पर तुली है। पिता पालन-पोषण के बजाय भ्रूण हत्या करवाने चल पड़े हैं जैसे परमवीर चक्र जीतने। जिस धरा पर अंकुरित बीज नष्ट हो जाने के भय से चतुर्मास में घूमने तक में संयम बरता जाता हो, वहाँ पर ऐसा जघन्य अपराध।

बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रन्थहिं गावा। *(मानस 7/43/7)*

फिर अबोध, निरीह व बेजुबान गर्भस्थ कन्या पर वार .....।

उस कन्या का सबसे सुरक्षित स्थान गर्भ के प्रति अटूट विश्वास टूट चुका है। अहर्निश यही चिंता कि कब शबनम की यह बूँद मिट जाये। तभी तो वीभत्स चीत्कार 'गर्भ की कन्या करे पुकार, मेरी मैया मुझे न मार' सुनाई दे रही है। हे जननी ! मुझे बचाले। दुनियाँ का विश्वास न तोड़ कि जन्म से पहले माँ की कोख व दुनियाँ में आने के बाद आँचल सबसे सुरक्षित जगह है। उस माँ की कन्या भ्रूण हत्या की सहमति और चल पड़ी परिवारजनों के साथ गर्भ समापन के लिए। अरे ! अपने द्वारा स्थापित विष वृक्ष तक को नहीं काटा जाता फिर भ्रूण तो माँ-बाप दोनों द्वारा रोपित हैं। पर किसको सुनाऊँ मेरी व्यथा ? माँगने पर कलेजा भी देने वाली माँ भी आज! ऐसी क्या मजबूरी है माँ तेरी, यह तो बता ? डॉक्टर तुम तो भगवान माने जाते हो क्या तुम भी चंद पैसे की खातिर बिक जाओगे? क्या तुम ब्रह्म हत्या प्रूफ हो जो तुम पर पाप न चढ़ेगा? अरे मम्मी-पापा ! फाँसी दिये जाने वाले से भी उसकी अंतिम इच्छा पूछी जाती है पर तुम तो। सर्पिणी बन अपने घेरे में होने के कारण मत खाओ मुझे। माँ के रिश्ते को तार-तार न कर। अरे ! युद्ध में भी निहत्थे पर वार नहीं करते, भीष्म ने तो शिखण्डी के पूर्व जन्म में स्त्री होने पर भी बाण न चलाया था।

मुझे खत्म करने का भूत सवार हो ही गया है न। तो मैं दो मिनट के समय की भिक्षा माँग रही हूँ आप से। मुझे कुछ कहना है आपसे। मेरे शरीर के साथ अब क्यों होगा? थोड़ा पैसा और खर्च कीजिए, सी.डी. बनवा लीजिए इस घटनाक्रम की तो सुनिये मेरे जिस्म की स्थिति का आँखों देखा हाल, जब मैं इस दुनियाँ से जा रही हूँ। आज मुझे माँ तेरे गर्भ में आये दस सप्ताह हो चुके हैं। बिल्कुल चुस्त व दुरुस्त कन्या। अपनी माँ की कोख में करवट बदल-बदल कर खेल रही हूँ अपनी मस्ती में। कभी-कभी अँगूठा चूसने से भी नहीं चूकती। मेरे दिल की धड़कन सामान्य है। पर जब से आपने सोनोग्राफी करवाई है और परीक्षण के बाद मुझे मौत के घाट उतारने की सोची है। आप, पापा, दादी व बुआ के इस कृत्य से मेरे हृदय की धड़कन बढ़ चली है। आप जब घर से चले, रास्ते में पड़ौसी चाचा मिले, आपने सपरिवार मंदिर जाने की बात जब उनसे कही, मेरा दिल खिल उठा। सोचा शायद आपका मुझ अभागी पर नेह फूट पड़ा है। पर जैसे ही कसाई अंकल (डॉक्टर) के यहाँ पहुँचे, मुझे हलाल करवाने मेरे दिल की धड़कने तेजी से बढ़ने लगी हैं। जैसे ही डॉक्टर संक्शन पम्प से गर्भाशय की दीवार को छुएगा एकदम घूमकर सिकुड़ जाउंगी, वर्षा काल में निकलने वाली बूढ़ी माई की तरह। पहले वह बेदर्दी से मेरी कमर तोड़ देगा, फिर बेरहमी से पैर। इतने से जब जी न भरेगा, अब वह मेरे जिस्म की बोटी-बोटी कर नोच डालेगा। भूखे भेड़िये की तरह उस दरिंदे से छिप जाने के लिए घूम-घूम कर तड़फती हुई सिर को पीछे छटकूँगी। हो सका तो अन्तिम साँस लेते गाँधी की तरह हे राम ! भी कहूँगी। संडासी से सिर दबाकर हथौड़े से फोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। माँ तेरा लगाव न हुआ तो क्या मैं तो बेटी का धर्म निभाऊँगी। माँ-बाप के मरने के बाद। आज तक कपाल क्रिया का हक सन्तान का रहा है पर आप तो नया इतिहास रचने चले हो डॉक्टर से कपाल क्रिया करवाकर, वह भी चंद पैसे देकर। मेरे लिए तो माँ कफन भी न मिलेगा आपके पास। जालिम डाक्टर कचरे के साथ कुत्तों को डलवा देगा।

अब तो खुश हो ना आप सब मेरा यह हश्र देखकर। पर सावधान ! यह मत भूलो कि तुमने शक्ति को ललकारा है। तुम्हें सावचेत कर रही हूँ कि शैल (पत्थर) की कैला बनकर नाक रगड़ाऊँगी। हे दैत्यराज शिशुपाल ! अब तेरे करार पूरे हुए। शक्ति से बैर और फिर खैर? अब तुम सुख की नींद न सो पाओगे। चक्रधर तुम भी इतने निष्ठुर बन गये, क्या? सगर की तरह मेरी रक्षा नहीं कर सकते? 'करणी' की बुआ के हाथों की तरह डॉक्टर के हाथ नहीं बाँध सकते। कन्या तो शक्ति हैं। राम शक्ति पूजा न करते तो विजयदशमी कभी न मनाते। कन्या भ्रूण हत्या करना, उसमें सहयोगी बनना व राय देना कानूनन जुर्म है।

तो आइए ! शक्ति को नष्ट न करने का संकल्प लें।

–प्रधानाचार्य
रा.उ.मा. विद्यालय, दिसनाऊ, सीकर

हमारे मित्र जीवाणु

❑ राजश्री रानी भट्ट

ऐसे सूक्ष्म जीव जिसे सामान्य आँखों से नहीं देखा जा सकता जीवाणु कहलाते हैं। यह प्रकृति के अवयवों जैसे– जल, थल, वायु में हमारे दैनिक जीवन में काम आने वाले खाद्य पदार्थों में और शरीर के अन्दर सभी जगह उपस्थित रहते हैं। इनकी सूक्ष्मता का अनुमान इससे लग सकता है कि एक मिलीमीटर जगह में 1000 जीवाणु समा सकते हैं। हमारे शरीर में जीवाणु बहुत से अंगों जैसे– फेफड़ों, आँतों, मुँह, नाक और त्वचा पर सामान्यतः मौजूद रहते हैं।

लाभकारी जीवाणु हमारे मित्र होते हैं। आँतों में जीवाणु जब वृद्धि करते हैं तो हमारे भोजन अवशेषों को पचाने में न केवल मदद करते हैं, अपितु वे स्वयं ही पचकर हमारे शरीर के लिए बहुमूल्य विटामिनों के स्रोत भी बन जाते हैं। जैसे विटामिन बी कॉम्पलेक्स जो कि हमें अनेक रोगों से बचाता है। इसी प्रकार कोलन में अवशेष भोजन के पचाने में जीवाणु ई. कोलाई विटामिन 'के' और विटामिन 'बी' का संश्लेषण करते हैं। यह विटामिन रक्त द्वारा अवशोषित होकर शरीर के अन्य भाग में कोशिकाओं के उपयोग के लिए चले जाते हैं, तथा भोजन के पाचन में भी सहायता करते हैं।

शरीर में सामान्य रूप से रहने वाले जीवाणु का मानव स्वस्थता से सह-सम्बन्ध है। इनका सिद्धान्त होता है कि **'जीवित रहो - जीवित रहने दो'** इसी को सहजीवन कहते हैं। इसी सहजीवन का उदाहरण है आँखों में रहने वाला जीवाणु 'कोरीनो वैक्टीरियम' आँखों से उत्सर्जित होने वाला मल पदार्थ इनका भोजन है, परन्तु ये वहाँ रहकर भी आँखों को कोई हानि नहीं पहुँचाते हैं। परन्तु कुछ जीवाणु अवसरवादी (Opportunist) भी होते हैं जैसे बड़ी आँत में पाया जाने वाला जीवाणु ई.कोलाई-1 जब तक बड़ी आँत में रहता है, सामान्य बना रहता है, परन्तु शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली में कोई कमी आ जाए तो यह छोटी आँत में घुसकर 'अतिसार' और 'इन्टेराईटिस' उत्पन्न कर देता है।

इसी प्रकार त्वचा में रहने वाला जीवाणु 'स्टेफाइलोकोकाई' किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाता परन्तु यदि त्वचा कहीं कट जाए तो यह कटे हुए स्थान में घुसकर पीब बनाने लगता है। प्रतिदिन काम आने वाले कुछ खाद्य पदार्थ जैसे दही, डबलरोटी, पाव, सिरका, पनीर आदि उपयोगी जीवाणु की जटिल प्रक्रिया द्वारा बनाए जाते हैं।

हमारे चारों तरफ बिखरे पड़े गंदे, सड़े-गले पदार्थों एवं मलमूत्र आदि को लाभदायक बनाकर हमें स्वस्थ रखने में जीवाणु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अगर स्वच्छता उत्पन्न करने वाले जीवाणु इस पृथ्वी पर नहीं हों तो मानव चारों तरफ गंदगी के ढेरों से घिर जाए। कई जीवाणुओं से जीवन रक्षक दवाएँ 'एन्टीबायोटिक' जैसे पेनिसिलिन, टेरामाईसिन, स्टेप्ओमाईसिन, क्लोरमफेनिकोल आदि बनाए जाते हैं, जिनकी सहायता से जीवाणु जनित रोग प्लेग, टी.बी., कॉलेरा आदि से राहत मिलती है। गले की बीमारी तथा 'न्यूमोनियाँ' का रोग जो बच्चों में आम होता है का इलाज 'स्टेप्टोकाई' जीवाणुओं द्वारा निर्मित पेनिसिलिन एन्टीबायोटिक से किया जा रहा है।

अतः हमारे शरीर में प्रतिरक्षा प्रणाली एवं जीवाणुओं की रोगजनक क्षमता में एक प्रकार का संतुलन बना रहता है। अतः कुछ जीवाणु हमारे शरीर के सुरक्षाकर्मी हैं जो शरीर की रोगों से सुरक्षा करते हैं।

***

जीवनदायी तत्व : लौहतत्व

प्रकृति ने पृथ्वी में ऐसे तत्वों को संजो रखा है जिससे वनस्पति, पशु तथा मनुष्य तीनों ही समान रूप से लाभान्वित होते रहे हैं। मनुष्य की दिनचर्या, उसका खान-पान, रहन-सहन सभी कुछ सजीव जगत पर निर्भर है, यदि जन्तु जगत वनस्पतियों पर आश्रित है तो वनस्पति जगत मृदा पर।

लौह जैसा सूक्ष्ममात्रिक तत्व प्राणियों के पोषण में अत्यावश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्व है। लौह तत्व प्रोटीनों के साथ संयोग करके 'हीमोग्लोबिन' का निर्माण करता है, जो रक्त में ऑक्सीजन को संचारित करता है। यही ऑक्सीजन अन्य लौह प्रोटीन 'मायोग्लोबिन' में स्थानान्तरित हो जाती है। जहाँ ऑक्सीजन का उपयोग पेशीय कार्य करने में होता है। लोहे का शौषण सीधे अस्थिमज्जा में होता है या फिर इसका संचयन यकृत तथा प्लीहा में फेरेटिन यौगिक के रूप में होता है।

लौह तत्व की कमी से लौह न्यूनता रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसमें त्वचा का रंग पीला हो जाता है तथा पेशीक्षीणता आ जाती है तथा श्वाँस लेने में तकलीफ होने लगती है। सामान्य व्यक्ति में प्रति 100 एम.एल. में 12-16 ग्राम हीमोग्लोबिन रहता है। किन्तु एनीमिया होने पर इसकी मात्रा घटकर एक तिहाई रह जाती है। यदि यह कमी गर्भवती महिला में हो तो उससे उत्पन्न शिशु में लौह न्यूनता आ जाती है, और संतान एनीमियाँ रोग की शिकार हो जाती है। निम्न आयु वर्ग की गरीब माताएँ और बच्चे विशेष रूप से हीमोग्लोबिन की कमी के शिकार हो जाते हैं। अतः हमारे भोजन से शरीर को प्रतिदिन 10-15 मिली ग्राम लौह तत्व की आपूर्ति होनी चाहिए। यह आपूर्ति हरी पत्तेदार सब्जियों, फलों व संतुलित भोजन द्वारा की जा सकती है। इसी प्रकार पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए पत्तियों में 5 से 20 प्रतिशत तक लौह तत्व रहना चाहिए किन्तु जब पत्तियों में इसकी मात्रा कम हो जाती है तो पौधों में इसकी न्यूनता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं तथा पत्तियों में 'क्लोरोसिस' हो जाता है, लेकिन मुख्य शिरा तब भी हरी बनी रहती है। पत्तियों के डंठल छोटे तथा पतले पड़ जाते हैं, और 'रोजेटिंग' नामक रोग हो जाता है। पौधों में लौह न्यूनता का मुख्य कारण मृदा का अधिक क्षारीय होना है परन्तु कभी-कभी ताम्र चूना अधिक डालने से, फास्फेट उर्वरक की अधिक मात्रा मिलाने से भी क्लोरोसिस रोग हो जाता है। अतः मृदा में लवणों के संतुलन से इस रोग से बचा जा सकता है। इसलिए कहा जाता है कि प्राणियों का सारा सौन्दर्य इस काले-कलूटे लौह तत्व पर ही निर्भर है।

–व.अ.
रा.शि.प्र.वि., महापुरा, जयपुर

पुस्तक परिचय

लोकगीतां रै लेखै; *डॉ. किरण नाहटा; राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, नागरी भंडार परिसर, स्टेशन रोड, बीकानेर-334001; संस्करण : 2011; पृष्ठ संख्या : 120; मूल्य : 100 रुपये।*

लोक साहित्य के पेटे शुमार होने वाली विधाओं में लोकगीतों का स्थान सिरे माना जाता है। गीतों में संदेश तो होता ही है, इसके साथ ही उनमें सम्प्रेषण करने की ताकत भी निराली होती है। गीत न केवल उसमें समाहित संदेश को ही सम्प्रेषित करते हैं 'अपितु अन्तर्निहित मूल्य का भी बोध कराते हैं। लोकगीतों में उच्चतम गम्भीरता वाले गीतों से लेकर हृदय में आह्लाद भर देने वाले गीत तक होते हैं। गम्भीर कथानक वाले गीत जहाँ अश्रुधारा तक प्रवाहित कर देते हैं, वहीं आनन्द व उल्लास प्रकृति वाले गीत गाने व सुनने वालों को थिरकने-नाचने तक के लिए प्रवृत्त कर देते हैं। लोक साहित्य की एक लाखीणी विशेषता यह है कि वह कभी फूहड़ नहीं होता और यही कारण है कि लोकगीतमाला में सम्मिलित गीत केवल और केवल हँसने और गुदगुदाने तक सीमित रखते हैं। लोकगीतों में सगो-सगी के लिए गाए जाने वाले गीतों की शब्दावली व महिलाओं के द्वारा उनकी समवेत प्रस्तुति को पढ़ने पर लगेगा कि इन्हें प्रतिबन्धित कर दिया जाए लेकिन जब उन्हें गाया जाता है तो सुनने वालों, खासकर जिन्हें सम्बोधित कर गाया जा रहा है, चेहरे पर छाये उल्लास को सहज ही में अहसासा जा सकता है।

लोकगीतों की अनमोल विरासत को लोक कला मर्मज्ञ डॉ. किरण नाहटा ने पुस्तक 'लोक गीता रै लेखै' में प्रस्तुत करने का उत्तम प्रयास किया है। साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर नाहटा जी लोक कला व संस्कृति के क्षेत्र में समर्पित भाव से संलग्न हैं। ऐसे में आलोच्य पुस्तक की अधिकारिता के सम्बन्ध में कोई सवाल नहीं है। वस्तुतः इस पुस्तक में सात महत्त्वपूर्ण विषय चिह्नित कर उन पर आलेख दिए गए हैं। 'घुड़लो : साच अर प्रवाद' आलेख में घुड़ले खां की हमारे लोकमानस में व्याप्त कथा से इतर गुजराती गरबा नृत्य को प्रकाश में लाया गया है। यह नई खोज पाठकीय जिज्ञासा को बढ़ावा देने वाली है। घुड़लो गीत पाठान्तर उद्धृत किया गया है। आलेख चिन्तन-मनन हेतु स्वयं निमंत्रण देता है।

राजस्थानी रो अेक बधावो : थांने सुख री घड़ी तथा सुपने रो बधावो अर गुजराती रास दोनों ही निबंध तथ्यों से लड़ालूम हैं। गीतों की यह गहराई गीतों के प्रति हमारे आत्मीय भाव को बढ़ाने वाली है। लखपत गीत बड़ा मार्मिक गीत है जिसका बहुत सुन्दर तथ्यात्मक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है। बाल्मीकि रामायण में सीता को वन में भिजवाने की घटना का दाँतण आलेख में तथा बिन्नाणीड़ै गीत आलेख में विज्ञान की अवधारणाओं पर विचार करने का आमंत्रण दोनों ही आलेख कथ्य तथा प्रस्तुति की दृष्टि से खूबसूरत बन गए हैं।

अन्तिम आलेख राजस्थानी हरजस बड़ा मार्मिक आख्यान लिए हैं। परिवार में किसी बूढ़े-बडेरे के स्वर्गवास को किस तरह समारोह का रूप दिया जाता है। रोने विलाप करने के स्थान पर हरजस गाए जाते हैं। विशेषकर दिवंगत आत्मा के सांसारिक रिश्तों में बेटों-पोतों के ससुराल पक्ष से किस प्रकार बड़ी संख्या में आदमी और औरतें मोकाण के लिए आते हैं और कैसे समवेत स्वर में हरजस गाकर दिवंगत के प्रति शुभकामनाएँ करते हैं; इसकी बड़ी सुन्दर झाँकी इस आलेख में देखने को मिलती है।

सारतः पुस्तक लोकगीतां रै लेखै लम्बी साधना अथक परिश्रम एवं शोध व अनुसंधान का परिणाम है जो लेखक के अध्ययन व चिन्तन की गहराई तथा खोजी दृष्टि को एक साथ प्रमाणित करती है। लोक साहित्य एवं संस्कृति के भण्डार में इजाफा करने वाली इस कृति को बार-बार पढ़ना चाहिए। पाठकों के पास यदि इन संदर्भों में कोई अतिरिक्त जानकारी हो अथवा मिले तो उसे लेखक महोदय तक सम्प्रेषित किया जाना चाहिए। यह लोक साहित्य संवर्द्धन यज्ञ में उनकी ओर से आहुति होगी।

पुस्तक का मुद्रण साफ सुथरा व त्रुटिमुक्त है। समग्र प्रस्तुति सुन्दर है। मूल्य उचित है।

–ओमप्रकाश सारस्वत
वरिष्ठ संपादक (शिविरा)

निंवण (व्यंग्य संग्रै); *देवकिशन राजपुरोहित; राजपुरोहित प्रकाशन, 'सूर्य सदन', चम्पाखेड़ी, वाया- रैण, जिला नागौर; संस्करण : 2012; पृष्ठ : 126; मूल्य : 150 रुपये।*

राजस्थानी भाषा-साहित्य में रची 'निंवण' पुस्तक पढ़ने को मिली। पुस्तक के लेखक राजस्थानी एवं हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री देवकिशन राजपुरोहित हैं। पुस्तक में लगभग 35 व्यंग्य राजस्थानी भाषा में लिखे हुए हैं जो अपने आप में उपलब्धि मूलक है। विषयवस्तु की दृष्टि से देखा जाये तो लगता है कि श्री राजपुरोहित का अनुभव-संसार विस्तृत है तथा अनुभूत सत्य को उजागर करने में वे दक्ष रहे हैं।

काव्य-शास्त्रीय परम्परा के आधार पर देखा जाय तो काव्य में मूलतः नौ रस निर्देशित हैं, जिसमें हास्य रस की प्रधानता रही है। हास्य के साथ व्यंग्य को समाहित करने से वह हास्य-व्यंग्य प्रधान रचना बन जाती है। हास्य रस मनोरंजनार्थ एवं मन को प्रसन्नता दिलाने के लिए लिखा जाता है। हिन्दी साहित्य में इसकी परम्परा काफी लम्बी रही है। हास्य एवं व्यंग्य प्रधान कविताएँ एवं गद्य भी प्रचुर मात्रा में अवलोकनीय है। कोरा व्यंग्य तो व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं एवं कुरीतियों तथा आपाधापी से युक्त व्यवस्था पर गहरा आघात अथवा चोट पहुँचाता है। संभवतः इसका तीखापन किसी के हृदय में शूल की तरह चुभ सकता है।

पुस्तक में व्यंग्य विधा के महानायकों में देवर्षि नारद को इसका प्रमुख सूत्रधार माना गया है। रहस्याति रहस्य एवं गुह्याति गुह्य को प्रकट कराने की क्षमता उस महान् ऋषि में बतलाई गई है। चूँकि पुस्तक के लेखक श्री राजपुरोहित स्वयं पत्रकार, लेखक एवं निर्भीक व्यक्तित्व के धनी रहे हैं तथा राष्ट्र के विभिन्न महानगरों, नगरों, कस्बों एवं गाँवई स्तर पर भ्रमण करते हुए विभिन्न जगहों की विभिन्न समस्याओं, दुःख-दर्द, उत्पीड़न, शोषण, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार एवं कालाबाजारी को बारीकी से देखा है तथा उसे यथार्थपरक रूप में अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है, जिसमें भारतीय एवं राजस्थानी परिवेश को भी अनुभूत सत्य के रूप में उजागर करने की लेखकीय कौशल को दरसाया है।

राजस्थानी गद्य-विधा में व्यंग्य-लेखन हुआ तो है, लेकिन श्री राजपुरोहित की दृष्टि भी विविध आयामी रही है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से देखा जाय तो भी लेखक की भाषागत विशेषता उनके भावों को सम्यक् सम्प्रेषण करने में सटीक एवं समीचीन रही है। 'निंवण' शीर्षक व्यंग्य में लेखक ने सभी वर्गों को 'निंवण' किया है वह भी व्यंग्यात्मकता को उभारते हुए है। लेखक, कवि, आलोचक, समालोचक,

प्रकाशक और पाठकवर्ग तक को अपनी व्यंग्यात्मक भाषा में स्पर्श किया है, अतः 'निंवण' रचना चमत्कार मूलक है।

विशेषतः पठनीय व्यंग्यों में 'निंवण', म्है आजाद हा जिनावरां री पंचायत, भोपो जी, दायजो, पुलिस थाणो, पढ़ाई री दुकान, सगाई में ठगाई, सवामणी आदि उल्लेखनीय हैं।

शहरों, गाँवों और कस्बों में अद्यावधि कुरीतियों, अंधविश्वास, जादू-टोनों, शकुन-अपशकुन के आधार पर जीवन-जीने के तरीके मौजूद हैं। वैज्ञानिक युग में भी शिक्षित-अशिक्षितों की ऐसी सोच आश्चर्यजनक है। आज के डॉक्टरों, निज शिक्षण संस्थानों और मिलावटी व्यवहार पर भी लेखक ने अपनी कलम की तीख दरसाई है। 'निंवण' व्यंग्य में लेखक लिखते हैं– म्हैं/उणां/पुस्तकालयां रा/धणियां नै। 'निंवण' करूँ, जिका/तीस टका/देय'र/सितर टका/खुद ई अरोग्या।

इस प्रकार 'डॉक्टर' में व्यंग्य वाण बरसाते हुए कहते हैं, डॉक्टर/राज रा/सफाखाना में/ नौकरी करे/आपरेसन/निजू सफाखानां में जाय'र करै/धिन है / डाक्टरां नै/जिका सगळी/ नैड़ सूं रिपिया ई/रिपिया खांचैं।

कानून और मर्यादाओं का उल्लंघन करते हुए आज की पीढ़ी संस्कार च्युत होती जा रही है जिस पर लेखक ने व्यंग्य करते हुए लिखा है– 'म्हैं/देसरा/कानूनी तोड़ां/ कानूनी बणै ई/ तोड़ण साख है/म्हें/आजाद हां/म्हैं/धरम रा/ औतार हां।

'ब्याव रा दलाल' व्यंग्य बखत-बखत की बातों का अनुभव दरसाते हैं। 'छोरी/अर/छाछ/ मांगण री/कोई/भैणी रोनी।' कहावत को परम्परागत पीढ़ी का हवाला देते हुए बतलाया है कि सामाजिक बदलाव के साथ-साथ सभी फार्मूलों में परिवर्तन आ गया है, किन्तु दलाल की दलाली पक्की लगती है। 'मांगणो' व्यंग्य सामाजिक विद्रूपता एवं विसंगतियों पर प्रभाव डालते हुए यथार्थपरक लिखा गया है जिसमें लोग चन्दा माँगने, रसीद बुकें प्रकाशित करवाने एवं धन एकत्र करने वाले माहिर लोगों पर करारा व्यंग्य प्रहार है। माँगकर खाने के अभ्यस्त लोग श्रमशील एवं पसीने की कमाई करने वालों से कहीं परे हटाते हैं। लेखक लिखते हैं– 'आवौ आपां मांगण माथै पीएच.डी. करां' पंक्तियाँ युग-यथार्थ को प्रकट करती हैं।

बीनणी रो सिणगार, सगाई में ठगाई, चपड़ो टाबर-बदळी, पढ़ाई री दुकान, सवामणी, जानी, पाणी-रोसणी अर छुट्टी आदि व्यंग्य सामाजिक व्यवस्था एवं दुर्दशा पर यथातथ्य वर्णित हैं।

श्री देवकिशन राजपुरोहित की 'निंवण' पुस्तक में कथ्य एवं शिल्प के साथ-साथ भाषायी सरलता, सुगमता, छोटे-छोटे वाक्य-गठन, प्रचलित मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग बन पाया है। पुस्तक हेतु लेखक एवं प्रकाशक दोनों ही बधाई के हकदार हैं। पाठकवर्ग भी इस पुस्तक का आदर-सत्कार करेंगे, क्योंकि यह विशिष्ट रूप में पठनीय एवं आकर्षणयुक्त है। भाषा-प्रवाह में गतिशीलता है। श्री पुरोहित एतदर्थ बधाई के पात्र हैं।

–शिवराज छंगाणी
नत्थूसर गेट के भीतर, बीकानेर (राज.)

मन में ही रेगी; *श्रीनिवास तिवाड़ी; राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट, जोधपुर; संस्करण : प्रथम, 2011; पृष्ठ : 80; मूल्य : 150 रुपये।*

कविता आत्मा का दर्पण होती है, जब बहुत दिनों तक जमीन में दबा बीज अंकुरित होता है उसी प्रकार कवि की दबी भावनाओं का प्रस्फुटन भी काव्य का रूप लेता है। समीक्षित कृति 'मन में ही रेगी' राजस्थानी भाषा में रचित श्रीनिवास तिवाड़ी की प्रथम रचना है। इस पुस्तक में राजस्थानी भाषा में लिखी 38 कविताओं का समावेश है जो किशोर वय को खटास व मिठास में संदेश सम्प्रेषण करती है। इनकी कविता में दर्द, हास्य एवं व्यंग्य मर्मस्पर्शी है जो कि हृदय को अन्दर तक झकझोर देती हैं। कवि आपको प्रत्येक कविता में समाज में व्याप्त कुरीतियों, राजनीति में भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से कलम से युद्ध करता है।

कविता 'मिली-जुली सरकार' में महँगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी को छन्दों में पिरोई है तो 'चुनाव चंवरी में चुनावी गतिविधियों को चुनावी दंगल में विजित व पराजित की जिन्दगी पर कटाक्ष रा ढकणां खोलेला। केया रा घर बण ज्यावेला, कंई सड़का पर आवेला।'

'गरीब' में गरीब अपना दुखड़ा व्यक्त करता हुआ अमीर से पूछता है आप गरीब कहने वाले हो कौन? और यदि हो तो 'थे ..... ओ म्हारो वादो है' में जार-जार रोया है व रुलाया है। समय चक्र ऐसा होता है कि कोई उसमें समान भाव से नहीं रहता है। उसमें परिवर्तनशीलता की झलक मिलती है जिन्दगी को संदेहास्पद, अनिश्चितता का प्रतिबिम्ब है, वास्तविकता से दूर अवास्तविकता के बिम्ब की फटकार है 'टेम री फटकार' में। कवियों के जीवन का वर्तान्त 'कवियां री जीत' में इस प्रकार निरूपित किया है– *'साचो कवि जनम से दुखियारी होया करे है।/क्यूं के दुखियारी जीव के तो कवि बणे है के बावोजी बणे हैं, अर घणों ही आंती आयोड़ी सुसाईड करे है।'*

वहीं 'टाबर पणों' में कवि अपने बचपन की याद को ताजा कर-करके पुरानी यादों के चित्रों में खो जाता है। देश स्वतंत्र होते हुए भी मनुष्य को मनुष्य से डर लग रहा है मनुष्य को 'डर लागण लाग्यो है' में दहेजवाद, भ्रष्टाचारवाद आतंकवाद की जंजीरों से जकड़ कर परतंत्र बना दिया है। वहीं महँगाई की असीम छाँव में आदमी को रोता बिलखता दिखाया गया है। 'मुंग्योडो' में रहन-सहन, खान-पान में महँगाई की मार को पैनी धार में पिरोया गया है। कवि श्रीनिवास ने वर्तमानकालीन प्रेम व सहानुभूतियों पर फबतियाँ कसी है मानव की स्वार्थपरक प्रेम भावनाओं को शीर्षक 'लव' में इस प्रकार उजागर किया है–

'लोगां सु करे है पण माया सु नहीं करे है।
कुत्ता सुं करे है पण गायां सु नहीं करे है।।'

'जीवणों ढोरो होग्यो' में पूर्वकालीन व वर्तमानकालीन सामाजिक व आर्थिक विषमताओं का एवं 'हारयोडां री हालत' में हारने व जीतने वालों के मध्य अन्तर को बखूबी संजोया गया है। जहाँ 'टेमपास' में हास्य लघु नाटिका प्रस्तुत की गयी है वही 'शौक-शौक' में 'अमल', 'दारू', 'गुटखा', 'बीडी-सिगरेट' के माध्यम से क्षणिकाओं का रूप नजर आता है। 'केबता' में श्रीनिवास ने तो कहावतों की जुगलबन्दी करके कविता में भाव सौन्दर्य पैदा कर दिया।

सभी कविताओं में सत्यता एवं वास्तविकता को बहुत गहराई से रेखांकित किया गया है। सभी वर्गों को संदेश देकर यह काव्य संग्रह खटास व मिठास से भरपूर है। कुछ कविताओं में राजनैतिक उठापटक की झलक दिखाई देती है। लगभग सभी कविताएँ हास्य रस से रसाच्छादित है। पुस्तक का पेपर व मुद्रण अच्छा है।

–सुशील निर्वाण C/o श्री बजरंग लाल निर्वाण
'प्रभु कुंज' बापा सेवा सदन सी.सै. स्कूल के पास,
आदर्श कॉलोनी, बीकानेर रोड, सरदार शहर, चूरू

सांस थमने के बाद भी सुरक्षित रहेंगे कई अंग

लंदन। वक्त पर डोनर न मिलने के कारण कई किडनी रोगियों की जान चली जाती है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने ऐसे लोगों को जिंदगी का तोहफा देने का नया तरीका खोज निकाला है।

उन्होंने एक खास उपकरण बनाया है, जो सांसें थम जाने के बाद भी शरीर में मौजूद विभिन्न अंगों को जिंदा रखता है। इससे मृतकों के सुरक्षित अंगों का इस्तेमाल ट्रांसप्लांट की बाट जोह रहे मरीजों में किया जा सकेगा। बर्मिंघम स्थित क्वीन एलिजाबेथ हॉस्पिटल के शोधकर्ताओं ने इस खोज को अंजाम दिया। उन्होंने एक्स्ट्रा कॉरपोरियल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन (ईसीएमओ) नामक उपकरण के जरिए एक मृत व्यक्ति के पेट में खून की सप्लाई जारी रखी, जिससे उसका लिवर, किडनी और अग्नाशय सुरक्षित रहे। इसके बाद ये अंग उन मरीजों में सफलतापूर्वक प्रतिरोपित कर दिए गए। शोधकर्ता पाउलों ने बताया, ईसीएमओ एक पंप और मेंब्रेन ऑक्सीजनेटर से लैस है। इसमें लगे हीटर मशीन को जरूरी तापमान देते हैं, जिससे पेट में रक्त प्रवाह सुचारु रूप से होता है।

इंजेक्शन का डर खत्म कर देगी नई डिवाइस

नई दिल्ली। यदि आप इंजेक्शन से डरते हैं या मजबूरी में दिन में एक से अधिक इंजेक्शन लेना पड़ता है तो परेशान न हों। आईआईटी दिल्ली की ट्रांसडर्मल डिवाइस इंजेक्शन के दर्द से छुटकारा दिलाने के साथ अपकी सेहत भी दुरुस्त रखेगी।

आईआईटी दिल्ली के बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग ने 'इलेक्ट्रिकली इनहैंस्ड नीडल फ्री ट्रांसडर्मल ड्रग डिलीवरी' नाम से एक डिवाइस बनाई है। इसे रोगी को घड़ी की तरह कलाई पर बाँधना होगा। इससे बिना इंजेक्शन लगाए दवा शरीर में पहुँच जाएगी। बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग की प्रोफेसर स्नेह आनंद ने बताया कि इस उपकरण में खास तरह से बेहद हल्की बिजली प्रवाहित होगी, जिससे बिना झटका दिए दवा त्वचा में गहराई तक चली जाएगी। बिजली की तरंग के चलते दवा एक जगह जमा न होकर शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहुँचेगी और त्वचा पर कोई दाग भी नहीं पड़ेगा। बकौल आनंद उपकरण में केमिकल इन्हेंसर डाला गया है जिससे कम मात्रा में भी दवा का ठीक प्रभाव बना रहे। अमूमन साधारण तरीके से दवा लेने पर यह विभिन्न माध्यमों से होती हुई लीवर तक पहुँचती है। ऐसे में मरीज को आराम देर से मिलता है। इस उपकरण को इसलिए लीवर बाईपास कहा गया है, क्योंकि यह शरीर के बीमार हिस्से में सीधे दवा पहुँचाती है जिससे मरीज को जल्दी आराम मिलता है। डिवाइस का चूहे, खरगोश पर परीक्षण किया जा चुका है। इसे मानव पर ट्रायल के लिए भेजा गया है।

आपके पास न फटकेगा बुढ़ापा

रोम। वैज्ञानिकों ने बुढ़ापे की रफ्तार पर ब्रेक लगाने वाला प्रोटीन खोज निकाला है। इटली स्थित टेरेमो यूनिवर्सिटी के हालिया अध्ययन से पता चला है कि अंतरिक्ष यात्रा के दौरान खगोलविदों के शरीर में मौजूद '5-लाइपॉक्सीजिनेज' प्रोटीन अधिक सक्रिय हो जाता है। इससे प्रतिरोधी तंत्र की कोशिकाएं नष्ट होने लगती हैं और बीमारियों से लड़ने की क्षमता घट जाती है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक अगर '5-लाइपॉक्सीजिनेज' की क्रिया पर लगाम कसने की विधि खोज ली जाए, तो बुढ़ापे को बाय-बाय कहना मुमकिन हो सकेगा। उन्होंने बताया कि चूँकि अंतरिक्ष यात्रा के दौरान खगोलविदों को स्वास्थ्य सम्बन्धी उन्हीं परेशानियों से जूझना पड़ता है, जो पृथ्वी पर बुढ़ापे की शुरुआत से जुड़ी हैं। ऐसे में नई खोज इंसान को ताउम्र जवां रखने में भी मददगार साबित होगी। इससे ऐसी दवाओं के निर्माण का रास्ता खुलेगा, जो प्रतिरोधी तंत्र को मजबूत बनाकर स्वस्थ और लम्बी उम्र की गारंटी देंगी। प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर मॉरो मैक्कारोने ने दो स्वस्थ लोगों के खून से प्राप्त लिंफोसाइट के जरिए '5-लाइपॉक्सीजिनेज' की खोज की। इनमें से एक व्यक्ति के लिंफोसाइट को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर मौजूद गुरुत्वाकर्षण के संपर्क में रखा गया। जबकि दूसरे व्यक्ति के लिंफोसाइट को एक सेंट्रीफ्यूज में रखा गया, जिससे वह अंतरिक्ष के वातावरण में तो था, लेकिन उसका गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी जितना था। मैक्कारोने ने बताया कि जब दोनों नमूनों में मृत कोशिकाओं की संख्या गिनी गई, तो आईएसएस के गुरुत्वाकर्षण में रहने वाले लिंफोसाइट में यह अधिक थी। पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में रहने वाले लिंफोसाइट की कोशिकाओं में कोई खास अंतर नहीं दिखा। इसकी वजह '5-लाइपॉक्सीजिनेज' प्रोटीन था। उन्होंने कहा कि चूँकि इंसान पृथ्वी पर बसने के लिए बना है, ऐसे में यह जानकर हैरानी नहीं हुई कि शरीर को ठीक से काम करने के लिए पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में रहने की जरूरत है। जैसे ही वह दूसरे ग्रहों पर जाता है, उसकी सेहत गिरने लगती है। लेकिन अब जबकि हम अंतरिक्ष के गुरुत्वाकर्षण से निपटने का जरिया खोज चुके हैं, तो पृथ्वी पर भी लम्बी उम्र की गारंटी देने वाली दवाओं का निर्माण हो सकेगा।

राख और प्लास्टिक वेस्ट से बनेंगी सड़कें

नई दिल्ली। केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) ने प्लास्टिक वेस्ट और राख के मिश्रण से सड़क निर्माण की नई तरकीब खोज निकाली है। यह मिश्रण तारकोल और सीमेंट, दोनों तरह की सड़क के निर्माण में इस्तेमाल किया जा सकता है। चूने के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले इस मिश्रण से सड़क निर्माण का खर्च 6 फीसदी कम हो जाएगा। सीआरआरआई ने अपनी खोज का पेटेंट कराने के लिए आवेदन कर दिया है।

बता दें कि अभी तक तारकोल की मदद से बनाई जाने वाली सड़कों में चूने को फिलर के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि यह सड़क निर्माण सामग्री का 5-10 फीसदी हिस्सा होता है, लेकिन इससे खर्च बढ़ जाता है। सीआरआरआई के वैज्ञानिकों ने अब चूने

के विकल्प के रूप में प्लास्टिक वेस्ट और राख के मिश्रण को तलाशा है। रोड चाहे तारकोल की हो या फिर सीमेंट-कंक्रीट की, इस मिश्रण को दोनों तरह की सड़कों में प्रयुक्त कर सकते हैं। प्लास्टिक वेस्ट और राख से निर्मित सड़क पर पानी का असर कम होता है और दरार आदि नहीं पड़ती है।

इस तरह प्रयुक्त होगा यह मिश्रण : वैज्ञानिकों के मुताबिक, तारकोल की एक किलोमीटर लम्बी, सात मीटर चौड़ी और 40 एमएम मोटी रोड बनाने में 31 टन राख व 3.1 टन प्लास्टिक वेस्ट प्रयुक्त होगा। सीमेंट-कंक्रीट वाली रोड है तो उसमें 62 टन राख और 6.2 टन प्लास्टिक वेस्ट लगेगा। इस तरह सड़क निर्माण में उक्त मिश्रण का इस्तेमाल कर चूने की एक बड़ी मात्रा बचाई जा सकती है। इसके अलावा बड़े शहरों में कूड़ा-करकट डालने के लिए डंपिंग ग्राउंड के रूप में जो भूमि प्रयुक्त होती है, वह भी बचाई जा सकेगी। डंपिंग की समस्या हल होने के अलावा प्रदूषण से भी निजात मिलेगी।

सीआरआरआई के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पी.के. जैन का कहना है कि 23-24 मार्च को कोटायम (केरल) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इस नई खोज से सम्बन्धित दो पेपर प्रस्तुत किए गए हैं। अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने इस खोज की सराहना की है। इसके अलावा कंस्ट्रक्शन एंड बिल्डिंग मैटीरियल संस्थान (यूके) ने भी इस प्रोजेक्ट को हरी झंडी दे दी है। पेटेंट कराने के लिए आवेदन कर दिया गया है।

रंगीन रोशनी से दूर हो सकेंगी बीमारियां

लंदन। प्रकाश जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और पोषण में प्रकाश की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। पृथ्वी पर ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत भी सूरज का प्रकाश ही है।

प्रकाश के साथ जीवन का यह तारतम्य अलग-अलग रोगों के उपचार में भी कारगर साबित हो सकता है। जी हाँ, शोधकर्ताओं ने पीठ के दर्द से लेकर कैंसर तक के इलाज में प्रकाश की नई-नई भूमिकाओं की तलाश की है।

नीली रोशनी : नीली रोशनी का प्रयोग पीठ दर्द के उपचार में किया जा सकता है। शरीर पर जैविक प्रभाव डालने के लिए नीली रोशनी बेहद महत्वपूर्ण होती है। यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल ऑफ हेडलबर्ग के डॉक्टरों ने पीठ दर्द के इलाज के लिए नीली रोशनी डालने वाले उपकरण को विकसित किया है। नीली रोशनी डालने से शरीर में नाइट्रिक ऑक्साइड का स्राव होने लगता है। इससे मांसपेशियों को आराम मिलता है। दूसरी ओर, सांस लेने में होने वाली तकलीफ का उपचार भी नीली रोशनी के जरिए हो सकता है।

इंफ्रारेड प्रकाश : इंफ्रारेड प्रकाश से मस्तिष्काघात का उपचार किया जा सकता है। बोस्टन व हावर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक इससे दिमाग की कोशिकाओं को बढ़ने में मदद मिलती है। शोध के मुताबिक लाइट थेरेपी मस्तिष्काघात से पीड़ित व्यक्ति की हालत में सुधार करती है।

अल्ट्रा वॉयलेट प्रकाश : अल्ट्रावॉयलेट प्रकाश को आमतौर पर त्वचा के लिए नुकसानदायक माना जाता है। लेकिन, नए शोध बताते हैं कि इनका सीमित मात्रा में इस्तेमाल त्वचा की कई बीमारियों से बचा सकता है। बेल्जियम की यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल गास्तेसबर्ग के शोधकर्ताओं के मुताबिक एक्जिमा, मुंहासे जैसी बीमारियों से छुटकारा दिलाने में अल्ट्रावॉयलेट प्रकाश महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

लाल रोशनी : स्काटहोम की हर्डिंग यूनिवर्सिटी हास्पिटल के शोध के मुताबिक डायबटिक फूट अल्सर या प्रेशर अल्सर जैसी कई बीमारियों का इलाज भी इस लाइट थेरेपी की मदद से किया जा सकता है।

बिना चीरा लगाए बदल गया दिल का वाल्व

नई दिल्ली। वाल्व प्रत्यारोपण के लिए दिल के मरीजों को अब ओपेन हार्ट सर्जरी नहीं करानी होगी। एंजियोप्लास्टी की तरह ही बिना चीरा लगाए खराब वाल्व की जगह नये वाल्व को पहुँचा दिया जाएगा। इस प्रक्रिया से दिल में खराब पड़ा वाल्व भी बिना सर्जरी के घुलकर अपने आप बाहर आ जाएगा। पूरी प्रक्रिया के लिए मरीज की जांघ के पास केवल छह एमएम का छेद किया जाएगा।

ट्रांसकैथेटर एआर्टिक वाल्व इंप्लांटेशन (तावी) से फोर्टिस एस्कार्ट विधि में पहली बार तीन मरीजों का ऑपरेशन किया गया। तीनों मरीज 70 साल से अधिक उम्र के थे। कार्डियक सर्जरी डॉ. अशोक सेठ ने बताया कि अधिक उम्र में वाल्व प्रत्यारोपण में सबसे अधिक जोखिम होता है। ओपेन सर्जरी होने के कारण अधिक खून बहने का डर रहता है। इसके साथ मरीज को एक से दो महीने बेड रेस्ट लेना पड़ता है। इसका बेहतर विकल्प तावी को माना गया है। बीते सप्ताह तीन मरीजों का इस विधि से वाल्व प्रत्यारोपित किया गया। एआर्टिक स्टेनोसिस बीमारी में वाल्व खराब होने के कारण दिल में खून की पंपिंग का काम नहीं हो पाता है। 70 से 75 साल की उम्र में इस स्थिति में मरीज की दस से पन्द्रह मिनट में जान भी जा सकती है, जबकि तावी विधि के जरिए सर्जरी कर खतरे को दूर किया जा सकता है। लम्बे समय से की जा रही मांग के बाद भी डीजीसीआई ने निर्धारित मानकों का पालन करते हुए ही ट्रांसकैथेटर एआर्टिक वाल्व इंप्लांटेशन की इजाजत दी है। इसमें दिल के बुजुर्ग मरीजों को प्राथमिकता दी गई है। इनमें ओपेन हार्ट सर्जरी से होने वाले खतरे अधिक रहते हैं।

तीन मरीजों का हुआ ऑपरेशन : ओखला निवासी 72 वर्षीय पृथ्वीनाथ मेहरा वर्ष 2000 कार्डियोवॉस्कुलर बीमारी से पीड़ित थे। सर्जरी के बाद पृथ्वीनाथ अब स्वस्थ हैं। ट्रांसकैथेटर से वाल्व प्रत्यारोपण का दूसरा ऑपरेशन आईपी एक्सटेंशन निवासी जीपी मोरगानी का किया गया, 80 वर्षीय मोरगानी छह साल से सीएडी बीमारी से पीड़ित थे। तीसरा ऑपरेशन करावल नगर निवासी आलोका देवी का किया गया, 71 वर्षीय आलोका देवी डायबिटीक थी, इसलिए उनमें ओपेन हार्ट सर्जरी करने में अधिक खतरा था।

सीकर

रा.उ.मा.वि., कूदन में श्री सोहनलाल शर्मा द्वारा 55,000 रुपये की लागत से टंकी का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि., खण्डेला** को श्री बंशीधर बाजिया से 200 सैट स्टील टेबल-स्टूल लागत 2,49,000 रुपये, श्री हरिचन्द नाननोली से 20 छत पंखे लागत 24,000 रुपये, श्री पूनमचन्द जैन से 5 छत पंखे लागत 6,000 रुपये, सर्वश्री सुलतानराम पालीवाल, सदीक खान से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा लागत प्रत्येक की 1200 रुपये। **रा.उ.मा.वि., गुरारा** में श्री रामस्वरूप अग्रवाल 2,00,000 रुपये की लागत से कक्षा-कक्ष एवं बरामदा के फर्श का निर्माण करवाया गया, 100 सैट स्टूल-टेबल लागत 1,00,000 रुपये, 9 किवाड़ों की जोड़ी लागत 54,000 रुपये, 9 खिड़की जोड़ी लागत 18,000 रुपये, बैडमिंटन खेल मैदान का निर्माण लागत 1,00,000 रुपये, हारमोनियम लागत 5,000 रुपये। **श्री हरदेवदास अग्रवाल रा.उ.मा.वि., फागलवा** में श्री प्रह्लादराम अग्रवाल (भू.पू. जज, गोवाहटी हाईकोर्ट) अध्यक्ष, फगलवा फाउण्डेशन, गोवाहटी द्वारा 3,50,000 रुपये की लागत से विद्यालय भवन की छत मरम्मत एवं 12 हजार वर्गफुट क्षेत्र में टाइल्स, खेल मैदान का समतलीकरण लागत 3,00,000 रुपये, भवन का सौन्दर्यकरण एवं अन्य मरम्मत लागत 2,00,000 रुपये, सम्पूर्ण भवन में नई विद्युत फिटिंग 1,00,000 रुपये, ऑरियण्ट कम्पनी के 40 पंखे लागत 55,000 रुपये, माइक सैट लागत 9,000 रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि., कांवट** को श्री प्रकाश चन्द पौद्दार से एक वाटर कूलर लागत 29,450 रुपये, श्री मोतीलाल चांदमल से विद्यालय गणवेश (41 छात्रा) लागत 21,000 रुपये, श्री रूडमल कालोया से 12 छत पंखे लागत 2,600 रुपये। **रा.मा.वि., नाडी** को श्री दीपचन्द हवलदार से 60 सैट टेबल-स्टूल लकड़ी के लागत 51,000 रुपये। **रा.मा.वि., धाननी** को श्री सवाईदान दैथा से 45 सैट टेबल-स्टूल लागत 38,250 रुपये, श्री बनवारी लाल केड़िया से 45 सैट टेबल-स्टूल लागत 41,000 रुपये, जनसहयोग से 15 सैट स्टूल-टेबल प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., अनोखू (धोद)** को श्री बाबूलाल, मनोज कुमार शर्मा से एक लेक्चर स्टैण्ड लकड़ी का, सर्वश्री भैरू सिंह निर्वाण, पूसाराम मेघवाल, मांगूराम भामू, महेन्द्र सिंह पंच, डा. रणवीर सिंह, श्रीमती भँवर कँवर (पूर्व सरपंच), महेन्द्र सिंह शेखावत से बिजली पंखा, सर्वश्री महेन्द्र सिंह पंच, डा. रणवीर सिंह से 4 सेट स्टूल-टेबल, सर्वश्री नरपत सिंह, रामदयाल सिंह से स्टील अलमारी, श्री बाबूलाल मनोज कुमार शर्मा से ऑफिस टेबल (लकड़ी), सर्वश्री महेन्द्र सिंह, मांगूराम, दीनदयाल सरपंच, नेमीचन्द जांगिड़, डा. रणवीर सिंह, वीरेन्द्र सिंह शेखावत, मदनलाल भामू, हणमान प्रसाद सोनी से टी गार्ड (पेड़ रक्षक) लोहे का प्राप्त हुआ। **रा.मा.वि., फतेहपुरा (गोकुल का बास) खण्डेला** को श्री अर्जुनलाल जांगू से 80 सैट टेबल-स्टूल लागत 41,000 रुपये, श्री मूलचन्द, भंवरलाल शर्मा से 17 सैट स्टूल टेबल लागत 11,000 रुपये, 3 कार्यालय कुर्सी लागत 1800 रुपये, एक झण्डा पाइप लोहे का लागत 600 रुपये, 2000 ईंटे लागत 6,000 रुपये, श्री ज्ञानसिंह शेखावत से पानी की हौदी निर्माण लागत 7100 रुपये, श्रीमती आनन्द कँवर (उप सरपंच) द्वारा विद्युत कनेक्शन हेतु 5100 रुपये, श्री भैरूराम वर्मा से 10 ड्रेस स्काउट लागत 3000 रुपये, छः छत पंखे लागत 6000 रुपये, 3 टेबल लागत 1200 रुपये, एक दरी बड़ी लागत 2000 रुपये, एक गेट (लोहे का) छोटा लागत 3000 रुपये, श्री भंवरलाल ढेनवाल से एक कम्प्यूटर सैट (सम्पूर्ण) लागत 17000 रुपये, श्री बनवारी लाल शर्मा से एक आलमारी लागत 8000 रुपये, श्री रघुवीर सिंह से एक आलमारी लागत 4000 रुपये, तीन कार्यालय कुर्सी लागत 1800 रुपये, श्री देबूराम वर्मा से 5 सैट टेबल-स्टूल लागत 3500 रुपये, श्री झाबरमल यादव से 7 छात्र गणवेश (सिलाई सहित) लागत 4200 रुपये। **रा.मा.वि., मण्डावर** को जानकी देवी बजाज द्वारा 12 खिड़कियों पर जाली मय फ्रेम लगाई लागत 11000 रुपये। **रा.मा.वि., डूँगा की नांगल** में श्रीमती सूणी देवी व पुत्र सूबेदार ग्यारसीलाल, ड्राइवर गोपीराम, रमेश अध्यापक व हवलदार रोहिताश द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा (20'×16') मय बरामदा का निर्माण करवाया गया। **रा.बा.मा.वि., पिपराली** में श्री दीपाराम जी द्वारा 3,00,000 रुपये की लागत से 20×30 का एक कमरा का निर्माण करवाया गया। श्री पूर्णसिंह मूण्ड से 31 सेट टेबल-स्टूल लागत 17,500 रुपये, श्री ओमप्रकाश मूण्ड (पूर्व सरपंच) से 26 सेट लागत 15,000 रुपये, श्री रामकुमार मूण्ड से 21 सेट टेबल-स्टूल लागत 12,400 रुपये, सर्वश्री पूर्णसिंह मूण्ड, मोतीसिंह मूण्ड, महावीर प्रसाद अग्रवाल, रामावतार मित्तल से प्रत्येक से 18-18 सैट स्टूल-टेबल लागत 11,000-11,000 रुपये, सर्वश्री परमेश्वर जी बिरख, ओंकार सिंह मूण्ड, महिपाल मूण्ड से प्रत्येक से 16-16 सैट टेबल-स्टूल लागत प्रत्येक की 9,100 रुपये, श्री रामचन्द्र मूण्ड से 8 सैट टेबल-स्टूल लागत 5100 रुपये, सर्वश्री रामसिंह मूण्ड, बीरबल सिंह मूण्ड, नयनताराजी, इन्दिरावती गजराज, शारदा धायल, शबनम नकवी, सुमित्रा चौधरी, अंजू पाराशर, उदावत रेखा, छोटी देवी, नवरंग सैनी से प्रत्येक से 8-8 सैट टेबल-स्टूल लागत प्रत्येक की 5,000 रुपये, श्री वेदपाल मूण्ड से 5 सैट टेबल-स्टूल लागत 3100 रुपये, श्री मुरारीलाल सर्राफ से एक सैट टेबल-स्टूल लागत 500 रुपये, सर्वश्री किशन सिंह, चौथमल शर्मा से एक-एक बक्सा लोहे का लागत प्रत्येक की 2800 रुपये, श्री परमेश्वर जी जांगिड़ से एक आलमारी लागत 5,000 रुपये, श्री ओमप्रकाश कुमावत (ठेकेदार) व जनसहयोग से एक स्टेज निर्माण (22×19) का लागत 19,000 रुपये।

शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2012 हेतु झंडियों का वितरण कर राशि भिजवाने हेतु

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • विषय : शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 2012 हेतु झंडियों का वितरण कर राशि भिजवाने हेतु। • राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के पत्र क्रमांक : शिविरा/मा/राशिकप्र/31582/2012-13 दिनांक 5.7.2012 के द्वारा शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2012 से सम्बन्धित दिशा-निर्देश भिजवा दिये गये हैं। अतः दिये गये लक्ष्य अनुसार शिक्षक दिवस 5 सितम्बर की झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ कर दिनांक **30.9.2012** तक राशि एकत्रित करके राशि का बैंक ड्राफ्ट **राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर** के नाम बनवाकर शीघ्र भिजवाने की कार्यवाही करावें। • ह., उप निदेशक (प्रशासन), राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक हर सहाय मीणा द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : हर सहाय मीणा

निदेशालय परिसर बीकानेर में स्वतंत्रता दिवस समारोह – 2012

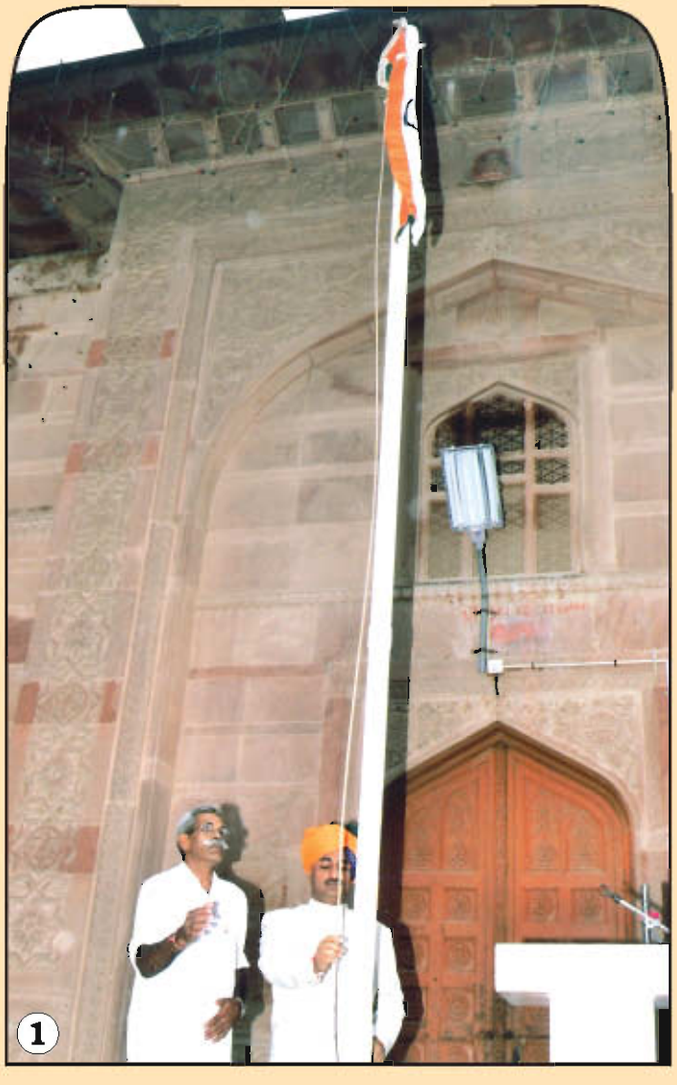

(1) निदेशक प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री हर सहाय मीणा द्वारा परिसर में ध्वजारोहण। (2) अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री प्रेमसुख विश्नोई एवं अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ पौधारोपण। (3) समूह चित्र (4) सम्बोधन ।

डाक पंजीयन संख्या
RJ/JPC/M-29/2011-13

शिविरा पत्रिका (मासिक) सितम्बर, 2012
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2012 पृष्ठ 52
प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार-पत्र पंजीयन संख्या
10350/66

हमारी धरोहर

विजय स्तम्भ
Tower of Victory

चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक किले में स्थित विजय स्तम्भ का निर्माण मेवाड़ के राणा कुम्भा ने 1442 AD से 1449 AD के मध्य करवाया था। यह स्तम्भ किसी आश्चर्य से कम नहीं है। कुम्भा ने इस स्तम्भ का निर्माण मुगलों के विरुद्ध मालवा एवं गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय को यादगार बनाने के लिए करवाया था। नौ मंजिले इस अद्भुत टावर की ऊँचाई 37.19 मीटर है। लाल बलुआ पत्थर एवं मार्बल से बना यह स्तम्भ 10 फीट ऊँचे पेडस्टल पर खड़ा है। इस पर विभिन्न हिन्दू देवी देवताओं की प्रतिमाएँ तथा चित्तौड़गढ़ के शासक हमीर से लेकर कुम्भा तक का यशोगान उत्कीर्ण किया गया है।